अस्रे ग़ैबत

की

ज़िम्मेदारियाँ

नामे किताब : अ़स्रे ग़ैबत की ज़िम्मेदारियाँ

तर्जुमा : एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ़.स.)

तरतीब : एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ़.स.)

सने इशाअ़त : १४३८ हि.

हदिया : ८० रुपये

फ़ेहरिस्त

इब्तेदाइया ४

१. मअ्रेफ़त ९

२. सिपुर्दगी २२

३. मोहब्बत ६१

४. ज़िक्र ८५

५. इल्म ९६

६. इन्तेज़ार १०१

७. दुआ १३१

८. नुसरत १४१

९. हाज़िर होने का एहसास १४९

१०. परहेज़गारी (वरअ्) १५७

इब्तेदाइया

हर एक मुसलमान की दिली तमन्ना है कि वोह इस दुनिया से इस तरह जाए कि जन्नत में जाना उसके लिए यक़ीनी हो। लेहाज़ा उसके लिए ज़रूरी है कि इन्सान इस दुनिया से इस तरह से जाए कि उसका अन्जाम इस्लाम पर हो। जनाब इब्राहीम और जनाब यअ़्क़ूब अ़लैहेमस्सलाम ने अपने फ़र्ज़न्दों को वसीयत की:

فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ

फ़ला तमूतुन-न इल्ला व अन्तुम मुस्लेमू-न.

"तुम्हारी मौत सिर्फ़ इस हालत में आए कि तुम सच्चे मुसलमान हो।"

(सूरए बक़रह (२), आयत १३२)

इस्लाम और जाहिलीयत दो मुतज़ाद सूरतें हैं। इस्लाम पर आख़िरी साँस लेने वाला जाहिलीयत की मौत नहीं मर सकता और जाहिलीयत पर हलाक होने वाला इस्लाम से बहरामंद नहीं हो सकता।

हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने जाहिलीयत की मौत से महफ़ूज़ रहने का कीमियाई नुस्ख़ा इन नूरानी अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है:

مَنْ مَاتَ وَلَمْ يَعْرِفْ إِمَامَ زَمَانِهِ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً

मन मा-त व लम यअ्रेफ़ इमा-म ज़मानेही मा-त मी-ततन जाहिलीयतन.

"जो अपने वक़्त के इमाम की मअ्रेफ़त हासिल किए बग़ैर इस दुनिया से चला जाए उसकी मौत जाहिलीयत की मौत होगी।"

(बेहारुल अनवार, जि. ३२, स. ३३१)

लेहाज़ा अगर जाहिलीयत की मौत यअ्नी हलाकत से महफ़ूज़ रहना चाहते हैं और इस बात के मुतमन्नी हैं कि हमारा ख़ात्मा और अन्जाम इस्लाम पर हो तो हमारे लिए लाज़िम-ओ-ज़रूरी है कि हम अपने इमामे वक़्त अ़लैहिस्सलाम की मअ्रेफ़त हासिल करें।

हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की हर बात (वही) की तर्जुमान होती है और वही कभी भी ग़लत नहीं हो सकती। लेहाज़ा इस मोअ्तबर और मुस्तनद हदीस की रोशनी में हर दौर में एक इमाम अ़लैहिस्सलाम ज़रूरी होगा जिसकी मअ्रेफ़त हासिल करना हमारे लिए लाज़िम-ओ-ज़रूरी है।

इस हदीस से जहाँ मअ्रेफ़ते इमामे वक़्त अ़लैहिस्सलाम की अहम्मीयत का अंदाज़ा होता है वहीं येह सवाल ज़ेहन में उभरता है कि मअ्रेफ़त किसे कहते है और मअ्रेफ़त किस तरह हासिल की जाए? येह बात तय है कि नाम और हसब-ओ-नसब का जानना मअ्रेफ़त नहीं है क्योंकि येह मअ्लूमात तो उन लोगों को भी हासिल है जो इमाम अ़लैहिस्सलाम के दुश्मन हैं।

मअ्रेफ़त उस मन्ज़ेलत-ओ-मक़ाम को जानना है जो ख़ुदावन्द आ़लम ने उन्हें अ़ता फ़रमाया है। मसलन ख़ुदावन्द आ़लम ने उनको इस ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा और नुमाइन्दा क़रार दिया है। वोह हर गुनाह और

लग़ज़िश से पाक-ओ-पाकीज़ा हैं। उनकी इताअ़त हर एक पर वाजिब है। अपने दिल को उनकी मोहब्बत से मुनव्वर करना हर एक के लिए ज़रूरी है। उनकी पसंद को अपनी पसंद पर तर्जीह देना और उनके हर हुक्म के सामने तस्लीम रहना। उनके किसी भी फ़ैसले पर दिल में ज़रा भी हिचकिचाहट महसूस न करना हर एक की ज़िम्मेदारी है। अपने हर अ़मल, हर फ़िक्र-ओ-ख़याल पर उन्हें गवाह समझना हमारे क़ल्ब-ओ-रूह की इस्लाह की ज़मानत है। इसके अ़लावा और भी बहुत सी बातें हैं जिन्हें आप इस किताब में मुलाहेज़ा फ़रमाएंगे।

अब दूसरा सवाल, येह मअ़्रेफ़त किस तरह हासिल की जाए? मअ़्रेफ़त उन लोगों से हासिल की जाए जो इमामे वक़्त अ़लैहिस्सलाम को पहचानते हों। तो ख़ुदा और उसके मुन्तख़ब कर्दा नुमाइंदों के अ़लावा कोई एक ऐसा नहीं है जो इमामे वक़्त अ़लैहिस्सलाम को पूरी तरह पहचानता हो। लेहाज़ा क़ुरआन करीम की पाकीज़ा आयतों और अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की नूरानी हदीसों में इमामे वक़्त अ़लैहिस्सलाम की मअ़्रेफ़त के ख़ज़ाने मौजूद हैं। यही दो मोअ़्तबर ज़राएअ़् हैं जिनसे इमाम अ़लैहिस्सलाम की वोह मअ़्रेफ़त हासिल हो सकती है जो हमको जाहिलीयत की मौत से नजात दिला सकती है। इस किताब में आयत और रवायत की रोशनी में मअ़्रफ़ते इमाम अ़लैहिस्सलाम पर गुफ़्तुगू की गई है।

जब मअ़्रेफ़त इस क़द्र अहम है तो वोह अफ़राद भी कम अहम्मीयत के हामिल नहीं होंगे जिनके दिल इस मअ़्रेफ़त से मुनव्वर होंगे। रवायतों में उन हज़रात को **'मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह'** का दर्जा दिया गया है। बल्कि उन लोगों के हम रुत्बा क़रार दिया गया है जो हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के साथ जंग में उनके ख़ैमे में मौजूद हैं या आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के सामने मैदाने जंग में इस्लाम की हेमायत और रसूल की हेफ़ाज़त में दुश्मनों से मुक़ाबला कर रहे हैं।

दुनिया के निज़ाम के बर ख़ेलाफ़ दीने मुक़द्दस इस्लाम ऐसा आफ़ाक़ी और फ़ितरी दीन है कि जहाँ तरक़्क़ीये दरजात और बलन्दीये मरातिब की मुनासेबत से ज़िम्मेदारियों में भी एज़ाफ़ा होता है।

जिनका रुत्बा है सिवा उनको सिवा मुश्किल है

इस बेना पर हमारी ज़िम्मेदारी है कि अगर अपने इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की गराँक़द्र मअ़्रेफ़त के मुतलाशी हैं और मअ़्रेफ़त की अ़ज़ीम मन्ज़ेलत पर फ़ाएज़ होना चाहते हैं तो इस बात पर भी ध्यान दें कि इस वक़्त हमारी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं ताकि हम उन ज़िम्मेदारियों पर अ़मल करके ख़ुदा और रसूल-ओ-इमाम की बारगाह में सुर्ख़रू हो सकें।

इस किताब में अ़स्रे ग़ैबत की ज़िम्मेदारियों को नेहायत ह़सीन और दिलनशीन अंदाज़ में बयान किया गया है।

ख़ुदाया मोह़म्मद-ओ-आले मोह़म्मद अ़लैहिमुस्सलाम **का वास्ता**

मोह़म्मद-ओ-आले मोह़म्मद अ़लैहिमुस्सलाम **पर वोह दुरूद-ओ-सलाम नाज़िल फ़रमा**

जो तेरी शान के मुताबिक़ हो और जो मोह़म्मद-ओ-आले मोह़म्मद अ़लैहिमुस्सलाम **की ख़ुशनूदी का सबब हो**

और

उनके सदक़े में हमारे दिलों को अपनी, अपने रसूल, और अपने नुमाइंदों की

मअ़्रेफ़त से मुनव्वर फ़रमा

और

हमें अ़स्रे ग़ैबत की ज़िम्मेदारियों को अन्जाम देने की बेह्तरीन तौफ़ीक़ करामत फ़रमा

आमीन

बेह़क़्क़े मोह़म्मदिन व आलेहित़्ताहेरीन.

१. मअ़्रेफ़त

वोह मअ़्रेफ़त जो इन्सान को ज़मानए ग़ैबत में इन्हेराफ़ और फ़साद से बचा सकती है वोह इमामे वक़्त अ़लैहिस्सलाम की सच्ची और सहीह मअ़्रेफ़त है। और अगर ऐसा न हो तो येह उम्मीद करना कि साहेबे मअ़्रेफ़त, वेलायत और इमामते इमाम पर साबित क़दम रहेगा येह दुरूस्त नहीं है। इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

أَنَّ لِلْقَائِمِ مِنَّا غَيْبَتَيْنِ إِحْدَاهُمَا أَطْوَلُ مِنَ الْأُخْرَى أَمَّا الْأُولَى فَسِتَّةُ أَيَّامٍ أَوْ سِتَّةُ أَشْهُرٍ أَوْ سِتُّ سِنِينَ وَ أَمَّا الْأُخْرَى فَيَطُولُ أَمَدُهَا حَتَّى يَرْجِعَ عَنْ هَذَا الْأَمْرِ أَكْثَرُ مَنْ يَقُولُ بِهِ فَلَا يَثْبُتُ عَلَيْهِ إِلَّا مَنْ قَوِيَ يَقِينُهُ وَ صَحَّتْ مَعْرِفَتُهُ وَ لَمْ يَجِدْ فِي نَفْسِهِ حَرَجاً مِمَّا قَضَيْنَا وَ سَلَّمَ لَنَا أَهْلَ الْبَيْتِ.

इन्-न लिल क़ाएमे मिन्ना ग़ैबतैने अ-ह्दोहोमा अत्वलो मिनल उख़रा व अम्मल उख़रा फ़-यतूलो अ-मदोहा ह्त्ता यर्जेअ अ़न हाज़ल अ़म्रे अक्सरो मँय्यक़ूलो बेही बल फ़ला यस्बोतो अ़लैहे इल्ला मन क़वेया यक़ीनोहू व सह्ह्त मअ़्रेफ़तोहू व लम यजिद फ़ी नफ़्सेही ह्-रजन मिम्मा क़ज़ैना व सल्ल-म लना अह्लल्बैते.

"बेशक हमारे क़ाएम के लिए दो ग़ैबत है उन में से एक दूसरी से तूलानी है। दूसरी ग़ैबत इतनी तूलानी होगी कि अक्सर लोग जो उनकी इमामत पर एअ़्तेक़ाद रखते हैं इस

एअ्तेक़ाद से फिर जाएंगे। उनकी इमामत पर साबित नहीं रहेगा सिवाए उस शख़्स के जिसका यक़ीन मोह्कम हो और जिसकी मअ्रेफ़त सह्ीह् हो और उसका दिल हमारे अह्काम को क़बूल करने के लिए सख़्त न हो (यअ्नी उसका दिल हमारे अह्काम को क़बूल करने पर आमादा हो) और हम अह्लेबैत के सामने तस्लीम हो।"

(कमालुद्दीन, बाब ३१, ह्॰ ८)

येह शर्त हर मअ्रेफ़त के लिए ज़रूरी है। चाहे वोह मअ्रेफ़त ख़ुदा की हो, या उसके रसूल की हो और चाहे इमाम की हो। आम तौर से हर दीनी मअ्रेफ़त को सह्ीह् और ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ होना चाहिए। सह्ीह् मअ्रेफ़त के लिए कौन सा मेअ्यार मौजूद है? और कैसे सह्ीह् मअ्रेफ़त पर इत्मीनान हो? इस सवाल का जवाब इस बात को नज़र में रखते हुए जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने मअ्रेफ़त के सिलसिले में दिया है, मअ्लूम हो जाता है। इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम अपने फ़र्ज़न्द इमाम जअ्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम को मुख़ातब करते हुए फ़रमाते हैं:

يَا بُنَيَّ اعْرِفْ مَنَازِلَ الشِّيعَةِ عَلَى قَدْرِ رِوَايَتِهِمْ وَ مَعْرِفَتِهِمْ
فَإِنَّ الْمَعْرِفَةَ هِيَ الدِّرَايَةُ لِلرِّوَايَةِ وَ بِالدِّرَايَاتِ لِلرِّوَايَاتِ يَعْلُو
الْمُؤْمِنُ إِلَى أَقْصَى دَرَجَاتِ الْإِيمَانِ إِنِّي نَظَرْتُ فِي كِتَابٍ لِعَلِيٍّ
ع فَوَجَدْتُ فِي الْكِتَابِ أَنَّ قِيمَةَ كُلِّ امْرِءٍ وَ قَدْرَهُ مَعْرِفَتُهُ

या बुनय्या, एअ्रेफ़ मनाज़ेलश्शीअते अ़ला क़द्रे रेवायतेहिम व मअ्रेफ़तेहिम फ़इन्नल मअ्रेफ़-त हेयद्देरायतो लिर्रेवायते व बिद्देरायाते लिर्रेवायाते यअ्लुल मोअ्मेनो एला अक़्सा द-रजातिल ईमाने व इन्नी नज़र्तो फ़ी किताबिन लेअ़लीयिन

अ़लैहिस्सलाम फ़-वजद्तो फ़िल किताबे अन्-न क़ीम-त कुल्लेम्रेइन व क़द्रहू मअ़्रे-फ़तोहू.

"ऐ बेटा, शीअ़ों के दरजात-ओ-मन्ज़ेलत का अन्दाज़ा उनके रवायत करने और रवायत जानने से लगाओ। क्योंकि मअ़्रेफ़त रवायत का समझना और जानना है। और इसी रवायत के समझने से मोअ्मिन ईमान के बलन्द तरीन दर्जे पर पहुँच जाता है। मैंने अ़ली अ़लैहिस्सलाम की लिखी हुई किताब में पाया है कि बेशक हर शख़्स की क़ीमत-ओ-मन्ज़ेलत उसकी मअ़्रेफ़त है।"

(बेहारुल अनवार, जि.२, स.१८४)

इस ह़दीस में सह़ीह़ मअ़्रेफ़त की वज़ाह़त की गई है। मअ़्रेफ़त इमामों की नज़र में अह़ादीस के समझने के सिवाए और कुछ नही है और ख़ुद अह़ादीस मेअ़्यार और मलाक है सह़ीह़ मअ़्रेफ़त के लिए। हर बात की सह़ीह़ मअ़्रेफ़त का अन्दाज़ा इसी बाब से मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसों से होता है। मिसाल के तौर पर ख़ुदा शनासी, यअ़्नी ख़ुदा की मअ़्रेफ़त का सह़ीह़ या ग़लत होने का मेअ़्यार वोह रवायात हैं जिनका तअ़ल्लुक़ ख़ुदा की मअ़्रेफ़त से है।

येह बात, हर बाब में अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की अह़ादीस की तरफ़ रुजूअ़् करने की अहम्मीयत को वाज़ेह करती है और यही मेअ़्यार है मोअ्मिन की मन्ज़ेलत और दर्जे को पहचानने के लिए। जो शख़्स जितना रवायात को ज़्यादा समझता है वोह उतना ही ईमान का कमाल रखता है। अगर कोई दीनी मअ़्रेफ़त में रवायत से सरोकार न रखता हो और अपनी मअ़्रेफ़त को अह़ादीस के अ़लावा किसी दूसरी चीज़ से ह़ासिल किया हो उसको अपनी मअ़्रेफ़त के सह़ीह़ होने का इन्तेज़ार नहीं करना चाहिए।

अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम की निगाह में हर शख़्स की क़ीमत उसकी मअ़्रेफ़त है और मअ़्रेफ़त का मेअ़्यार भी रवायत का गहराई से समझना और जानना है।

सह़ीह़ इल्म सिर्फ़ अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के पास है

इस बात का राज़ और येह कि क्यों सह़ीह़ मअ़्रेफ़त का मेअ़्यार ह़दीस है इस ह़क़ीक़त में छिपा हुआ है कि कोई इल्म अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के बग़ैर ह़ासिल नहीं किया जा सकता है। इल्म से मुराद वोह नूर और ह़क़ीक़त है जिसे ख़ुदा जिसके दिल में चाहता है डाल देता है और उसकी हेदायत करता है। इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

لَيْسَ الْعِلْمُ بِالتَّعَلُّمِ إِنَّمَا هُوَ نُورٌ يَقَعُ فِي قَلْبِ مَنْ يُرِيدُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنْ يَهْدِيَهُ

लैसल्-इल्मो बित्तअ़ल्लुमे, इन्न-म हो-व नूरुन यक़अ़ो फ़ी क़ल्बे मन युरीदुल्लाहो तबार-क व तआ़ला अन यह्देयहू.

"इल्म पढ़ने से ह़ासिल नहीं होता बल्कि इल्म नूर है। अल्लाह तबारक-ओ-तआ़ला जिसे हेदायत करना चाहता है उसके दिल में डाल देता है।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. १, स. २२५)

इस इल्म में लग़ज़िश और ख़ता का इम्कान नहीं है। अल्लाह जिसकी हेदायत चाहता है वोह उसी से सह़ीह़ रास्ता पा लेता है। इस बेना पर सच्चा इल्म हमेशा ह़क़ीक़त के मुताबिक़ होता है। वोह इन्सानी इल्म है जिसमें ग़लती का इम्कान है लेकिन उ़लूम और मअ़्रेफ़ते एलाही हमेशा सह़ीह़ और सच्चे हैं। ख़ुदावन्द आ़लम ने चहारदा मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम के

दिलों के इस नूर का सरचश्मा और मरकज़ बनाया है और जो येह उ़लूम ह़ासिल करना चाहता है उसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के दरवाज़े पर आना चाहिए। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने यूनुस बिन ज़िबयान से फ़रमाया:

إِنْ أَرَدْتَ الْعِلْمَ الصَّحِيحَ فَعِنْدَنَا أَهْلَ الْبَيْتِ فَنَحْنُ أَهْلُ الذِّكْرِ الَّذِينَ قَالَ اللَّهُ فَسْئَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لا تَعْلَمُونَ

इन अरद्तल इ़ल्मस़्सह़ी-ह़ फ़इ़न्दना अह्लल्बैते फ़नह़्नो अह्लुज़्ज़िक्रिल्लज़ी-न क़ालल्लाहो: फ़स्अलू अह्लज़्ज़िक्रे इन कुन्तुम ला तअ़्लमू-न.

"अगर सह़ीह़ इ़ल्म चाहते हो, पस वोह हम अह्लेबैत के पास है, हम ही अह्ले ज़िक्र हैं, जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है अगर तुम नहीं जानते तो अह्ले ज़िक्र से पूछो।"

(वसाएलुश्शीआ़, जि. १८, स. ४८, सूरए नह़्ल (१६), आयत ४३)

وَاللهِ لَا يُوجَدُ الْعِلْمُ إِلَّا عِنْدَ أَهْلِ بَيْتٍ نَزَلَ عَلَيْهِمْ جَبْرَئِيلُ.

वल्लाहे ला यूजदुल्इ़ल्मो इ़ल्ला मिन अह्लेबैतिन न-ज़-ल अ़लैहिम जिब्रईल.

"ख़ुदा की क़सम इ़ल्म ह़ासिल नहीं होगा मगर उस घर से जहाँ जिब्रईल नाज़िल हुए।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. २, स. ९१)

इस बेना पर अगर किसी के लिए कोई ह़क़ीक़त आश्कार हो जाती है यक़ीनन उसकी वजह अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम हैं अगरचे इन्सान ख़ुद इस बात की तरफ़ मुतवज्जेह न हो। जैसा कि इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

أَمَا إِنَّهُ لَيْسَ عِنْدَ أَحَدٍ مِنَ النَّاسِ حَقٌّ وَ لَا صَوَابٌ إِلَّا شَيْءٌ أَخَذُوهُ مِنَّا أَهْلَ الْبَيْتِ

अमा इन्नहू लै-स इन्द अ-ह़दिन मिनन्नासे ह़क़्क़ुन वला सवाबुन इल्ला शैउन अ-ख़ज़ूहो मिन्ना अह्लल्बैते.

"ऐ लोगो मुतवज्जेह हो जाओ कोई ह़क़ीक़त और कोई सह़ीह़ बात लोगों के पास नहीं है मगर येह कि उसने हम अह्लेबैत से लिया हो।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. २, स. ९४)

सह़ीह़ बात और ह़क़ीक़ी मअ़्रेफ़त की बुनियाद सिर्फ़ और सिर्फ़ अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का नूरानी कलाम है। अगर येह कलाम न होते तो कोई सह़ीह़ मअ़्रेफ़त तक नहीं पहुँच सकता था। अ़क़ीदे की सेह़त का मेअ़्यार अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की रवायतें हैं। इस तरह़ कि अगर कोई अक़ीदा अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के रवायत के मुताबिक़ न हुआ और उनसे न लिया गया हो तो यक़ीनन वोह कलाम बातिल है और उसकी कोई ह़क़ीक़त नहीं है। इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

كُلُّ مَا لَمْ يَخْرُجْ مِنْ هَذَا الْبَيْتِ فَهُوَ بَاطِلٌ

कुल्लो मा लम यख़्रुज मिन हाज़ल्बैते, फ़हो-व बातिलुन.

“जो कुछ इस घर से बाहर न आया हो वोह बातिल और नाहक़ है।”

(वसाएलुश्शीआ, जि. १८, स. ५०)

इस बेना पर ईमान का बलन्द तरीन दर्जा येह है कि इन्सान अपने ऊपर वाजिब कर ले कि अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की बातों और अक़ीदों के अलावा किसी से बात और अक़ीदा नहीं लेगा और सिर्फ़ अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के घर के सामने सर ख़म करेगा और अगर ऐसा किया तो ‘**मिन्ना अह्लल्बैत**’ के लक़ब से नवाज़ा जाएगा। अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम कुमैल इब्ने ज़ेयाद नख़ई से फ़रमाते हैं:

يَا كُمَيْلُ لَا تَأْخُذْ إِلَّا عَنَّا تَكُنْ مِنَّا

या कुमैल, ला तअ्ख़ुज़ इल्ला अन्ना, तकुन मिन्ना.

“ऐ कुमैल हम अह्लेबैत के अलावा किसी से इल्म हासिल न करो ताकि हम में से क़रार पाओ।”

(वसाएलुश्शीआ, जि. १८, स. १४)

येह अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के चाहने वालों के लिए बड़ा रुत्बा है अगरचे वोह ज़मानए हुज़ूरे इमाम से महरूम हों। लेकिन अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की हदीसों की पाबन्दी से इन्सान ग़ैब के ज़माने में इस मर्तबे को हासिल कर सकता है।

अगर इन्सान दीन की सहीह मअ्रेफ़त चाहता है तो उसे चाहिए कि इल्म हासिल करने के लिए अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के अलावा किसी और के पास न जाए और इन्सानी फ़िक्रों के नतीजों को अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम पर तर्जीह न दे। और उनमें से किसी एक को मिलाने की कोशिश न करे। अगर ऐसा किया तो वोह यक़ीनन मअ्रेफ़त में यक़ीन के उस दर्जे पर

पहुँच जाएगा कि कोई एअ्तेराज़ कोई मसअला उसके ईमान को कमज़ोर नहीं कर सकेगा। यहाँ तक कि पहाड़ तो कमज़ोर पड़ सकते है लेकिन उसका ईमान कमज़ोर नहीं होगा।

अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम जंगे जमल में मोहम्मद बिन हनफ़िया को मुख़ातब करते हुए फ़रमाते हैं:

تَزُولُ الْجِبَالُ وَلَا تَزُلْ

तज़ूलुल जेबालो वला तज़ुल.

"अगर पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएं तब भी तुम साबित क़दम रहना।"

(नहजुल बलाग़ा, फ़ैज़ुल इस्लाम, ख़ुत्बा ११)

अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम का येह कलाम ईमान और अ़क़ीदे की वादी में भी तवज्जोह और ग़ौर-ओ-फ़िक्र करने के क़ाबिल है और उसको अ़मली करने का रास्ता येह है कि इन्सान अपने अ़क़ीदे को सहीह रास्ते से हासिल करे। उसके अ़लावा किसी दूसरे रास्ते पर भरोसा न करे। और इस सूरत में सहीह न होने के ख़ौफ़ से वोह मुत्मइन हो सकता है और कोई चीज़ उसे मुतज़लज़िल नहीं कर सकती। फिर कोई और चीज़ उसके यक़ीन पर असर अंदाज़ नहीं हो सकती है।

शक सब से बड़ी परेशानी है जो इन्सान के ईमान और उसके यक़ीन को चैलेन्ज करती है। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की फ़िक्रों और अ़क़ीदों का सामना है जो इन्सान की मअ़्रेफ़त को मक़ामे शक और तरदीद में ला खड़ा करती है। इन्सान चाहे जितना पढ़ा लिखा हो और चाहे जितना दूसरों की और उनकी बातों को जानता हो जब तक मअ़्रेफ़त और अ़क़ीदे को उसकी असली जगह से न लेगा वोह शक के

ख़तरे से महफ़ूज़ नहीं रह सकता है। इन्सान के एअ्तेक़ाद को शक और वसवसे से महफ़ूज़ रखने के अस्बाब में से एक सबब यही अम्र है। इस बेना पर अगर कोई अपने ईमान और अ़क़ीदे के सिलसिले में ग़ैबत के ज़माने में परेशान है तो उसके लिए ज़रूरी है कि वोह सहीह़ जगह से अ़क़ीदा ह़ासिल करे और सिवाए उस चीज़ के जो अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से वारिद हुई हैं किसी पर भरोसा न करे। इमाम अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَنْ اَخَذَ دِيْنَهُ مِنْ كِتَابِ اللهِ وَ سُنَّةِ نَبِيِّهِ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِ وَ آلِهِ زَالَتِ الْجِبَالُ قَبْلَ اَنْ يَزُوْلَ وَ مَنْ اَخَذَ دِيْنَهُ مِنْ اَفْوَاهِ الرِّجَالُ رَدَّتْهُ الرِّجَالُ

मन अ-ख़-ज़ दी-नहू मिन किताबिल्लाहे व सुन्नते नबीयेही स-लवातुल्लाहे अ़लैहे व आलेही, ज़ा-लतिल जेबालो क़ब्ल अन यज़ू-ल व मन अ-ख़-ज़ दी-नहू मिन अफ़्वाहिर्रेजाले, रद्दतहुर्रेजालो.

"जो कोई भी अपना दीन ख़ुदा की किताब और नबी की सुन्नत से ह़ासिल करेगा तो पहाड़ मुतज़लज़िल हो सकते हैं लेकिन उसका ईमान कमज़ोर नहीं होगा। और जो कोई अपने दीन को इसकी और उसकी बातों से ह़ासिल करेगा तो वही लोग या उसके जैसे लोग उसको उसके दीन से मुन्ह़रिफ़ कर देंगे।"

(उसूले काफ़ी, मुकद्दमतुल मोअल्लिफ़, जि. १. स. ७)

कभी इसी उन्वान के ज़िम्न में इन्सान तमाम बातों को सुने और उस वक़्त उनमें से बेहतरीन बात का इन्तेख़ाब करे। तमाम फ़िक्र और नज़रियात को पह्लू में रख कर एक नज़र से देखे और बार बार मुशाहेदा कर ले क्योंकि

बहुत सारे लोग अपनी समझ और अपनी तश्ख़ीस से उसी रास्ते के ज़रीए अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की अह़ादीस की क़ीमत मअ़्लूम करना चाहते हैं। उनकी नज़र में एलाही और इन्सानी फ़िक्र में कोई फ़र्क़ नहीं है। उस वक़्त अपनी बात पर क़ुरआन से दलील भी पेश करते हैं कि क़ुरआन फ़रमाता है:

فَبَشِّرْ عِبَادِ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَئِكَ هُمْ أُولُوا الْأَلْبَابِ

फ़-बश्शिर एबादिल्लज़ी-न यस्तमेऊनल्क़ौ-ल फ़-यत्तबेऊ-न अह़्स-नहू, ऊलाएकल्लज़ी-न हदाहुमुल्लाहो व उलाए-क हुम उलुल अल्बाबे.

"पस हमारे उन बन्दों को जो हमारी ह़क़ बात को सुनते हैं फिर उस पर अच्छी तरह़ अ़मल करते हैं येह वही लोग हैं जिनकी अल्लाह ने हेदायत की है और यही लोग अ़क़्ले सलीम के मालिक हैं।"

(सूरए ज़ुमर (३९), आयत १७-१८)

येह लोग इस आयत का मअ़्ना येह करते हैं कि तमाम बातों को सुनना चाहिए। '**अलक़ौल**' में अलिफ़-ओ-लाम को इस्तेग़राक़ के मअ़्ना में मानते हैं। और फिर उनमें से बेहतरीन का इन्तेख़ाब करना चाहिए। इसके बअ़्द कहते है कि अल्लाह ने उन लोगों के लिए जो ऐसा तरीक़ा अपनाते हैं हेदायत का वअ़्दा किया है। और उनको अल्लाह ने साहेबाने अ़क़्ल कहा है। येह लोग इस बात से ग़ाफ़िल हैं कि उन्होंने आयत का मअ़्ना अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से न लेकर ग़लती की है और क़ुरआन की तफ़सीर अपनी राय से की है (जो ह़राम है)। जब अबू बसीर ने इमाम सादिक़

अ़लैहिस्सलाम से इस आयत की तफ़सीर पूछी, इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने येह जवाब दिया:

هُمُ الْمُسَلِّمُوْنَ لِآلِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ الَّذِيْنَ اِذَا سَمِعُوْا الْحَدِيْثَ لَمْ يَزِيْدُوْا فِيْهِ وَلَمْ يَنْقُصُوْا مِنْهُ جَاؤُوْا بِهِ كَمَا سَمِعُوْاهُ

हुमुल्मुसल्लेमूना लेआले मोह़म्मदिन सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लमल लज़ी-न एज़ा समेउ़ल ह़दी-स लम यज़ीदू फ़ीहे व लम यन्क़ोसू मिन्हो जाऊ बेही कमा समेऊ़हो.

"येह लोग वोह हैं जो अह्लेबैत के सामने तस्लीम हैं येह लोग जब ह़दीस सुनते हैं इसमें किसी क़िस्म का रद्द-ओ-बदल यअ़्नी कमी-ओ-ज़्यादती नहीं करते और जैसा सुना है उसी तरह़ उसको बयान करते हैं। (या उसी तरह़ उस पर अ़मल करते हैं।)"

(तफ़सीर नूरुस्सक़लैन, जि. ४, स. ४८२ ज़ैले आयत १८, सूरए ज़ुमर)

पस '**अलक़ौल**' का मअ़्ना आयत में सह़ीह़ और ह़क़ बात है और इसमें अलिफ़-ओ-लाम अ़ह्द के मअ़्ना में इस्तेअ़्माल हुआ है। और येह आयत मख़्सूस है उन लोगों के लिए जो अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की बातों को सुनते हैं और उसे क़बूल करते हैं और जैसा सुना है बग़ैर कमी और ज़्यादती के उस पर अ़मल करते हैं। पस '**यत्तबेऊ़ -न अह़-स-नहू**' का मअ़्ना येह नहीं है कि वोह मुख़्तलिफ़ बातों को सुनते हैं और उनमें से बेहतरीन का इन्तेख़ाब करते हैं। बल्कि इससे मुराद येह है कि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की ह़दीसों को सुनते है और अच्छी तरह़ से उस पर अ़मल

करते हैं। ह़दीस की अच्छी शक्ल यही है कि उसमें किसी क़िस्म का तसर्रुफ़ न किया जाए और किसी क़िस्म का रद्द-ओ-बदल न हो। और ख़ुदावन्द आ़लम ऐसे ही लोगों की हेदायत करता है।

आयत में किसी क़िस्म का वअ़्दा आइन्दा के लिए नहीं है बल्कि वोह लोग हेदायत याफ़्ता हैं जो इस तरह़ अ़मल करते हैं और जानते है कि ह़दीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के बारे में उन्हें क्या करना चाहिए और आ़क़िल लोग भी यही हैं। जो लोग अपनी इ़ल्मी और अ़क़्ली दलील की कमज़ोरियों को जानते हैं वोह इसी दलील से समझते हैं कि अपनी कमियों को अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से रुजूअ़् करके दूर किया जा सकता है। इसी बेना पर वोह सरे तस्लीम ख़म करने के लिए ग़ौर-ओ-फ़िक्र और तरदीद को अपनी राह में नहीं लाते। और अपनी तरफ़ से लफ़्ज़ या मअ़्नाए ह़दीस में किसी क़िस्म के रद्द-ओ-बदल को जाएज़ नहीं जानते। और यहीं से हम समझते हैं कि सह़ीह़ मअ़्रेफ़त इन्सान को अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के अ़लावा किसी से नहीं मिल सकती।

पस हर फ़िक्र को न सुनना चाहिए और न ही उसके पीछे भागना चाहिए और न ही हर क़ानून और दीन के लिए अपने अच्छे नज़रियात पेश करना चाहिए। मुख़्तलिफ़ नज़रियाते फ़िक्र इन्सान के दिल और रूह़ को ख़तरात में डाल देती हैं। इन्सान को तह़क़ीक़ के नाम पर अपने आप को तमाम क़िस्म की बुराइयों की तरफ़ माएल नहीं करना चाहिए और न ही मुख़्तलिफ़ क़िस्म के इन्हेराफ़ात में डालना चाहिए क्योंकि उसे पता नहीं है कि वोह मुख़्तलिफ़ नज़रियात-ओ-मुन्ह़रिफ़ अफ़्कार से सह़ीह़-ओ-सालिम निकल पाएगा या नहीं।

पस अ़क़्ल और सूझ बूझ की शर्त येह है कि, मश्कूक जगहों और वोह दीन जिसका राबेता वह़ी से साबित न हो उसमें एह़तेयात और इज्तेनाब

करें। और जब तक इन्सान मुत़्मइन हो जाए कि उस दीन की बुनियाद वह़्ये एलाही है उस वक़्त तक उसे अच्छी नज़र से न देखे। और अगर वोह ख़ुद उस मैदान का आदमी नहीं है तो उन लोगों से पूछे जो उस मैदान के शहसवार हैं। बिल्कुल उसी तरह़ से जैसे इन्सान अपने जिस्म-ओ-जान के सिलसिले में हर किसी से रुजूअ़् नहीं करता है बल्कि जब तक मुत़्मइन नहीं हो जाता है कि हमारे सामने इस्पेशलिस्ट डॉक्टर है उस वक़्त तक उसकी बातों पर भरोसा नहीं करता है।

इन्सान की रूह़-ओ-दिल की सलामती उसके जिस्म की सलामती से कहीं ज़्यादा क़ीमती है और जो तवज्जोह उसको अपने जिस्म के लिए है उससे ज़्यादा तवज्जोह उसे अपनी रूह़ और दिल के लिए होना चाहिए। इन्सान की रूह़ और फ़िक्र के डॉक्टर अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम हैं। जिन्होंने अपने तमाम अ़क़ाएद अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से ह़ासिल किया है उनको ह़क़ है कि वोह अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ रुजूअ़् करें और उनसे रहनुमाई चाहें।

२. सिपुर्दगी

इमाम अ़लैहिस्सलाम के सामने तस्लीम हुए बग़ैर इमाम अ़लैहिस्सलाम की मअ़्रेफ़त ह़ासिल नहीं हो सकती

इमाम अ़लैहिस्सलाम को पहचानने की एक और शर्त अपने आप को इमाम अ़लैहिस्सलाम के ह़वाले कर देना है। सह़ीह़ मअ़्रेफ़त इसके बग़ैर ह़ासिल होने वाली नहीं है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

إِنَّكُمْ لَاتَكُونُونَ صَالِحِينَ حَتّٰى تَعْرِفُوا، وَ لَاتَعْرِفُوا حَتّٰى تُصَدِّقُوا،وَلَاتُصَدِّقُوا حَتّٰى تُسَلِّمُوا

इन्नकुम ल तकूनू-न सालेही-न ह़त्ता तअ़्रेफ़ू व ला तअ़्रेफ़ूना ह़त्ता तोसद्देक़ू व ला तोसद्देक़ू-न ह़त्ता तोसल्लेमू.

"जब तक सह़ीह़ मअ़्रेफ़त न होगी उस वक़्त तक तुम नेक और सालेह़ नहीं बन सकते हो। और जब तक तस़्दीक़ नहीं करोगे उस वक़्त तक मअ़्रेफ़त ह़ासिल नहीं कर सकोगे और जब तक अपने इमाम के सामने पूरी तरह़ तस्लीम नहीं होगे उस वक़्त तक तस़्दीक़ नहीं कर सकोगे।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ह़ुज्जा, बाबो मअ़्रेफ़तिल इमामे वर्रद्द एलैहे, ह़. ६)

पस मअ़्रेफ़त की शर्त तस़्दीक़ और तस़्दीक़ की शर्त तस़्लीम है। इस बेना पर मअ़्रेफ़त अपने आप को इमाम अ़लैहिस्सलाम के ह़वाले किए बग़ैर ह़ासिल नहीं होगी। और जब येह तीनों शर्तें ह़ासिल होंगी उस वक़्त इन्सान का शुमार सालेह़ीन में होगा। और इससे अअ़्माले सालेह़ अन्जाम पाएंगे

इसलिए कि अ़मले सालेह़ के लिए ज़रूरी है कि वोह दिल की सह़ीह़ मअ़्रेफ़त से अन्जाम दिए जाएं। और वोह भी अपने आप को इमाम अ़लैहिस्सलाम के ह़वाले किए बग़ैर ह़ासिल नहीं होगा। पस जो शख़्स अपने आप को अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के ह़वाले नहीं करता है वोह साह़ेबे मअ़्रेफ़त और साह़ेबे वेलायत भी नहीं है। और अच्छे अअ़्माल भी नहीं रखता है। 'तस़्दीक़' मानना और दिल से एअ़्तेराफ़ करना है और जब तक येह ह़ालत इन्सान में पाई नहीं जाएगी, मअ़्रेफ़त भी वजूद में नहीं आएगी। पस येह चार चीज़, तस्लीम, तस़्दीक़, मअ़्रेफ़त और अ़मले सालेह़ साथ साथ हैं और जब तक येह सब साथ में जमअ़् नहीं होंगे, इन्सान ईमान की ह़क़ीक़त तक नहीं पहुँच सकता है। लेकिन अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के अवामिर और नवाही के आगे अपने आप को झुका देना ईमान के सबसे कम दर्जे की ख़ुसूसि़यात में से है। इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

أَدْنَى مَعْرِفَةِ الْإِمَامِ أَنَّهُ عِدْلُ النَّبِيِّ إِلَّا دَرَجَةَ النُّبُوَّةِ وَ وَارِثُهُ وَ أَنَّ طَاعَتَهُ طَاعَةُ اللَّهِ وَ طَاعَةُ رَسُولِ اللَّهِ وَ التَّسْلِيمُ لَهُ فِي كُلِّ أَمْرٍ وَ الرَّدُّ إِلَيْهِ وَ الْأَخْذُ بِقَوْلِهِ

अद्ना मअ़्रेफ़तिल इमामे अन्नहू इद्लुन्नबीये सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम इल्ला द-र-जतन नुबूवते व वारेसोहू व अन्न ताअ़-तहू ताअ़तुल्लाहे व ताअ़तो रसूलिल्लाहे वत्तस्लीमो लहू फ़ी कुल्ले अम्रिन वर्रद्दो इलैहे वल अख़्ज़ो बेक़ौलेही.

"इमाम की मअ़्रेफ़त का कमतरीन दर्जा येह है कि वोह नबी का हम पल्ला है (सिवाए नबूवत के) और वोह नबी का वारिस है और येह कि इमाम की इताअ़त ख़ुदा की

इताअ़त और रसूल की इताअ़त है। हर काम में इमाम की बात मानना और हर चीज़ को लेकर इमाम के पास जाना और उसमें इमाम की बात को क़बूल करना है।"

(बेहारुल अनवार, जि. ३६, स. ४०७)

अगर इन्सान अपनी बात इमाम अ़लैहिस्सलाम के पास लेकर नहीं जाता और उनकी बात नहीं मानता तो बिल्कुल वोह मोअ्मिन नहीं होगा। जैसा कि अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने फ़रमाया है:

لَا يَكُونُ الْعَبْدُ مُؤْمِناً حَتّى يَعْرِفَ اللّهَ وَ رَسُولَهُ وَ الْأَئِمَّةَ كُلَّهُمْ وَإِمَامَ زَمَانِهِ، وَيَرُدَّ إِلَيْهِ، وَيُسَلِّمَ لَهُ

ला यकूनुल्अब्दो मोअ्मेनन ह़त्ता य़अ्रेफ़ल्ला-ह व रसूलहू वलअइम्म-त कुल्लहुम व इमा-म ज़मानेही व यरुद्द इलैहे व योसल्ले-म लहू.

"इन्सान उस वक़्त तक मोअ्मिन नहीं होगा जब तक वोह ख़ुदा की मअ़्रेफ़त और रसूल की मअ़्रेफ़त और तमाम अइम्मा की मअ़्रेफ़त और अपने इमामे ज़माना की मअ़्रेफ़त न रखता हो। और अपने उमूर को इमाम से और इमाम की बात से न लेता हो।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल हुज्जा, बाबो मअ़्रेफ़तिल इमामे वर्रद्द इलैहे, ह़. २)

येह मसअला ज़मानए ग़ैबत में दीन की सलामती की ज़रूरियात में से है जिनका होना ज़रूरी है। सह़ीह़ मअ़्रेफ़त की शर्त के बअ़्द अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने फ़रमाया है:

وَلَمْ يَجِدْ فِي نَفْسِهِ حَرَجاً مِمَّا قَضَيْنَا وَسَلَّمَ لَنَا أَهْلَ الْبَيْتِ

व लम यजिद फ़ी नफ़्सेही ह़-रजन मिम्मा क़ज़ैना व सल्ल-म लना अह्लल्बैते.

"तस्लीम से मुराद यहाँ दिल से मानना है यअ़्नी अपनी चाहत और अपनी ख़ाहिश और दिल से अह्लेबैत की पसन्द को क़बूल करना है।"

(कमालुद्दीन, बाब ३१, ह़. ८)

अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की पसन्द को क़बूल करने में उसे कोई परेशानी न हो। येह मसअला इतना नाज़ुक और अहम है कि अगर कोई ज़ाहिरन तमाम दीन को रखता हो और अभी उसके दिल में येह ह़ालत पैदा न हुई हो वोह शख़्स यक़ीनन ईमान से ख़ाली है और उसका शुमार मुशरेकीन में होगा। आ़म तौर से इन्सान के ईमान का दर्जा इन्सान के दिली लगाव के बराबर होता है और जितना येह लगाव कम और कमज़ोर होगा उतना ही वोह शिर्क में आलूदा होगा। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

لَوْ أَنَّ قَوْماً عَبَدُوا اللَّهَ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَ آتَوُا الزَّكَاةَ وَ حَجُّوا الْبَيْتَ وَ صَامُوا شَهْرَ رَمَضَانَ ثُمَّ قَالُوا لِشَيْءٍ صَنَعَهُ اللَّهُ أَوْ صَنَعَهُ النَّبِيُّ ص أَلَّا صَنَعَ خِلَافَ الَّذِي صَنَعَ أَوْ وَجَدُوا ذَلِكَ فِي قُلُوبِهِمْ لَكَانُوا بِذَلِكَ مُشْرِكِينَ ثُمَّ تَلَا فَلَا وَ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجاً مِمَّا قَضَيْتَ وَ يُسَلِّمُوا تَسْلِيماً ثُمَّ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ع وَ عَلَيْكُمْ بِالتَّسْلِيمِ

लौ अन्न क़ौमन अ़-ब-दुल्ला-ह वह़्दहू ला शरी-क लहू व अक़ामुस़्सला-त व आतुज़्ज़का-त व ह़ज्जुल बै-त व सामू

शह-र र-मज़ा-न सुम्मा क़ालू लेशैइन स-नअ़हुल्लाहो औ स-नअ़हुन्नबीयो सल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम अल्ला स-न-अ़ ख़ेलाफ़ल्लज़ी स-न-अ़, औ व-जदू ज़ाले-क फ़ी कुलूबेहिम, लकानू बेज़ाले-क मुश्रेकी-न सुम्मा तला हाज़ेहिल-आयते. फ़ला व-रब्बे-क ला यूअ्मेनू-न हत्ता योहक्केमू-क फ़ीमा श-ज-र बै-नहुम सुम्म ला यजेदू फ़ी अन्फ़ोसेहिम ह-रजन मिम्मा क़ज़ै-त व योसल्लेमू तस्लीमा सुम्म क़ा-ल अबू अ़ब्दिल्लाह अ़लैहिस्सलाम फ़अ़लैकुम बित्तस्लीमे.

"अगर लोग अल्लाह की एबादत, बग़ैर शिर्क के अन्जाम दें और नमाज़ को क़ाएम करें और ज़कात दें और ख़ुदा के घर का हज करें और रमज़ान में रोज़ा रखें इसके बअ़्द उस चीज़ के बारे में जो ख़ुदा और उसके रसूल ने अन्जाम दिया है येह कहें कि अल्लाह और उसके रसूल ने उस काम के ख़ेलाफ़ क्यों नहीं किया या अपने दिल में ऐसा एअ़्तेराज़ पाएँ अगरचे उसको ज़बान पर न लाएँ। सिर्फ़ वोह इसी बेना पर मुशरिक हो जाएंगे। इसके बअ़्द इमाम ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई: "नहीं! ख़ुदा की क़सम येह लोग उस वक़्त तक ईमान न लाएंगे जब तक वोह लोग अपने मुआमेलात में आपको हाकिम न बना लें फिर तुम्हारे हुक्म को क़बूल करने में उन्हें कोई दुश्वारी न हो और तुम्हारे फ़ैसले के सामने सद दर सद तस्लीम हों। इसके बअ़्द इमाम ने फ़रमाया तुम्हारे ऊपर वाजिब है कि तुम अपने आप को हमारे हवाले कर दो।"

(बेहारुल अनवार, जि. २, स. २०५, सूरए निसा (४), आयत ६५)

हम इस ह़दीस में देख सकते हैं कि तस्लीम की ह़ालत उस वक़्त पैदा होती है जब इन्सान के दिल में अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की फ़रमाइशात और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के अअ़्माल के सिलसिले में पूरी तरह़ से रेज़ायत और ख़ुशी पाई जाती हो। और उसे क़बूल करने में किसी क़िस्म की परेशानी का एह़सास न करे। येह रूह़ और ह़क़ीक़ते ईमान है। इमाम सज्जाद अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

إِنَّ دِينَ اللَّهِ عَزَّ وَ جَلَ لَا يُصَابُ بِالْعُقُولِ النَّاقِصَةِ وَ الْآرَاءِ الْبَاطِلَةِ وَ الْمَقَايِيسِ الْفَاسِدَةِ وَلَا يُصَابُ إِلَّا بِالتَّسْلِيمِ فَمَنْ سَلَّمَ لَنَا سَلِمَ وَ مَنِ اقْتَدَى بِنَا هُدِيَ وَ مَنْ كَانَ يَعْمَلُ بِالْقِيَاسِ وَ الرَّأْيِ هَلَكَ وَ مَنْ وَجَدَ فِي نَفْسِهِ شَيْئاً مِمَّا نَقُولُهُ أَوْ نَقْضِي بِهِ حَرَجاً كَفَرَ بِالَّذِي أَنْزَلَ السَّبْعَ الْمَثَانِيَ وَ الْقُرْآنَ الْعَظِيمَ وَ هُوَ لَا يَعْلَمُ.

इन्न दीनल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल्ल ला योसाबो बिल उ़क़ूलिन्नाक़ेसते वल आराइल बाते-लते वल मक़ायीसिल फ़ासेदते वला योसाबो इल्ला बित्तस्लीमे फ़मन सल्ल-म लना सले-म व मनिक़्तदा बेना होदे-य व मन कान यअ़्मलो बिलक़ेयासे वर्राये ह-ल-क व मन व-ज-द फ़ी नफ़्सेही शैअन मिम्मा नक़ूलोहू औ नक़्ज़ी बेही ह-रजन, क-फ़-र बिल्लज़ी अन्ज़लस्सब्अ़ल्मसानी वल क़ुरआनिल अ़ज़ीमे व हो-व ला यअ़्लमो.

“बेशक ख़ुदा का दीन नाक़िस अ़क़्लों और बातिल फ़िक्रों और नाक़िस मेअ़्यार से ह़ासिल नहीं होता है। बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ तस्लीम के रास्ते से ह़ासिल होता है पस जो

शख़्स अपने आप को हमारे ह़वाले कर दे, वोह मह़फ़ूज़ रहेगा और जो हमारी पैरवी करेगा वोह हेदायत पाएगा और जो कोई अपनी समझ और अपनी तश्ख़ीस पर अ़मल करेगा वोह हलाक हो जाएगा। जो शख़्स दिल में हमारी ह़दीस और हमारे अह़काम क़बूल करने में सख़्ती मह़सूस करेगा गोया उसने सब्अ़ मसानी और क़ुरआन के नाज़िल करने वाले का इन्कार किया है जबकि उस तरफ़ मुतवज्जेह न होगा।"

(कमालुद्दीन, बाब ३१, ह़. ९)

बड़ा ख़तरा येह है कि इन्सान लाशऊ़री तौर पर मुशरिक और काफ़िर हो जाए। हाँ दीनदारी सिर्फ़ अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की तअ़्लीमात पर सर झुकाने से ह़ासिल होती है इसके अ़लावा किसी और चीज़ से ह़ासिल नहीं होती और किसी भी शख़्स को अपनी या दूसरे की समझ को अह़ादीस के मुक़ाबिल में अहम्मीयत नहीं देनी चाहिए। और येह बात आ़म तौर से ज़मानए ग़ैबत में जब इमाम अ़लैहिस्सलाम तक रसाई नहीं है आसानी से ह़ासिल नहीं होगी और तमाम मसाएल में नजात का रास्ता अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की अह़ादीस की तरफ़ रुजूअ़् करना है चाहे इसका तअ़्ल्लुक़ अ़क़ीदा से हो या अ़मल से हो। येह काम आसान नहीं है और आसानी से ह़ासिल होने वाला नहीं है।

ज़मानए ग़ैबत में ह़दीसों को तस्लीम करना

ज़मानए ग़ैबत में इमाम अ़लैहिस्सलाम के सामने तस्लीम होने की एक पहचान येह है कि इन्सान अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की ह़दीस के सामने सर झुका दे। अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से ह़दीसों का जो मज्मूआ़ हमें मिला है उसमें दो

जानिब से बह्स कर सकते हैं। ह़दीस के सादिर होने की जेह्त से और दूसरे ह़दीस के मअ़्ना से बह्स कर सकते हैं। ह़दीस के सादिर होने की जेह्त से येह बह्स की जाएगी कि येह ह़दीस का सिलसिला और सनद इमाम अ़लैहिस्सलाम से मिलती है या नहीं? अगर इन्सान सनदे ह़दीस के सिलसिले में तह़क़ीक़ कर ले और उसे उस ह़दीस के झूठ और मनगढ़त होने के बारे में यक़ीन हो जाए तो ह़दीस के मअ़्ना में बह्स करने की गुन्जाइश बाक़ी न रहेगी। और फिर ह़दीस के मानने या न मानने का सवाल ही नहीं रहेगा चाहे उस कलाम का कुछ भी मअ़्ना हो।

लेकिन अगर तह़क़ीक़ से उसे ह़दीस के झूठ होने का इ़ल्म नहीं हुआ (शीआ़ ह़दीस की कई किताबों का आ़म तौर से ह़ाल यही है), उस वक़्त मअ़्नाए ह़दीस की बात होगी चाहे उस ह़दीस के अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से सादिर होने का यक़ीन हो या गुमान हो। या फिर ह़दीस ख़बरे वाह़िद हो।[१] दोनों ह़ालत में उनके मअ़्ना और दलालत को मानना वाजिब है। उस वक़्त मअ़्ना के लेह़ाज़ से कुछ ह़दीसें हमारी मअ़्लूमात के ऐ़न मुताबिक़ होती हैं। हमारी मअ़्लूमात और उनके मअ़्ना में कोई टकराव नहीं होता है। और कुछ ह़दीसें मअ़्ना में हमारी मअ़्लूमात और हमारे नज़रिये के मुताबिक़ जिसको हम सह़ीह़ मानते हैं उन से टकराती हैं ऐसी सूरत मुतशाबेह ह़दीसों में क़रार पाती हैं यअ़्नी उन ह़दीसों में जिसके मअ़्ना वाज़ेह नहीं है और उस से बहुत से मअ़्ना निकाले जा सकते हैं।

---

[१] ख़बरे वाह़िद: उस ह़दीस को कहा जाता है जिसका रावी एक है या चंद भरोसेमंद आदमी इमाम से ह़दीस नक़्ल करें लेकिन उनकी तअ़्दाद इतनी न हो जिससे मअ़्सूम से ह़दीस सादिर होने का यक़ीन हो जाए ऐसी ह़दीसों का मानना ज़रूरी है उन दलीलों की बेना पर जिसके बारे में इ़ल्मे उसूल में बह्स की गई है लेकिन वोह ह़दीस जिसके रावी मअ़्लूम न हों वोह ह़दीस हमारी बह्स से ख़ारिज है। इस सिलसिले में हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। उस ह़दीस को सादिर होने न होने को हम अइम्मा के ह़वाले करते हैं।

तमाम वोह ह़दीसें जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से हम तक पहुँची है ख़ास तौर से वोह ह़दीसें जो हमारी मअ़्लूमात से मेल नहीं खातीं उन सब का मानना ज़रूरी है। ऐसी सूरत में मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की ह़दीसों को मानने का मतलब येह है कि इन्सान अपनी मअ़्लूमात को ह़दीसों के मुताबिक़ ढाल ले न येह कि उसकी कोशिश येह हो कि ह़दीस का मअ़्ना इस तरह़ करे जो उसकी मअ़्लूमात पर फ़िट आए। इस सिफ़ारिश की वजह येह है कि मुम्किन है कि कुछ ह़क़ीक़त ऐसी हो जिसका इ़ल्म हमें न हो और येह ह़दीस उसी ह़क़ीक़त की तरफ़ इशारा कर रही हो। ह़दीस के सह़ीह़ होने का मेअ़्यार येह नहीं है कि वोह हमारी मअ़्लूमात के मुताबिक़ हो। उ़लूम और तमाम ह़क़ीक़तों का इ़ल्म चहारदा मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की ज़ात तक मह़दूद है। इस वजह से अगर अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से मन्क़ूल ह़दीस में ऐसे मतालिब बयान किए गए हैं जो इन्सान की मअ़्लूमात के मुताबिक़ हैं तो ह़दीस के मानने में कोई परेशानी नहीं है लेकिन अगर ह़दीस के मतालिब इन्सान के नज़रिए के मुताबिक़ नहीं हैं तो इन्सान की कोशिश येह होनी चाहिए कि वोह अपनी इस़्लाह़ ह़दीस के मतालिब के मुताबिक़ कर ले। और अगर ऐसा करना उसके बस में न हो तो उसकी ज़िम्मेदारी ह़दीस के लिए तवक़्क़ुफ़ करना है। और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ ह़दीस का इर्जाअ़् देना है (यअ़्नी येह कहना कि इसका इ़ल्म अइम्मा को है)। हरगिज़ हमें ह़दीस के इन्कार का ह़क़ नहीं है।

अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के क़ौल के मुताबिक़ येह बात नहीं भूलना चाहिए कि ह़दीस और उ़लूमे आले मोह़म्मद को दरियाफ़्त कर लेना आसान नहीं है यहाँ तक कि ईमान वाले भी ख़ास शराएत और एनायत के बअ़्द ही दरियाफ़्त करने की क़ूवत पाते हैं। अगर किसी में येह लेयाक़त है तो ऐ़न मुम्किन है कि वोह बहुत सी ह़दीसों को जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से नक़्ल हुई हैं जिसको दूसरे समझने और दरियाफ़्त करने से क़ासिर हैं आराम से

समझे और क़बूल करे। इस बेना पर किसी को सिर्फ़ इस बात पर ह़दीस का इन्कार करने का ह़क़ नहीं है कि ह़दीस उसकी मअ़्लूमात के मुताबिक़ नहीं है। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम फ़रमाते हैं:

إِنَّ حَدِيثَ آلِ مُحَمَّدٍ صَعْبٌ مُسْتَصْعَبٌ لَا يُؤْمِنُ بِهِ إِلَّا مَلَكٌ مُقَرَّبٌ أَوْ نَبِيٌّ مُرْسَلٌ أَوْ عَبْدٌ امْتَحَنَ اللَّهُ قَلْبَهُ لِلْإِيمَانِ فَمَا وَرَدَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَدِيثِ آلِ مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ فَلَانَتْ لَهُ قُلُوبُكُمْ وَ عَرَفْتُمُوهُ فَاقْبَلُوهُ وَ مَا اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُكُمْ وَ أَنْكَرْتُمُوهُ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَإِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى الْعَالِمِ مِنْ آلِ مُحَمَّدٍ ع وَإِنَّمَا الْهَالِكُ أَنْ يُحَدَّثَ بِشَيْءٍ مِنْهُ لَا يَحْتَمِلُهُ فَيَقُولَ وَاللَّهِ مَا كَانَ هَذَا شَيْئاً وَالْإِنْكَارُ هُوَ الْكُفْرُ

इन-न ह़दी-स आले मोह़म्मदिन स़अ़बुन मुस्तस़अ़बुन ला योअ़्मेनो बेही इल्ला म-लकुन मुक़र्रबुन औ नबीयुन मुर्सलुन औ अ़ब्दुन इम्तह़नल्लाहो क़ल्बहू लिल्ईमाने फ़मा व-र-द अ़लैकुम मिन ह़दीसे आले मोह़म्मदिन स-ल-वातुल्लाहे अ़लैहिम फ़लानत लहू कुलूबोकुम व अ़-रफ़्तोमूहो फ़क़्बलूहो व मश्मअ़ज़्ज़त कुलूबोकुम व अन्करतोमूहो फ़रुद्दूहो एलल्लाहे व एलर्रसूले व एलल्आलिमे मिन आले मोह़म्मदिन अ़लैहिमुस्सलामे व इन्नमल्हालेको अन योह़द्द-स बेशैइन मिन्हो ला यह़्तमेलोहू फ़यक़ूलो: वल्लाहे मा का-न हाज़ा शैअन वलइन्कारो होवल कुफ़्रो.

"आले मोहम्मद अ़लैहिमुस्सलाम की हदीसें मुश्किल और दुश्वार हैं। मलके मुक़र्रब, अम्बियाए मुर्सल या वोह शख़्स जिसके दिल का इम्तेहान अल्लाह ने लिया हो इनके अ़लावा कोई ईमान नहीं लाएगा। पस वोह हदीसें जो तुम्हें आले मोहम्मद से मिली हैं और तुम्हारे दिलों के लिए आसान हैं और तुम्हारी मअ़्लूमात के मुताबिक़ हैं और तुम उन्हें सहीह जानते हो तो क़बूल कर लो। और वोह हदीसें जिनसे तुम दिल में कराहियत महसूस करते हो और तुम्हारी मअ़्लूमात के मुताबिक़ नहीं हैं (और तुम उन्हें सहीह नहीं जानते हो) उनको ख़ुदा और रसूल और आले मोहम्मद के आ़लिम की तरफ़ पलटा दो। बेशक हलाक होने वाला वोह शख़्स जिसके लिए हदीसें बयान की जातीं और वोह समझने और क़बूल करने की सलाहियत न रखते हुए येह कहे कि ख़ुदा की क़सम येह हदीस ग़लत है और येह मअ़्सूम ने नहीं फ़रमाई है (यअ़्नी हदीस का इन्कार करे) तो उसका येह इन्कार कुफ़्र है।"

(बेहारुल अनवार, जि. २, स. १८९)

इस बेना पर तअ़्लीम का तक़ाज़ा येह है कि हदीस के मुक़ाबिल में जो चीज़ इन्सान के ज़ेहन में है अगर वोह दोनों को जमअ़् नहीं कर सकता तो हदीस का इन्कार न करे। और हदीस के ज़ईफ़ होने के लिए उस चीज़ को दलील न बनाए। बल्कि हदीस की तफ़सीर और तौज़ीह को अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से हासिल करने की कोशिश करे। मुम्किन है वोह लोग जो हदीसे आले मोहम्मद के जानने वाले हैं जब उनसे रुजूअ़् किया जाए तो वोह उसकी वज़ाहत करें। अगर ऐसे आ़लिम न मिलें तो आख़िरी मरहला तवक़्क़ुफ़ का है यअ़्नी अपने नज़रिए का इज़्हार न करे और मतलब को

उस वक़्त तक रोके रखे जब तक इन्शाअल्लाह ख़ुद अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का वसीला वाज़ेह़ करने के लिए न मिल जाए। येह ज़रूरी नहीं है कि हर आदमी हर ह़दीस को समझ जाए और अगर न समझे तो उसका इन्कार करे या उसकी तौजीह़ या तावील करे।

अस़्हाबे अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम में सबसे पसन्दीदा-ओ-मह़बूब वोह अस़्ह़ाब हैं जो ह़दीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को अच्छी तरह़ से समझें और अपनी अ़मीक़ नज़र के साथ क़बूल करें। और उनमें बदतरीन अस़्ह़ाब वोह हैं जो ह़दीस के मअ़्ना को नहीं समझते और उसको अपने नज़रिए के मुख़ालिफ़ समझते हैं और उसका इन्कार करते है और उसको नहीं मानते। ह़क़ीक़त में येह अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की वेलायत का इन्कार है इसलिए कि उनकी वेलायत के क़बूल करने का मअ़्ना येह है कि तमाम उन चीज़ों को क़बूल कर ले जो उनसे मुतअ़ल्लिक़ हैं यहाँ तक कि अगर उनकी अह़ादीस हमारे इस नज़रिए के मुख़ालिफ़ हो जिनको हम सह़ीह़ जानते हैं। इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

أَمَا وَ اللّٰهِ إِنَّ أَحَبَّ أَصْحَابِي إِلَيَّ أَوْرَعُهُمْ وَ أَفْقَهُهُمْ وَ أَكْتَمُهُمْ لِحَدِيثِنَا وَ إِنَّ أَسْوَأَهُمْ عِنْدِي حَالًا وَ أَمْقَتَهُمْ إِلَيَّ الَّذِي إِذَا سَمِعَ الْحَدِيثَ يُنْسَبُ إِلَيْنَا وَ يُرْوَى عَنَّا فَلَمْ يَعْقِلْهُ وَ لَمْ يَقْبَلْهُ قَلْبُهُ اشْمَأَزَّ مِنْهُ وَ جَحَدَهُ وَ كَفَّرَ بِمَنْ دَانَ بِهِ وَ هُوَ لَا يَدْرِي لَعَلَّ الْحَدِيثَ مِنْ عِنْدِنَا خَرَجَ وَ إِلَيْنَا أُسْنِدَ فَيَكُونُ بِذَلِكَ خَارِجاً مِنْ وَلَايَتِنَا

अमा वल्लाहे इन्न (इन-न) अह़ब्ब अस़्हाबी एलै-य औ-रअ़ोहुम व अफ़्क़होहुम व अक्तमोहुम ले-ह़दीसेना व अन्न अस्व-अहुम इन्दी ह़ालन व अम्क़-तहुम एलैयल्लज़ी एज़ा

समेअ़लह़दी-स युन्सबो इ़लैना व यूर्व अ़न्ना फ़लम यअ़्क़िल्हो व लम यक़्बलहो क़ल्बोहू इ़श्मअ़ज़्ज़ मिन्हो व ज-ह़-दहू व क-फ़-र बेमन दा-न बेही व हो-व ला यद्री लअ़ल्लल्ह़दी-स मिन इ़न्दना ख़-र-ज व इ़लैना उस्ने-द फ़-यकूनो बेज़ाले-क ख़ारेजन मिन वेलायतेना.

"ग़ौर करो ख़ुदा की क़सम मेरे नज़्दीक मेरे पसंदीदा-ओ-मह़बूब अस्ह़ाब वोह हैं जो परहेज़गार, फ़ह्म और दीन में बसीरत, हमारी ह़दीसों को दूसरों से ज़्यादा छिपाने वाले हों। और उन में से मेरे नज़्दीक बदतरीन वोह हैं जो हम से मन्सूब ह़दीसों को सुनते हैं उनको न समझते हैं और न ही उनके दिल उसको क़बूल करते हैं वोह इन ह़दीसों से बेज़ार है और उसका इन्कार करते हैं और इसी वजह से उन लोगों का इन्कार करते हैं जो उन ह़दीसों पर ईमान रखते हैं जब कि उन्हें पता नहीं है शायद वोह ह़दीस ह़क़ीक़त में हम से आई हो और उसकी सनद हम तक पलटती हो। इसी वजह से वोह लोग हमारी वेलायत से बाहर हैं।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. २, स. १८६)

अगर मान लिया जाए कि इन्सान सिर्फ़ उस ह़दीस को क़बूल करे जो उसके नज़रिए के मुवाफ़िक़ हो और जो उसके नज़रिए के मुताबिक़ न हो उसे क़बूल न करे ह़क़ीक़त में ऐसे शख़्स ने अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की वेलायत को क़बूल नहीं किया है बल्कि वोह अपने नज़रियात का पैरवकार है।

वेलायत के क़बूल करने का मअ्ना येह है कि इन्सान अपने वली को अपनी जान-ओ-माल पर अपने से ज़्यादा साहेबे एख़्तेयार, इस्तेअ्माल करने का अपने से ज़्यादा हक़दार समझे। और इस अ़क़ीदे का लाज़ेमा येह है कि वोह अपने वली के नज़रियात को दूसरों के नज़रियात पर तर्ज़ीह दे। ऐसा न हो कि वोह अपने वली के नज़रियात को सिर्फ़ उसी जगह पर तर्ज़ीह दे जहाँ उसके नज़रियात से वोह नज़रिया मेल खाता हो और दूसरी जगहों पर इन्कार करे या अपने नज़रिए के मुताबिक़ उसकी तौजीह करे। हक़ीक़त में ऐसे अफ़राद ने अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की किसी जगह भी पैरवी नहीं की है। इसलिए कि उन जगहों में भी उसने अपने नज़रियात की पैरवी की है जहाँ हदीस उसके नज़रियात से इत्तेफ़ाक़न मेल खाती है। किसी भी सूरत में अ़क़ीदे का मेअ्यार और मीज़ान वोह अ़क़ीदा होना चाहिए जो हदीसों में बयान हुआ हो, चाहे हमारे नज़रियात के मुताबिक़ हो या मुख़ालिफ़ हो। सिर्फ़ उसी सूरत में इन्सान कह सकता है कि उसने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की वेलायत को क़बूल किया है।

येह तमाम बातें उन अहादीस का निचोड़ हैं जिनकी निस्बत अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से साबित है और इसमें किसी क़िस्म का शक और तरद्दुद नहीं है लेकिन वोह हदीसें जिनकी निस्बत अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से ग़ैर यक़ीनी हैं यअ्नी ख़बरे वाहिद या वोह अहादीस जिसको हमारे उ़लमाए बुज़ुर्ग और ख़बीर शीआ़ जैसे कि मरहूम कुलैनी और अ़ल्लामा मजलिसी अ़लैहिर्रह्मा ने सहीह जाना है लेकिन उसकी सनद को नक़्ल नहीं किया है उन हदीसों के बारे में भी सिर्फ़ इस दलील से उनका फ़ैसला नहीं किया जा सकता कि वोह हमारे नज़रियात से मैल नहीं खातीं और न ही उनका इन्कार किया जा सकता है। इसलिए कि किसी कलाम की सेहत का मेअ्यार अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से सहीह निस्बत का होना है हमारी नाक़िस फ़हम नहीं है। इस बेना पर वोह लोग जो अपने आप को उनका पैरवकार

बताते हैं उन्हें इतनी मेक़दार में भी उन चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ जिनका तअ़ल्लुक़ अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से है सुस्ती और काहिली का ह़क़ नहीं है।

इस फ़िक्र के मुक़ाबिल में यहाँ पर एक सवाल पेश आता है वोह येह कि अगर मान लिया जाए तो अ़क़्ल और बदीहीयाते अ़क़्ल की क्या क़ीमत होगी। अगर कोई कलाम जो अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की ह़दीस के उ़न्वान से नक़्ल हुआ है वोह अ़क़्ल के नज़्दीक तस्लीम शुदा चीज़ से टकराता हो तो क्या करेंगे। क्या इस सूरत में भी ह़दीस को रद्द और इन्कार नहीं किया जा सकता है?

अगर ऐसा हो तो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की ज़ाते पाक अल अ़याज़ो बिल्लाह बातिल ग़ैर सह़ीह़ चीज़ों से पाक न होगी? और उनके कलाम की सेह़त यहाँ तक कि ख़ुद उनकी ह़क़्क़ानियत भी ज़ेरे सवाल आ जाएगी। क्योंकि येह बातें इन्सान के लिए हुक्मे अ़क़्ल के क़तई होने की बेना पर क़ाबिले क़बूल होती हैं। और नतीजे को मअ़्ना और अस़्ल से टकराना नहीं चाहिए। इस सवाल का जवाब ख़ुद ह़दीसों में आया है और अ़क़्ल भी उसकी तस़्दीक़ करती है और उसको सह़ीह़ जानती है।

एक आदमी इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचा और अ़र्ज़ किया:

جُعِلْتُ فِدَاكَ إِنَّ الرَّجُلَ لَيَأْتِينَا مِنْ قِبَلِكَ فَيُخْبِرُنَا عَنْكَ بِالْعَظِيمِ مِنَ الْأَمْرِ فَيَضِيقُ بِذَلِكَ صُدُورُنَا حَتَّى نُكَذِّبَهُ

जोइ़लतो फ़ेदा-क, इन्नर्रजो-ल ल-यअ़्तीना मिन क़े-ब-ले-क फ़योख़्बेरोना अ़न-क बिल अ़ज़ीमे मिनल अम्रे फ़-यज़ीक़ो बेज़ाले-क सोदूरोना ह़त्ता नोकज़्ज़े-बहू.

"मेरी जान आप पर क़ुरबान हो। आप की तरफ़ से एक शख़्स हमारे पास आता है और अहम बात आपकी तरफ़ से हमारे लिए बयान करता है और बात इतनी अहम है कि हमारा सीना उस बात को क़बूल करने में दुश्वारी महसूस करता है यहाँ तक कि हम उसका इन्कार और झुठला देते हैं। "

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया:

أَلَيْسَ عَنِّي يُحَدِّثُكُمْ

अलै-स अ़न्नी योहद्देसोकुम?

"क्या वोह हमारी जानिब से तुम्हारे लिए हदीसें नक़्ल करता है।"

रावी ने कहा **"हाँ"**। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

فَيَقُولُ لِلَّيْلِ إِنَّهُ نَهَارٌ وَلِلنَّهَارِ إِنَّهُ لَيْلٌ

फ़-यक़ूलो लिल्लैले इन्नहू नहारुन व लिन्नहारे इन्नहू लैलुन?

"क्या वोह रात को दिन कहते है और दिन को रात कहते है?"

रावी ने कहा **"नहीं, ऐसा नहीं है"**। फ़िर इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

رُدَّهُ إِلَيْنَا فَإِنَّكَ إِنْ كَذَّبْتَ فَإِنَّمَا تُكَذِّبُنَا

रुद्दहू इलैना फ़इन्न-क इन कज़्ज़ब-त फ़इन्नमा तोकज़्ज़ेबोना.

“उस ह़दीस को हमारी तरफ़ पलटा दो (उसकी फ़ह्म हम पर छोड़ दो) इसलिए कि अगर तुमने उनको झुठलाया तो गोया तुमने हमको झुठलाया है।”

(बेह़ारुल अनवार, जि. २, स़. १८७)

जो लफ़्ज़ इमाम अ़लैहिस्सलाम ने रावी के लिए इस्तेअ़्माल किया वोह मिसाल है इस बात के लिए कि जो बदीही बातों के ख़ेलाफ़ है। अगर वोह चीज़ जो ह़दीस के उ़न्वान से नक़्ल हुई है वोह मुख़ालिफ़ हो ज़रूरी अह़काम के और अ़क़्ली हुक्म के साथ जैसे टकराव (ऐसा टकराव जैसे दिन और रात के दरमियान है) और किसी भी सूरत में दोनों को इकट्ठा न किया जा सकता हो तो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के सिपुर्द करने से हमारी ज़िम्मेदारी ख़त्म हो जाती है। लेकिन इस तरह़ का टकराव हर जगह नहीं है। यअ़्नी तनाक़ुज़ की हद तक नहीं होता। अगर ऐसी सूरत पेश आए तो ज़रूरी है कि अपने अ़क़ाएद को ह़दीस से हमाहंग करें। अगर येह मुम्किन न हो तो ह़दीस को अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के ह़वाले कर दें।

तनाक़ुज़ की ह़द तक टकराव उस वक़्त पेश आता है जब हुक्मे अ़क़्ल इस मूरिद में फ़ितरी हो। यअ़्नी मसअले का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ अ़क़्ल से हो। जैसे ज़ुल्म करना बुरा है ऐसे हुक्म को हर आदमी मानता है क़बूल करता है। इस बात को समझना आ़लिम और फ़ल्सफ़ी से मख़्सूस नहीं है बल्कि हर आदमी समझता है इसे पढ़ लिख कर ह़ासिल नहीं किया जा सकता है। और दूसरी तरफ़ भी ह़दीसे मन्क़ूल का ज़ाहिरी मअ़्ना अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ से मन्सूस होना चाहिए यअ़्नी उस मअ़्ना की ताईद इमामे मअ़्सूम अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ से होना चाहिए। इस तरह़ ह़दीस से जो समझा गया है उसमें ज़र्रा बराबर भी शक नहीं होना चाहिए। अगर ऐसी सूरत न हो बल्कि इन्सान ह़दीस का इस तरह़ मअ़्ना करे जो अ़क़्ली हुक्म से न टकराए तो इन्सान के लिए वाजिब है कि ह़दीस के मअ़्ना को

उसी तरह समझे अगरचे हदीस का ज़ाहिर उसके बरख़ेलाफ़ हो। बिल्कुल उसी तरह से जैसे बअ्ज़ आयतों के बारे में करते हैं।

क़ुरआन की आयतें जिनका आना अल्लाह की तरफ़ से यक़ीनी है अगर उनका ज़ाहिरी मफ़हूम हुक्मे अ़क़्ल के ख़ेलाफ़ हो तो उन आयतों का मअ्ना ज़ाहिरी सूरत से हट कर किया जाता है मिसाल के तौर वोह आयतें जो इन्सान की आज़ादी और एख़्तेयार के बज़ाहिर ख़ेलाफ़ दलालत करती हैं और उनका ज़ाहिर फ़ितरी हुक्मे अ़क़्ल के ख़ेलाफ़ है। हम यहाँ पर उसकी सनद को ज़ईफ़ क़रार नहीं देते बल्कि कहते हैं इस आयत का ज़ाहिरी मअ्ना मुराद नहीं है और ज़ाहिरी मअ्ना के ख़ेलाफ़ मअ्ना करते हैं जो हुक्मे अ़क़्ल से मेल खाता है और उससे टकराता नहीं है। अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से मन्क़ूल हदीसों में भी इसी रविश को अपनाना चाहिए यअ्नी अगर हदीस का ज़ाहिरी मअ्ना फ़ितरी

हुक्मे अ़क़्ल के ख़ेलाफ़ हो तो उस हदीस का मअ्ना इस तरह से करेंगे जो अ़क़्ल के हुक्म के मुवाक़िफ़ हो। इस तरह से दोनों के दरमियान का टकराव ख़त्म हो जाएगा।

लेकिन अगर येह काम किसी जगह पर मुम्किन न हो यअ्नी हदीस का ख़ेलाफ़ ज़ाहिरी मअ्ना करना नामुम्किन हो दूसरे लफ़्ज़ों में हदीस का मअ्ना ख़ुद इमाम अ़लैहिस्सलाम ने बयान किया हो और वाक़ेअन हुक्मे अ़क़्ल के ख़ेलाफ़ हो (उस वक़्त ऐसा है जैसे दिन को रात कहें और रात को दिन कहें) अगर ऐसी नौबत वाक़ेअन आ जाए तो हमें हदीस के मअ्ना को क़बूल करना और उस पर अ़मल करना ज़रूरी नहीं है। जो हमें अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से मिला है हम उसे आयत की तरह क़बूल करते हैं बग़ैर चूँ चेरा के मानते हैं और उन तमाम बातों पर ईमान रखते हैं और कोई ज़रूरत नहीं है कि हम हर हदीसे मन्क़ूल को समझें बिल्कुल

उसी तरह से जैसे हर आयत का मअ्ना जानना ज़रूरी नहीं है हम मुतशाबेह आयतों को सहीह मअ्ना जाने और समझे बग़ैर मानते हैं क़बूल करते है मिसाल के तौर पर येह आयत:

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ

व मा रमै-त इज़ रमै-त वलाकिन्नल्लाहा रमा.

"और जब तुमने तीर फेंका तो तुमने नहीं फेंका बल्कि ख़ुदावन्द मुतआल ने फेंका है।"

(सूरए अन्फ़ाल (८), आयत १७)

हम यक़ीन से कह सकते हैं कि आयत में बात पैग़म्बर के तीर फेंकने की है क्योंकि तीर फेंकना इन्सान का एख़्तेयारी फ़ेअ्ल है और येह मानना ग़लत है कि इन्सान के एख़्तेयार में एक काम है और वही काम उसके एख़्तेयार में नहीं भी है। लेकिन येह मुम्किन है कि हम आयत का सहीह मअ्ना न जानते हों। इस सूरत में हम आयत का इन्कार नहीं करते बल्कि उसके मअ्ना को न समझते हुए भी उस पर ईमान लाते हैं। हदीस की बाबत भी हमारी यही ज़िम्मेदारी है। अगर हदीस के मुतशाबेहात को मोहकमात से नहीं समझ सके तो येह काम करेंगे और अगर येह काम न कर सके तो हदीस का इन्कार नहीं करेंगे बल्कि उस पर ईमान लाएंगे इस यक़ीन के साथ कि अगर इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया है तो हम इसे मानते हैं अगरचे उसके मअ्ना और मक़सद को नहीं समझते हैं। जो बात यक़ीनी है वोह येह है कि अगर हदीस का ज़ाहिर हमारी मअ्लूमात से टकराता है तो हमें उस हदीस के इन्कार का हक़ नहीं है। अगर वोह हदीस हुक्मे अ़क़्ल के ख़ेलाफ़ है तो उस हदीस के मफ़हूम को मानना हमारे लिए ज़रूरी नहीं है लेकिन उस हदीस का तअ्ल्लुक़ इमाम अ़लैहिस्सलाम से है या नहीं है इस बात को अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के हवाले

कर देंगे। लेकिन येह इत्मीनान है कि अगर उस ह़दीस का तअ़ल्लुक़ इमाम अ़लैहिस्सलाम से है तो यक़ीनन येह हुक्मे अ़क़्ल के ख़ेलाफ़ नहीं है।

गुज़श्ता बात से सर्फ़े नज़र येह बात यक़ीनी और आ़म है और इस बात का जानना ज़रूरी है कि अह़ादीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के कई मअ़्ना हो सकते हैं। मुम्किन है इसमें से एक या चन्द मअ़्ना हमारे लिए वाज़ेह़ न हों। येह बात ख़ुद अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने बताई है कि हम अपने कलाम का सत्तर (७०) मअ़्ना बयान कर सकते हैं और हर मअ़्ना ह़दीस के लफ़्ज़ के मुताबिक़ होगा जैसा कि इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

إِنَّ الْكَلِمَةَ مِنْ كَلَامِنَا لَتَنْصَرِفُ عَلَى سَبْعِينَ وَجْهاً لَنَا مِنْ جَمِيعِهَا الْمَخْرَجُ

इन्नल कलेम-त मिन कलामेना लतन्सरेफ़ो अ़ला सब्ई-न वज्हन लना मिन जमीएहल मख़रजो.

"बेशक हमारे कलाम के हर लफ़्ज़ के सत्तर मअ़्ना हो सकते हैं और हर एक मफ़हूम अ़क़्ल के मुताबिक़ होगा।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. २, स़. १८४)

इस ह़दीस में दो बात का इशारा हुआ है एक येह कि अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के कलाम के बहुत से मअ़्ना हो सकते हैं यअ़्नी सत्तर मअ़्ना तक हो सकते हैं दूसरे येह कि येह सत्तर मअ़्ना अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ही बयान कर सकते हैं यअ़्नी अगर अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम अपनी कलाम का मअ़्ना किसी को बताना चाहें तो उसी ह़दीस से सत्तर मअ़्ना तक बता सकते हैं। अगरचे येह क़ुदरत अक्सर उ़लमा को नहीं है।

एक आ़लिम और मुफ़क्किर को कितना ह़दीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से मानूस होना चाहिए और कितना मआ़रिफ़ के मुख़्तलिफ़ बुनियादी अबवाब

से वाक़िफ़ होना चाहिए कि ह़दीसों के तमाम मअ़्ना को निकाले और समझ सके या कुछ मअ़्ना को बयान कर सके। यही वजह है कि अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम अह़ादीस को समझने और ग़ौर करने पर ज़ोर देते थे। और जो उनके कलाम को गहराई से समझे सिर्फ़ उसी को फ़क़ीह कहा जाता है और ऐसी फ़क़ाहत उसे ह़ासिल होती है जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के कलाम के बातिनी मअ़्ना को समझता हो गुज़श्ता ह़दीस की इब्तेदा इसी तरह़ है।

इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

حَدِيثٌ تَدْرِيهِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفٍ تَرْوِيهِ وَ لَا يَكُونُ الرَّجُلُ مِنْكُمْ فَقِيهاً حَتَّى يَعْرِفَ مَعَارِيضَ كَلَامِنَا

ह़दीसुन तद्रीहे ख़ैरुन मिन अल्फ़िन तवीहे व ला यकूनुर्रजोलो मिन्कुम फ़क़ीहन ह़त्ता यअ़्रे-फ़ मआरी-ज़ कलामेना.

"एक ह़दीस का गहराई से समझना हज़ार ह़दीसों के नक़्ल करने से बेहतर है तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक फ़क़ीह नहीं हो सकता जब तक हमारी बातों के ग़ैर सरीह़ी मअ़्ना को न समझे।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. २, स. १८४)

मआरीज़ जम्ए़ मुअ़र्रज़ है। मुसर्रह़ के मुक़ाबिल में इस्तेअ़्माल होता है जो सराह़त के साथ किसी कलाम में ज़िक्र हो उसे मुसर्रह़ और जो तलवीह़न ज़िक्र हो उसे मुअ़र्रज़ कहते हैं। एक कलाम में मुम्किन है एक मअ़्ना सरीह़ हो और एक या कई मअ़्ना ग़ैर सरीह़ मक़सूदे मुतकल्लिम हो। लोग आ़म तौर से सरीह़ी मअ़्ना को एक कलाम से समझते हैं लेकिन जो कहने वाले के मिज़ाज से वाक़िफ़ और एक कलाम के क़राएने ह़ालिया

और मक़ालिया को समझते हैं अपनी समझ के मेअ्यार के मुताबिक़ ज़िम्नी मअ्ना और तलवीह़ी मअ्ना को भी समझते हैं।

ह़दीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम में भी जो लोग मआरिफ़ के मुख़्तलिफ़ अबवाब से मानूस नहीं हैं वोह लोग आ़म तौर से कलाम के सरीह़ी मअ्ना को सिर्फ़ समझते हैं लेकिन मज़हब में दिक़्क़ते नज़र और उस पर चलने में और अलग अलग शर्तें जो कलाम के दरमियान ज़िक्र की गई हैं "जैसे तक़ैया और तक़ैया जैसी चीज़ें" अस्ह़ाबे इमाम और ह़दीस के रावी भी कभी किसी चीज़ के दरियाफ़्त करने की क़ूवत नहीं रखते और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने उनके सामने तौरिया किया है? और ऐसी बातें जिनमें से हर एक कलाम के बातिनी मअ्ना को समझने में मुअस्सर है ऐसी चीज़ें इन्सान को अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की कुछ बातों के समझने में मददगार हैं और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के मूरिदे नज़र मअ्ना को करीब कर देती है उन बातों से वाक़िफ़ नहीं हैं। अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की नज़र में फ़क़ीह़ उसे कहते हैं जो ऐसे मसाएल और कलामे अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के समझने की सलाह़ियत रखता हो। सिर्फ़ ऐसे लोग गहराई से अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की बातों को समझते हैं और अगर ऐसा न हो यअ्नी सिर्फ़ ज़ाहिरी मअ्ना को समझता है येह फ़क़ीह नहीं हो सकता है क्योंकि फ़िक़्ह के मअ्ना गहराई से समझना है। ऐसा आदमी गहरी फ़िक्र नहीं रखता है बल्कि सिर्फ़ एक सत़्ही और ज़ाहिरी मअ्ना तक पहुँचा है। अगर ऐसा है तो अह़ादीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के मुक़ाबिल बहुत एह़्तेयात करना चाहिए और अपनी सत़्ही राय देने से परहेज़ करना चाहिए कितने ऐसे लोग हैं जो उ़लूमे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के सिलसिले में जाहिल हैं लेकिन जब एक ह़दीस से सामना होता है और उस ह़दीस से जो मअ्ना समझते हैं येह मअ्ना उनके क़बूल किए हुए मअ्ना के मुताबिक़ नहीं होता तो फ़ौरन बहुत आसानी के साथ उस ह़दीस का इन्कार कर देते है और येह नहीं समझते

कि अगर मान लिया कि जो मअ्ना उन्होंने समझा है वोह सहीह है तो उसके दूसरे मअ्ना का इन्कार नहीं किया जा सकता है.....

चुनांचे जिस फ़क़ाहत का ज़िक्र हुआ तूले तारीख़े ग़ैबत में बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे जो तमाम उ़लूमे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को जानते हों। लेकिन शीओं के अ़ज़ीम उ़लमा के दरमियान ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के मिज़ाक़ और रविश से आगाह थे। कलामे इमाम अ़लैहिस्सलाम में क़रीना और शराएते कलाम को जानते थे इससे बढ़कर बहुत सी रवायतों में इमाम अ़लैहिस्सलाम के मंज़ूरे नज़र मअ्ना को भी समझते थे। इसकी वजह उ़लमा और मुफ़क्किर के दरमियान ह़दीस के बाबत सरे तस्लीम ख़म करना था और हमेशा फ़िक़्ही अह़ादीस में इस बात की रेआयत होती रहती है लेकिन अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि फ़िक़्ह और अह़कामे अ़मली से हट कर यअ्नी अ़क़ाएद के सिलसिले में जो अह़काम से ज़्यादा अहम है और ग़ैर फ़िक़्ही आयात की तफ़सीर में फिर अख़्लाक़ियात और क़ल्बी अह़काम में ऐसे उ़लमा और मुफ़क्किरों की जो अह़ादीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के सिलसिले में तस्लीम मह़ज़ हो या मज़हब पर चलने वाले और हर चीज़ से पहले अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के नज़रियात जानने की कोशिश करने वालों की तअ्दाद उंगलियों पर गिनी जा सकती है और ह़क़ीक़त में सिर्फ़ ऐसे लोग ही दअ्वा कर सकते हैं कि हमारे लिए अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के कलाम को क़बूल करना मुश्किल नहीं है। अगर ऐसी ह़ालत न हो बल्कि ह़दीसों की तरफ़ रुजूअ् करना सिर्फ़ इसलिए होता कि अपने नज़रिए की ताईद की जा सके या अपने नज़रिए को साबित करने के लिए हो तो ऐसे काम की कोई वक़अ़त नहीं है।

बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो अपने मतालिब को पेश करने के लिए ह़दीसों से इस्तेदलाल करते हैं और ह़दीसों से मदद लेते हैं लेकिन येह काम अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के सामने सरे तस्लीम ख़म करने का मिस़्दाक़ नहीं हो

सकता। जो शख़्स बशरी फ़िक्र को अपने अ़क़ाएद की बुनियाद क़रार देता हो और उस वक़्त ह़दीसें अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को अपनी फ़िक्र की ताईद में पेश करता हो या दलील बनाता हो फिर किसी क़िस्म का तअ़ल्लुक़ न रखता हो या उनकी तरह किसी और की तावील करता हो ह़क़ीक़त में वोह अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के सामने तस्लीम नहीं है। मुम्किन है ऐसा शख़्स मक़ामे इमामत की तज्लील करे इश्क़ और अ़क़ीदत का अपने क़ौल-ओ-अ़मल से उन ह़ज़रात के लिए दअ़्वा करे लेकिन येह सब ह़क़ीक़ी पैरवी और उनकी तअ़्लीमात-ओ-मज़हब से मुकम्मल हमाहंगी नहीं है।

किसी शख़्स को सिर्फ़ इस बात की बेना पर कि उसने अपनी बातों या अपनी किताबों में ह़दीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को दलील के तौर पर पेश किया है या अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की पैरवी का नअ़्रा दिया है अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का ह़क़ीक़ी मानने वाला क़रार नहीं दिया जा सकता। इस बात को पहचानना आसान और हर शख़्स के बस में नहीं है बल्कि इस मसअले में ख़ुद इन्सान का माहिर और रविशे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से आगाही और वसाएल का होना ज़रूरी है। ह़दीस का काफ़ी मुतालेआ और मुराजेआ भी होना चाहिए ताकि ऐसी चीजों के पहचान की सलाह़ियत पैदा हो सके।

फ़क़ाहत की वादी में दाख़िल होकर अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के मेअ़्यार पर उतरना बहुत मुश्किल काम है। फ़क़ाहत - मन्तिक़, अदबीयाते फ़िक़्ह और उसूल के पढ़ने से ह़ासिल नहीं होती। उन मौज़ूआत को पढ़ना ज़रूरी है इसके साथ साथ मआ़रिफ़े अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम और एअ़्तेक़ादी मसाएल का जानना भी ज़रूरी है। येह सब फ़क़ाहत की अहम शर्ते हैं लेकिन इन सब से ज़्यादा उनसे तवस्सुल करना और मदद की दरख़ास्त करना, उनसे मदद तलब करना ज़रूरी है ताकि जहाँ भी पेशरफ़्त हो

अइम्मए मअ्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम के ज़ेरे साया और लुत्फ़ से हो। इल्म की वादी में दूसरे मूरिद से ज़्यादा अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की तवज्जोहात दरकार हैं क्योंकि उ़लमा और फ़ुक़हा के लिए ख़तरात ज़्यादा हैं। मुफ़क्किरीन और उ़लमा जिस दीनी रास्ते में चलते हैं उसमें शैतान का नुफ़ूज़ ज़्यादा गहरा और ख़तरनाक है। इसी वजह से तवस्सुल ख़ास कर इमामे ग़ाएब अ़लैहिस्सलाम से दूसरों से ज़्यादा होना चाहिए। इस यक़ीन के साथ कि उ़लूमे आले मोहम्मद ख़ुद उनके लुत्फ़ और तवज्जोह के बग़ैर ह़ासिल नहीं होते। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते है:

إِنَّ حَدِيثَنَا صَعْبٌ مُسْتَصْعَبٌ ... لَا يَحْتَمِلُهُ مَلَكٌ مُقَرَّبٌ وَلَا نَبِيٌّ مُرْسَلٌ وَلَا مُؤْمِنٌ مُمْتَحَنٌ

इन्न ह़दी-सना सअ़बुन मुस्तस़्अबुन.....ला यह़्तमेलोहू म-लकुन मुक़र्रबुन व ला नबीयुन मुर्सलुन व ला मोअ्मेनुन मुम्तह़िनुन.

"बेशक हमारी ह़दीसें सख़्त और मुश्किल हैं.....मलके मुक़र्रब और कोई भेजे हुए पैग़म्बर और कोई आज़माया हुआ मोअ्मिन भी बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

अबू सामित, जो इस ह़दीस के रावी हैं, कहते हैं: मैंने पूछा:

فَمَنْ يَحْتَمِلُهُ جُعِلْتُ فِدَاكَ

फ़-मँय्यह़्तमे-लहू जोइ़ल्तो फ़ेदा-क?

"मैं आप पर कुर्बान हो जाऊँ पस कौन इसे दरियाफ़्त कर सकता है?"

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने इसके जवाब में फ़रमाया:

مَنْ شِئْنَا يَا أَبَا الصَّامِتِ

मन शेअ्ना या अबस़्सामेते.

"ऐ अबू सामित, हम जिसे चाहें।"

(बेह्रारुल अनवार, जि. २, स. १९२)

इससे मअ्लूम होता है ख़ास तौर से उस शख़्स के लिए जो इमाम अ़लैहिस्सलाम की ह़दीसों को पढ़ता या सुनता है जब तक अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की तवज्जोह उसके शामिले ह़ाल न हो वोह ह़दीसों को नहीं समझ सकता है। ह़दीसों के तह़म्मुल करने का मअ्ना पढ़ना और याद करना नहीं है बल्कि उसका दिल में जगह पाना और क़बूल करना है और येह ह़ज़रत के लुत़्फ़े ख़ास के बग़ैर मुम्किन नहीं है इसलिए हर वोह शख़्स जो उ़लूमे दीन ह़ासिल कर रहा है और ह़दीसे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से रुजूअ् करता है और ह़दीस को समझता और दिल से क़बूल करता है ऐसे शख़्स को इमाम अ़लैहिस्सलाम की तवज्जोह और ए़नायत ह़ासिल होनी चाहिए वरना उ़लूमे आले मोह़म्मद का मुतह़म्मिल नहीं हो सकता। पस इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने मलके मुक़र्रब, नबीये मुर्सल और आज़माए हुए मोअ्मिन से ह़दीस फ़ह्मी का मुत्लक़न इन्कार नहीं किया है जैसा कि दूसरी ह़दीसों में इज्मालन और इन्हीं तीन गरोहों को ह़दीस समझने वाला बताया गया है। पस यहाँ पर जिस चीज़ का इन्कार किया गया है वोह येह है कि अगर मशीयते इमाम अ़लैहिस्सलाम न होती येह तीन गिरोह भी ह़दीस नहीं समझ सकते और येह लोग भी मआ़रिफ़े अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के मुतह़म्मिल नहीं हो सकते और अगर किसी को उन मआ़रिफ़ की तौफ़ीक़ होती है तो उसकी वजह सिर्फ़ और सिर्फ़ अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की तवज्जोह और ए़नायते ख़ास है। इस बात को देखते हुए हमेशा इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से तवस्सुल करना और उन रास्तों को अपनाना जिससे

हज़रत की तवज्जोह और रज़ा हासिल हो ख़ास कर उन लोगों के लिए जो उ़लूमे आले मोहम्मद को हासिल कर रहे हों ज़्यादा ज़रूरी और ज़्यादा अहम है।

जल्द बाज़ी तस्लीम के ख़ेलाफ़ है

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में तस्लीम के वाजिब होने का एक मिस्दाक़ जिसमें मोअ्मिनीन का इम्तेहान होगा, ज़मानए ग़ैबत का तूलानी होना है इस मसअले के शुरुअ् होने से पहले हमारे अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने पेशीनगोई कर दी थी और येह भी बता दिया था कि इसको बर्दाश्त करना मोअ्मिन के लिए सख़्त और दुश्वार होगा। जो लोग इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत के दर्द को एहसास करते हैं उनके लिए ज़हूर में एक दिन या एक घन्टे की ताख़ीर और ज़्यादा दर्द के एहसास का मूजिब होती है और उसे बर्दाश्त करना ज़्यादा मुश्किल होता है। मुसीबत जितनी ज़्यादा बड़ी होती है उतना ही ज़्यादा सब्र दरकार होता है। ग़ैबत की मुसीबत को बर्दाश्त करने के लिए और सब्र का दामन हाथ से न जाने के लिए ख़ुदा से मदद की दरख़ास्त करते रहना चाहिए। ख़ुदा से मदद तलब करने की एक मिसाल इस दुआ में मिलती है जिसे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के नाएबे अव्वल जनाब उ़स्मान बिन सईद अ़म्रवी रह्मतुल्लाह अ़लैहे ने नक़्ल किया है:

اللَّهُمَّ ... ثَبِّتْنِي عَلَى طَاعَةِ وَلِيِّ أَمْرِكَ الَّذِي سَتَرْتَهُ عَنْ خَلْقِكَ
فَبِإِذْنِكَ غَابَ عَنْ بَرِيَّتِكَ وَ أَمْرَكَ يَنْتَظِرُ وَ أَنْتَ الْعَالِمُ غَيْرُ
مُعَلَّمٍ بِالْوَقْتِ الَّذِي فِيهِ صَلَاحُ أَمْرِ وَلِيِّكَ فِي الْإِذْنِ لَهُ بِإِظْهَارِ
أَمْرِهِ وَ كَشْفِ سِتْرِهِ فَصَبِّرْنِي عَلَى ذَلِكَ حَتَّى لَا أُحِبَّ تَعْجِيلَ مَا
أَخَّرْتَ وَ لَا تَأْخِيرَ مَا عَجَّلْتَ وَ لَا أَكْشِفَ عَمَّا سَتَرْتَهُ وَ لَا أَبْحَثَ

عَمَّا كَتَمْتَهُ وَلَا أُنَازِعَكَ فِي تَدْبِيرِكَ وَلَا أَقُولَ لِمَ وَ كَيْفَ وَمَا بَالُ وَلِيِّ الْأَمْرِ لَا يَظْهَرُ وَ قَدِ امْتَلَأَتِ الْأَرْضُ مِنَ الْجَوْرِ وَ أُفَوِّضُ أُمُورِي كُلَّهَا إِلَيْكَ

अल्लाहुम्मा.....सब्बितनी अ़ला ताअ़ते वलीये अम्रेकल्लज़ी सतर्तहू अ़न ख़ल्क़े-क व बेइज़्ने-क ग़ा-ब अ़न बरीयते-क व अम्र-क यन्तज़ेरो व अन्तल अ़लेमो ग़ैरुल मोअ़ल्लेमे बिल्वक़्तिलज़ी फ़ीहे सलाहो अम्रे वलीये-क फ़िलइज़्ने लहू बेइज़्हारे अम्रेही व कश्फ़े सितरेही फ़सब्बिरनी अ़ला ज़ाले-क हत्ता ला ओहिब्ब तअ़्जी-ल मा अख़्ख़र-त व ला तअ़्ख़ी-र मा अ़ज्जल-त व ला अक्शे-फ़ अ़म्मा सतर्तहू व अक्ह-स अ़म्मा कतम्तहू व ला ओनाज़ेअ़-क फ़ी तद्बीरे-क व ला अक़ू-लः ले-म व कै-फ़ व मा बालो वलीयिल अम्रे ला यज़्हरो व क़दिम्तलातिल अर्ज़ो मिनल जूरे? व ओफ़व्वे-ज़ उमूरी कुल्लहा इलै-क.

“ऐ ख़ुदा.....मुझे वलीये अम्र की एताअ़त पर जिसे तूने अपनी मख़्लूक़ात से पोशीदा रखा है साबित क़दम रख। वोह वली जिसकी ग़ैबत तेरे बन्दों से तेरी इजाज़त से है और जो तेरे हुक्म का मुन्तज़िर है। ऐ ख़ुदा तू सीखे बग़ैर उस ज़माने को जानता है जिसमें तेरे वली के ज़हूर की मस्लेहत है। तू जानता है कि कब उसके अम्र को ज़ाहिर करे और मख़्लूक़ात से उसके राज़ को पर्दा उठाने की इजाज़त दे। पस मुझे इस मसअले में सब्र अ़ता फ़रमा ताकि उस चीज़ को जिसे तूने बअ़्द में भेजने का फ़ैसला किया है उसे जल्दी भेजने और जिसे तूने जल्दी भेजने का फ़ैसला किया

है उसे बअ्द में भेजने को पसन्द न करूँ। और जिसे तूने पोशीदा रखा है उसे ज़ाहिर न करूँ और जिसे तूने छिपा रखा है उसके बारे में जुस्तुजू न करूँ और तेरे साथ तेरी तदबीरात में कश्मकश और तरदीद में मुब्तेला न रहूँ और येह न कहूँ कि क्यों, कैसे और किसलिए वलीये अम्र को ज़ाहिर नहीं करता जबकि ज़मीन ज़ुल्म और जौर से भर चुकी है? और अपने तमाम काम को तेरे सिपुर्द करता हूँ।"

(कमालुद्दीन, बाब ४५, ह़. ४३)

मुसीबतों और परेशानियों में जो चीज़ इन्सान के ईमान के लिए ख़तरनाक है यही सब्र का न होना और क़ज़ा और क़द्रे एलाही पर राज़ी न होना है।

मोअ्मिन को हर ह़ाल और तमाम शराएत में क़ज़ाए एलाही पर राज़ी रहना चाहिए और ख़ुदा ने जो उसके लिए पसन्द किया है उस पर नाराज़ न रहे। अलबत्ता कुछ बलाएँ और मुसीबतें मुम्किन हैं उसके गुनाहों के सबब हो जो उसने अन्जाम दिया है और मुम्किन है कि अल्लाह उसे इस दुनिया में सज़ा देना चाहता हो इसीलिए सख़्तियों में मुब्तेला किया है ऐसी ह़ालत में इन्सान को उन गुनाहों के सिलसिले में पशेमान रहना चाहिए जो बलाओं के नाज़िल होने का सबब होती हैं। और अपने बुरे काम को बुरा समझना चाहिए लेकिन ख़ुदा के अ़ज़ाब और दुनिया में ख़ुदा की सज़ा पर जो उसने नाज़िल किया है राज़ी रहना चाहिए और ख़ुदा के सामने तस्लीम का तक़ाज़ा है कि दिल से ख़ुदा की रज़ा पर राज़ी और ख़ुशनूद रहे।

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत मोअ्मिनीन के लिए मुसीबत है जिसकी अस्ल वजह हमें मअ्लूम नहीं है और बअ्ज़ ह़दीसों के मुताबिक़ ज़हूर के बअ्द मअ्लूम होगी लेकिन किताब के दूसरे ह़िस्से की शुरूआत में जो बात ज़िक्र की गई है वोह अ़दालते एलाही का नतीजा है और लोगों का

मअ्सियत करना अ़ज़ाबे एलाही का सबब हुआ है। जिसकी वजह से लोग मुस्तह़क़े अ़ज़ाब हो गए। पस जहाँ अपनी और दूसरों की नाक़द्री और नाशुक्री पर नाराज़ रहना चाहिए वहीं इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की तूलानी ग़ैबत पर जो हुक्मे परवरदिगार की बेना पर है राज़ी और ख़ुशनूद रहना चाहिए। ग़ैबत के तूलानी होने पर राज़ी रहना ह़क़ीक़त में अ़द्ले एलाही पर राज़ी रहना है और ईमान की शर्त येह है कि अल्लाह इन्सान के साथ जो रवा रखे उस पर क़ल्बन राज़ी रहे। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

اِعْلَمُوا أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ عَبْدٌ مِنْ عَبِيدِهِ حَتَّى يَرْضَى عَنِ اللّٰهِ فِيمَا صَنَعَ اللّٰهُ إِلَيْهِ وَصَنَعَ بِهِ عَلَى مَا أَحَبَّ وَكَرِهَ

ए़अ्लमू अन्नहू लन योअ्मे-न अ़ब्दुन मिन अ़बीदेही ह़त्ता यर्ज़ा अ़निल्लाहे फ़ीमा स-नअ़ल्लाहो इलैहे व स-न-अ़ बेही अ़ला मा अह़ब्ब व करे-ह.

"जान लो अल्लाह के बन्दों में से हरगिज़ कोई बन्दा ईमान नहीं लाया है उस वक़्त तक जब तक वोह उस चीज़ पर राज़ी न रहे जो अल्लाह ने उसके लिए क़रार दिया है चाहे उस चीज़ को इन्सान पसन्द करता हो या नापसन्द करता हो।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ७५, स. २१७)

मोअ्मिन वोह है जो ख़ुदा से राज़ी रहे चाहे इन्सान के लिए ख़ुदा की तरफ़ से मह़बूब शै अ़ता की गई हो या मकरूह चीज़ अ़ता की गई हो। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत मोअ्मिनीन के लिए बहुत नागवार है लेकिन तमाम तल्ख़ियों के बावजूद मोअ्मिन उसे बर्दाश्त करता है और ख़ुदा की मर्ज़ी पर कोई एअ़्तेराज़ नहीं करता है।

एक चीज़ जो ग़ैबत के ज़माने में मोअ्मिनीन के ईमान के लिए ख़तरा है वोह यही सब्र का हाथ से चला जाना। मायूसी और ग़ैबत के तूलानी होने पर नाराज़गी है इस ह़ालत की पहचान इन्सान में येह है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के सिलसिले में जल्दी करे जैसे हमारी ह़दीसों में 'इस्तेअ्जाल' के लफ़्ज़ से तअ्बीर किया गया है। इस अम्र के बहुत से मरातिब हैं। तस्लीम का जज़्बा इन्सान के अन्दर जितना कमज़ोर होगा उतना ही इस्तेअ्जाल शदीद होगा और इस्तेअ्जाल का अअ्ला मर्तबा इन्सान को वअ्दए एलाही के इन्कार के मरह़ले तक ले जा सकता है। इस्तेअ्जाल ज़हूर के सिलसिले में इन्सान के ईमान को बर्बाद कर देता है और इन्सान को हलाकत तक पहुँचा देता है। इमाम मोह़म्मद तक़ी अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

يَهْلِكُ فِيهَا الْمُسْتَعْجِلُونَ وَيَنْجُو فِيهَا الْمُسْلِمُونَ

यह्लेको फ़ीहल मुस्तअ्जेलू-न व यन्जू फ़ीहल मुसल्लेमू-न.

"ग़ैबते कुबरा के ज़माने में जल्दी करने वाले हलाक होंगे और अह्ले तस्लीम नजात पाएंगे।"

(कमालुद्दीन, बाब ३६, ह़. ३)

पस ग़ैबत के ज़माने में तस्लीम का एक मिस़्दाक़ येह है कि इन्सान ज़हूर में ताख़ीर की वजह से सब्र को अपने हाथ से जाने न दे और पूरी तरह़ से इस सिलसिले में ख़ुदा की रज़ायत पर राज़ी रहे।

तस्लीम और दुआए तअ्जीले ज़हूर

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए दुआ करना ग़ैबत के ज़माने में तस्लीम के ख़ेलाफ़ नहीं है और न इस्तेअ्जाल के मिस्दाक़ से है। इस मसअ़ले की वज़ाहत के लिए दो बुनियादी नुक़्ते की तरफ़ तवज्जोह करें:

(१) अल्लाह ने अपने बन्दे की दुआ को सबसे बेहतर एबादत और सबसे बेहतर वसीला अपनी क़ुर्बत के लिए क़रार दिया है। इमाम अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने इमाम हसन मुज्तबा अ़लैहिस्सलाम को नसीहत करते हुए इस तरह फ़रमाया है:

اِعْلَمْ أَنَّ الَّذِی بِیَدِهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَ الْأَرْضِ قَدْ أَذِنَ لَكَ فِی الدُّعَاءِ وَ تَكَفَّلَ لَكَ بِالْإِجَابَةِ وَ أَمَرَكَ أَنْ تَسْأَلَهُ لِیُعْطِیَكَ وَ تَسْتَرْحِمَهُ لِیَرْحَمَكَ وَ لَمْ یَجْعَلْ [بَیْنَهُ وَ بَیْنَكَ] بَیْنَكَ وَ بَیْنَهُ مَنْ یَحْجُبُهُ عَنْكَ

एअ्लम अन्नल्लज़ी बेयदेही ख़ज़ाएनुस्समावाते वल अर्ज़े क़द अज़े-न ल-क फ़िद्दुआए व तकफ़्फ़-ल ल-क बिलइजाबते व अ-म-र-क अन तस्अ-लहू लेयोअ्ते-य-क व तस्तरहे-महू ले यर-ह-म-क व लम यज़्अल बैन-क व बैनहू मन यहजोबोहू अ़न्क.

"जान लो जिसके हाथ में ज़मीन और आसमान के ख़ज़ाने हैं उसने तुम्हें दुआ करने की इजाज़त दी है और क़बूलियत की ख़ुद ज़मानत ली है और तुमसे कहा है कि तौबा की दरख़ास्त करो ताकि वोह तुम्हें बख़्श दे और उससे तलबे

रह़मत करो ताकि वोह तुम्हारे ऊपर रह़्म करे और अपने और तुम्हारे दरमियान कोई ह़ेजाब क़रार नहीं दिया है।"

(नहजुल बलाग़ा, नामा ३१)

दुआ का मअ़्ना बुलाना और सवाल का मअ़्ना दरख़ास्त करना है। मुम्किन है दुआ सवाल के साथ हो या न हो। कभी इन्सान ख़ुदा से कोई चीज़ ह़ासिल करने के लिए दुआ नहीं करता है और कभी किसी चीज़ की दरख़ास्त के लिए ख़ुदा से दुआ करता है। दोनों ह़ालतें ख़ुदा को पसन्द हैं और उन चीज़ों में है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए पसन्द किया है और इससे भी बढ़कर है बार बार ख़ुदा से सवाल करना और दुआ करना। इस सिलसिले में इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

إِنَ اللّٰهَ عَزَّ وَ جَلَّ كَرِهَ إِلْحَاحَ النَّاسِ بَعْضِهِمْ عَلى بَعْضٍ فِي الْمَسْأَلَةِ، وَأَحَبَّ ذٰلِكَ لِنَفْسِهِ

इन्नल्ला-ह अ़ज़्ज़ व जल्ल करे-ह इलह़ाह़न्नासे बअ़्ज़ेहिम अ़ला बअ़्ज़िन फ़िल मस्अलते व अह़ब्ब ज़ाले-क लेनफ़्सेही.

"ख़ुदावन्द आ़लम पसन्द नहीं करता कि लोग किसी चीज़ को तलब करने में एक दूसरे से आ़जिज़ी से सवाल करें लेकिन उस ह़ालत को अपने लिए पसन्द करता है।"

(उसूले काफ़ी, किताबुद्दुआ, बाबुल इल्ह़ाह़े फ़िद्दुआ, ह़. ४)

पस यही नहीं कि अल्लाह सवाल करने वाले और दुआ करने वाले बन्दे को दोस्त रखता है बल्कि बार बार माँगने वाले को भी दोस्त रखता है।

(२) अल्लाह ने बन्दों की दुआ को क़ज़ा-ओ-क़द्रे एलाही बदलने वाला क़रार दिया है और येह ख़ुदा का लुत्फ़-ओ-करम है बन्दों के सिलसिले में

कि बन्दे अपनी दुआओं के ज़रीए अल्लाह के इरादे को अपनी तक़दीर के सिलसिले में बदल सकते हैं। सातवें इमाम अलैहिस्सलाम से नक़्ल हुआ है:

عَلَيْكُمْ بِالدُّعَاءِ فَإِنَّ الدُّعَاءَ لِلَّهِ وَ الطَّلَبَ إِلَى اللَّهِ يَرُدُّ الْبَلَاءَ وَ قَدْ قُدِّرَ وَ قُضِيَ وَلَمْ يَبْقَ إِلَّا إِمْضَاؤُهُ

अलैकुम बिद्दुआए फ़-इन्नद्दुआ-अ लिल्लाहे वत्त-ल-ब एलल्लाहे यरुद्दुल बलाअ व क़द कुद्दे-र व कोज़े-य व लम यब्क़ इल्ला इम्ज़ाओहू.

"तुम्हारे लिए दुआ करना वाजिब और ज़रूरी है। इसलिए कि दुआ और ख़ुदा से दरख़ास्त करने से वोह बलाएँ दूर होती हैं जिनके वाक़ेअ् होने का हुक्म हो चुका होता है सिर्फ़ जारी करना बाक़ी रहता है।"

(उसूले काफ़ी, किताबुद्दुआ, बाबो अन्नद्दुआ यरुद्दुल बला वल क़ज़ा, ह. ८)

तक़दीर का मअ्ना फ़ैसला और अन्दाज़ा करना है एक चीज़ का वाक़ेअ् होना उसके मुक़द्दरात में शुमार किया जाता है। क़ज़ा भी ख़ुदा का हुक्म है। अल्लाह अपने कारिन्दों के ज़रीए यअ्नी फ़रिश्तों के ज़रीए अन्जाम देता है मोहर लगाने का मतलब उस चीज़ का वजूद में आ जाना है। क़ज़ा और क़द्रे एलाही का जब तक हत्मी फ़ैसला न हुआ हो उस वक़्त तक दुआओं के ज़रीए बदला जा सकता है। पस दुआ और दरख़ास्त अल्लाह तआला से ख़ुद एक एबादत और बन्दगी है। और दुआ करने वाले इन्सान की तक़दीर बदलने में भी असर अंदाज़ हो सकती है।

इन दो बातों से दुआ की अहम्मीयत और क़ज़ा-ओ-क़द्रे एलाही में उसके असरात को देखते हुए येह नतीजा ले सकते हैं कि ख़ुदा से दरख़ास्त और दुआ किसी तरह से भी क़ज़ा-ओ-क़द्रे एलाही पर राज़ी होने के ख़ेलाफ़

नहीं है। ख़ुद ख़ुदा ने दुआ का दरवाज़ा अपने बन्दों के लिए खोला है और अल्लाह पसन्द करता है कि लोग अपनी परेशानियों के दूर करने के लिए इस दरवाज़े से ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जेह हों। और बन्दों की दुआ को ख़ुदा ने बेहतरीन एबादत क़रार दिया है। इस बेना पर दुआ करना और ख़ुदा से अपनी मुश्केलात के सिलसिले में दरख़ास्त करना हक़ीक़त में अल्लाह के तशरीई फ़ैसले के सामने तस्लीम होना है। लेकिन बन्दे के तस्लीम होने की पहचान येह है कि चाहे उसकी हाजत को अल्लाह ने पूरा किया हो या जब वोह हाजत के पूरे होने का मुतमन्नी रहा हो उस वक़्त पूरी न हुई हो। हर हालत में जो अल्लाह ने उसके लिए चाहा है उस पर राज़ी और ख़ुश हो और दिल से क़ज़ा-ओ-क़द्रे एलाही पर एअ्तेराज़ न रखता हो।

इस बात की वज़ाहत से वाज़ेह हो गया कि तअ्जीले ज़हूर इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के लिए दुआ ज़मानए ग़ैबत के तूलानी होने में तस्लीम के ख़ेलाफ़ नहीं है। ग़ैबत सबसे बड़ी मुसीबत और गिरफ़्तारी है जिससे हमारा सामना है। ख़ुदावन्द आलम ने क़िस्मत में लिख दिया है कि लोग इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में मुसीबत में गिरफ़्तार हों ताकि येह मुसीबत उनके तमाम वजूद को दर्द में मुब्तेला कर दे और हर जगह और हर चीज़ से मायूस हो जाएँ और सोज़े दिल और परेशान हाल ख़ुदा की बारगाह में फ़रियाद करें और ख़ुदा से इमाम अलैहिस्सलाम के ज़हूर की तअ्जील के लिए दुआ करें। इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के फ़ेराक़ में दिल की गहराइयों से फ़रियाद करना एहसासे दर्द के साथ साथ ख़ुदा की एबादत और बन्दगी है और येह इमाम अलैहिस्सलाम के ज़हूर के जल्द होने में भी असर अंदाज़ है। इमाम मूसा इब्ने जअ्फ़र अलैहेस्सलाम दुआ के ज़रीए बलाओं के दूर होने और कम होने के सिलसिले में फ़रमाते हैं:

مَا مِنْ بَلَاءٍ يَنْزِلُ عَلَى عَبْدٍ مُؤْمِنٍ فَيُلْهِمُهُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ الدُّعَاءَ، إِلَّا كَانَ كَشْفُ ذٰلِكَ الْبَلَاءِ وَشِيكاً وَمَا مِنْ بَلَاءٍ يَنْزِلُ عَلَى عَبْدٍ مُؤْمِنٍ فَيُمْسِكُ عَنِ الدُّعَاءِ إِلَّا كَانَ ذٰلِكَ الْبَلَاءُ طَوِيلًا فَإِذَا نَزَلَ الْبَلَاءُ فَعَلَيْكُمْ بِالدُّعَاءِ وَالتَّضَرُّعِ إِلَى اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ

मा मिन बलाइन यन्ज़ेलो अ़ला अ़ब्दिन मोअ्मेनिन फ़युल्हेमोहुल्लाहो अ़ज़्ज़ व जल्लदुआ-अ इल्ला का-न कश्फ़ो ज़ालेकल बलाए व शीकन व मा मिन बलाइन यन्ज़ेलो अ़ला अ़ब्दिन मोअ्मेनिन फ़युम्सेको अ़निद्दुआए इल्ला का-न ज़ालेकल बलाओ तवीला. फ़ एज़ा न-ज़-लल्बलाओ फ़अ़लैकुम बिद्दुआए वत्तज़र्रोए एलल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल्ल.

"जब बन्दए मोअ्मिन पर कोई बला नाज़िल होती है तो ख़ुदा उसको दुआ की तौफ़ीक़ देता है। इस सूरत में बला जल्द दूर हो जाती है और अगर बन्दए मोअ्मिन पर बला नाज़िल हो और दुआ करने की तौफ़ीक़ नसीब न हो तो येह बला तूलानी होगी। लेहाज़ा जब भी बलाओं में गिरफ़्तार हो दुआ करो और ख़ुदा की बारगाह में गिरिया-ओ-ज़ारी करो।"

(उसूले काफ़ी, किताबुद्दुआ, बाबो इल्हामिद्दुआ, ह़. २)

ह़दीस में लफ़्ज़े दुआ के इल्हाम की निस्बत ख़ुदा की तरफ़ दी गई है जिससे येह ह़क़ीक़त वाज़ेह हो जाती है कि बला के नाज़िल होते वक़्त अगर इन्सान दुआ करता है तो इन्सान को समझना चाहिए कि वोह लुत्फ़े परवरदिगार की बेना पर है। हर आदमी मुसीबत के वक़्त ख़ुदा से दुआ

करने की तौफ़ीक़ नहीं पाता है। इस बेना पर बला और गिरफ़्तारी के वक़्त दुआ करना इन्सान के लिए रहमत और फ़ज़्ले एलाही की पहचान है जो बहुत अच्छी और पसन्दीदा चीज़ है। इसके अ़लावा अगर इन्सान को दुआ करने की तौफ़ीक़ हो तो उसे जान लेना चाहिए कि इन्शाअल्लाह उसकी परेशानियों का ख़ात्मा जल्द होने वाला है। ख़ुदावन्द आ़लम ने दुआ़ के इल्हाम के ज़रीए़ चाहा है कि उसकी परेशानियों को इसी वसीले से दूर कर दे इस शर्त के साथ कि इन्सान उसकी अहम्मीयत को समझे और ख़ुदा के इस वसीले से अच्छी तरह इस्तेफ़ादा करे।

इसी से समझा जा सकता है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के तअ्जील के लिए दुआ़ इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर और ज़मानए ज़हूर के क़रीब करने में मुअस्सर है जैसा कि इसी तरह के ज़हूर की तअ्जील की मिसाल बनी इस्राईल की क़ौम के लिए पेश आई। इस ह़दीस के मुताबिक़ जो इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से नक़्ल हुई है कि अल्लाह ने इब्राहीम के फ़र्ज़न्दों के लिए इब्राहीम की बीवी सारा से (बनी इस्राईल) के लिए इस तरह मुक़द्दर कर दिया था कि चार सौ साल बअ्द मूसा और हारून के वसीले से फ़िरऔन के ज़ुल्म-ओ-सितम से नजात देगा लेकिन बनी इस्राईल फ़रियाद, दुआ़ और गिरिया के ज़रीए़ ख़ुदा की बारगाह में कामियाब हुए कि ज़हूर के ज़माने को एक सौ सत्तर साल पहले ले आए। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम के अल्फ़ाज़ इस तरह हैं:

فَلَمَّا طَالَ عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ الْعَذَابُ ضَجُّوا وَ بَكَوْا إِلَى اللَّهِ أَرْبَعِينَ صَبَاحاً فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَى مُوسَى وَ هَارُونَ يُخَلِّصُهُمْ مِنْ فِرْعَوْنَ فَحَطَّ عَنْهُمْ سَبْعِينَ وَمِائَةَ سَنَة

फ़लम्मा ता-ल अ़ला बनी इस्राईलल्अ़ज़ाबो, ज़ज्जू व बकौ एलल्लाहे अर्बईना सबाहन फ़औह़ल्लाहो एला मूसा व

हारू-न योख़ल्लेसोहुम मिन फ़िरऔ-न, फ़हृत-त अ़न्हुम सब्ईना व मे-अ-त सनतिन.

"पस जब बनी इस्राईल पर अ़ज़ाब का ज़माना तवील हो गया तो चालीस दिन ख़ुदा की बारगाह में दुआ़ और गिरिया किया यहाँ तक कि ख़ुदावन्द आ़लम ने मूसा और हारून की तरफ़ वह्ी की कि उन लोगों को फ़िरऔ़न के अ़ज़ाब से नजात दो। पस इस वजह से अल्लाह ने एक सौ सत्तर साल उनके अ़ज़ाब में कम कर दिया।"

फिर इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

هَكَذَا أَنْتُمْ لَوْ فَعَلْتُمْ لَفَرَّجَ اللّٰهُ عَنَّا فَأَمَّا إِذْ لَمْ تَكُونُوا فَإِنَّ الْأَمْرَ يَنْتَهِي إِلَى مُنْتَهَاهُ

हा-कज़ा अन्तुम लौ फ़अ़ल्तुम ल-फ़र्जल्लाहो अ़न्ना फ़ अम्मा इज़ लम तकूनू फ़इन्नलअम्-र यन्तही एला मुन्तहाहो.

"तुम्हारी ह़ालत भी उसी तरह़ है अगर तुम भी ऐसा करो (यअ़्नी दुआ़-ओ-गिरिया-ओ-ज़ारी करो) तो अल्लाह हमारे ज़हूर को जल्दी कर देगा और अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो ज़हूर का ज़माना अपने आख़िरी ह़द तक पहुँच जाएगा।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ५२, स. १३१)

मोअ्मिन के लिए अ़जीब-ओ-ग़रीब तम्बीह है कि ग़ैबत के ज़माने में अपने इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए ख़ुदा से दरख़ास्त करें। और उस रास्ते को अपनाएँ जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने उन्हें दिखाया है। उसे

अच्छी तरह पहचानें और उसको सन्जीदगी से लें और उस सिलसिले में एह्तेमाम करें।

इस ह़दीस शरीफ़ में जो अहम नुक्ता पोशीदा है और ज़हूर के लिए दुआ करने वालों को जो दर्स इस ह़दीस में दिया गया है वोह लफ़्ज़ (अन्ना) है। यअ्नी शीओं की दुआ और गिरिया-ओ-ज़ारी अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के ज़हूर को नज़्दीक कर सकती है।

और जो ज़हूर के तअ्ज़ील होने की दुआ कर रहा है उसे चाहिए कि हर चीज़ से ज़्यादा और हर चीज़ से पहले अपने मह़बूब आक़ा के ज़हूर के लिए ख़ुदा से दरख़ास्त करे। दुआ करने का फ़ाएदा और इस तरह़ की दुआओं की क़ीमत दूसरी फ़स्ल जो दुआ से मरबूत है उसमें इन्शाअल्लाह मुख़्तसरन बह़्स करेंगे।

३. मोहब्बत

तस्लीम, मोहब्बत की शर्त और मोहब्बत ईमान का लाज़ेमा है

इन्सान के अन्दर तस्लीम का एक असर अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मोहब्बत का पैदा होना और उसको दिल में तक़वीयत करना है। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की मअ़्रेफ़त रखने वालों की ख़ास कर ज़मानए ग़ैबत में एक पहचान इमाम अ़लैहिस्सलाम से मोहब्बत है। मोहब्बत की अहम्मीयत के लिए यही काफ़ी है कि उसे दीन की बुनियाद क़रार दिया गया है। इमामे सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

لِكُلِّ شَيْءٍ أَسَاسٌ، وَأَسَاسُ الْإِسْلَامِ حُبُّنَا أَهْلَ الْبَيْتِ

लेकुल्ले शैइन असासुन व असासुल इस्लामे हुब्बोना अह्लल्बैते.

"हर चीज़ की एक बुनियाद है और इस्लाम की बुनियाद, हम अह्लेबैत की मोहब्बत है।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ़्र, बाबो निस्बतिल इस्लाम, ह. २)

इसी वजह से हमारी रवायतों और हदीसों में अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मोहब्बत को बेहतरीन एबादत बताया गया है जैसा कि इमामे सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

إِنَّ فَوْقَ كُلِّ عِبَادَةٍ عِبَادَةٌ وَحُبُّنَا أَهْلَ الْبَيْتِ أَفْضَلُ عِبَادَةٍ

इन्-न फ़ौ-क़ कुल्ले ए़बा-दतिन ए़बा-दतुन व हुब्बोना अह्लल्बैते अफ़्ज़लो ए़बा-दतिन.

"हर ए़बादत से बेहतर ए़बादत है और हम अह्लेबैत की मोहब्बत सबसे बेहतर ए़बादत है।"

(बेहारुल अनवार, जि. २७, स. ९१)

और पैग़म्बर सल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से एक हदीस में जिसमें तमाम इमामों को पहचनवाया गया है ख़ास कर इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम को क़बूल करने के सिलसिले में इस तरह आया है:

مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَلْقَى اللَّهَ وَ قَدْ كَمُلَ إِيمَانُهُ وَ حَسُنَ إِسْلَامُهُ فَلْيَتَوَلَّ الْحُجَّةَ صَاحِبَ الزَّمَانِ الْمُنْتَظَرَ

मन अह्ब्ब अन यल्क़ल्ला-ह व क़द क-मो-ल ईमानोहू व ह-सो-न इस्लामोहू, फ़ल्य-तवल्लल्हुज्ज-त साहेबज़्ज़मानिल्मुन्तज़-र.

"जो शख़्स चाहता है कि अल्लाह से मुलाक़ात करे इस हालत में कि उसका इस्लाम-ओ-ईमान नेक हो पस उसे हज़रत हुज्जत साहेबुज़्ज़मान की वेलायत को क़बूल कर लेना चाहिए।"

(बेहारुल अनवार, जि. ३६, स. २९६)

और हदीस के आख़िर में इस तरह आया है:

فَهَؤُلَاءِ مَصَابِيحُ الدُّجَى وَ أَئِمَّةُ الْهُدَى وَ أَعْلَامُ التُّقَى مَنْ أَحَبَّهُمْ وَ تَوَلَّاهُمْ كُنْتُ ضَامِناً لَهُ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى بِالْجَنَّةِ

फ़ हाउलाए मसाबीहुद्दुजा व अइम्मतुल हुदा व अअ्लामुत्तोक़ा मन अह्ब्बहुम व तवल्लाहुम, कुन्तो ज़ामेनन लहू अलल्लाहे तआला बिल्जन्नते.

"पस येह (अइम्मा) तारीकी में रोशनी के चिराग़ और हेदायत के इमाम और तक़्वा की निशानी हैं जो उनको दुरुस्त रखे और उनकी वेलायत को क़बूल करे, मैं क़यामत के दिन उसकी जन्नत का ज़ामिन होऊँगा।"

(बेहारुल अनवार, जि. ३६, स. २९६)

ईमान वेलायते अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम की मोहब्बत से शुरुअ् होती है और वेलायत-ओ-मोहब्बते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम पर कमाल तक पहुँचती है इस बेना पर इमामे ग़ाएब अलैहिस्सलाम की मोहब्बत के बग़ैर ईमाने कामिल हासिल नहीं किया जा सकता है।

लेकिन येह मोहब्बत अल्लाह किसी को आसानी से अता नहीं करता है जैसा कि ख़ुदा की मअ्रेफ़त, रसूल और इमाम की मअ्रेफ़त ख़ुदावन्द मुतआल की तरफ़ से लुत्फ़ और इनायत है अल्लाह जिसे चाहता है अता करता है। मोहब्बते इमाम भी लुत्फ़ है अल्लाह उस शख़्स के लिए क़रार देता है जो उसकी ख़ास एनायत का मुस्तहक़ हो। इस लुत्फ़ के शामिल होने के लिए तन्हा रास्ता अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के सामने तस्लीम होना है। इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम अबू ख़ालिद से फ़रमाते हैं:

وَ اللّٰهِ يَا أَبَا خَالِدٍ، لَا يُحِبُّنَا عَبْدٌ وَ يَتَوَلَّانَا حَتّٰى يُطَهِّرَ اللّٰهُ قَلْبَهُ، وَ لَا يُطَهِّرُ اللّٰهُ قَلْبَ عَبْدٍ حَتّٰى يُسَلِّمَ لَنَا، وَ يَكُونَ سِلْماً لَنَا، فَإِذَا كَانَ سِلْماً لَنَا سَلَّمَهُ اللّٰهُ مِنْ شَدِيدِ الْحِسَابِ، وَ آمَنَهُ مِنْ فَزَعِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ الْأَكْبَرِ

वल्लाहे या अबा ख़ालेदिन ला योहिब्बोना अ़ब्दुन व य-तवल्लाना ह़त्ता योतह्हेरल्लाहो क़ल्बहू, व ला योतह्हेरुल्लाहो क़ल्-ब अ़ब्दिन ह़त्ता योसल्ले-म लना व यकू-न सिल्मन लना फ़एज़ा का-न सिल्मन लना सल्लमहुल्लाहो मिन शदीदिलह़िसाबे व आम-नहू मिन फ़-ज़ए़ यौमिल क़ेया-मतिल अकबर.

"ख़ुदा की क़सम - ऐ अबू ख़ालिद, कोई बन्दा उस वक़्त तक हमको दोस्त नहीं रखेगा जब तक अल्लाह उसके दिल को पाक न कर दे। इसी तरह़ हमारी वेलायत को उस वक़्त तक क़बूल नहीं करेगा जब तक उसका दिल पाक न हो और जब तक हमारे सामने तस्लीम न होगा और जब तक हमारी तमाम ह़ालत पर 'सिल्म' न रखेगा अल्लाह उसके दिल को पाक नहीं करेगा। पस अगर वोह हमारे सामने तस्लीम था अल्लाह उसे सख़्त ह़िसाब से मह़फ़ूज़ रखेगा। डर और ख़तरनाक वह़शत से क़यामत के दिन मह़फ़ूज़ रखेगा।"

(उसूले काफ़ी, किताबुलहुज्जा, बाबो अन्नल अइम्म-त नूरुल्लाहे, ह़. १)

अगर दिल पाक न हो तो अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मोह़ब्बत और वेलायत इन्सान के दिल में जागुज़ीं नहीं होगी। और दिल की पाकीज़गी इन्सान के लिए सिर्फ़ अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के सामने तस्लीम से वुजूद में आती है। पस जो शख़्स इमाम अ़लैहिस्सलाम की मोह़ब्बत का तलबगार है उसे चाहिए कि जितना मुम्किन हो तस्लीम की ह़ालत को अपने अन्दर तक़वियत दे और जितना तस्लीम का दर्जा बलन्द होगा उतना उसका दिल तय्यब-ओ-ताहिर होगा नतीजे में इमाम अ़लैहिस्सलाम की मोह़ब्बत में एज़ाफ़ा होगा।

तस्लीम ह़ासिल करने का रास्ता येह है कि इन्सान कोशिश करे कि जो अ़मल अन्जाम देता है वोह अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम कि मर्ज़ी के मुताबिक़ हो। और उनके मुक़ाबिल कोई एरादा-ओ-क़स़्द न करे बल्कि हमेशा उनकी ख़ाहिशात और मर्ज़ी (जो ज़मानए ग़ैबत में अह़ादीस की तरफ़ रुजूअ़् करने से ह़ासिल होगी) को अपनी ख़ाहिशात और दूसरों की तर्जीह़ात पर फ़ौक़ियत दे। और यही सिफ़त इन्सान को ईमान की बलन्दी पर पहुँचा देगी।

एक आदमी ने इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से कहा:

"आपसे कितना सलमाने फ़ारसी का ज़िक्र सुनता हूँ।"

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

لَا تَقُلْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيَّ وَلَكِنْ قُلْ سَلْمَانَ الْمُحَمَّدِيَّ أَتَدْرِي مَا كَثْرَةُ ذِكْرِي لَهُ

ला तकुल सलमानल्फ़ार्सी-य वलाकिन कुल सलमानल्मोह़म्मदी-य. अतद्री मा क-स-रतो ज़िक्री लहू?

"सलमाने फ़ारसी न कहो बल्कि सलमाने मोह़म्मदी कहो। क्या तुम जानते हो कि मैं क्यों उन्हें इतना ज़्यादा याद करता हूँ?"

रावी ने कहा:

"नहीं मुझे नहीं पता।"

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

لِثَلَاثِ خِلَالٍ إِحْدَاهَا إِيثَارُهُ هَوَى أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ ع عَلَى هَوَى نَفْسِهِ...

लेसलासे ख़ेसालिनः एह्दाहा ईसारोहू हवा अमीरिल मोअ्मेनी-न अ़लैहिस्सलाम अ़ला हवा नफ़्सेही.....

"तीन ख़ुसूसियात की वजह से: पहली येह कि सलमान अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम की ख़ाहिशात को अपनी ख़ाहिशात पर मुक़द्दम रखते थे।"

(बेहारुल अनवार, जि. २२, स. ३२७)

पस अगर सलमान इस मक़ाम पर पहुँच गए कि इमाम सज्जाद अ़लैहिस्सलाम ने उनके लिए 'मिन्ना अह्लल्बैत' का लफ़्ज़ इस्तेअ्माल किया है। उनकी एक ख़ास सिफ़त यही तस्लीम अपने ज़माने के इमाम अ़लैहिस्सलाम के लिए थी। यहाँ तक कि इमाम अ़ली अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ से हुक्म का आना ज़रूरी नहीं था बल्कि जैसे ही इमाम अ़लैहिस्सलाम की मर्ज़ी और ख़ाहिश पता चलती थी अपनी मर्ज़ी और ख़ाहिश पर मुक़द्दम करते थे। इन्तेज़ार नहीं करते थे कि इमाम अ़लैहिस्सलाम हुक्म दें तो अन्जाम दें और येह ह़ालत इमाम अ़लैहिस्सलाम के हुक्म की इताअ़त से बढ़ कर है। क्योंकि हवा का मतलब ख़ाहिशात होता है और ख़ाहिशात के लिए मुम्किन है कि उनकी ज़बान पर न आई हो और हुक्म भी उसके मुताबिक़ ज़ारी न किया हो।

पस 'मिन्ना अह्लल्बैत' के मक़ाम तक पहुँचने की एक शर्त अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के सामने तस्लीम होना है उस ह़द तक जिस ह़द पर सलमान तस्लीम थे। अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम की सिफ़ारिश कुमैल के सिलसिले में गुज़र चुकी है जिसमें इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: 'ला तअ्ख़ुज़ इल्ला अ़न्ना, तकुन मिन्ना.'

तस्लीम का मसअला आज के दौर में यअ्नी ग़ैबत के ज़माने में आ़म तौर से अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की अह्दीस के सामने तस्लीम होने से ह्रासिल होगा। तमाम मसाएल में चाहे वोह एअ्तेक़ादी हो, अख़्लाक़ी या अ़मली हो उन अह्दीस की तरफ़ रुजूअ् करना होगा। इस ज़माने में आ़म तौर से इमाम अ़लैहिस्सलाम तक रसाई मुम्किन नहीं है इसलिए ज़्यादा एह्तेयात करना चाहिए। फ़िक्र और अ़मली नज़रियात के सिलसिले में ह्दीस को कम नहीं जानना चाहिए जैसा कि बह्से तस्लीम में गुज़र चुका है।

शिद्दते मोह्ब्बत में इमाम अ़लैहिस्सलाम के लिए गिरिया करना

मोह्ब्बत का तअ़ल्लुक़ दिल से है। इसकी शिद्दत की वजह मोह्ब्बि के नज़्दीक मह्बूब की मअ्रेफ़त और वेलायत है। मअ्रेफ़त जितनी ज़्यादा होगी मोह्ब्बत भी उसी ह्सिाब से शदीद होगी। शदीद मोह्ब्बत की पहचान येह है कि मह्बूब को याद करे। देखने का शौक़, उसके फ़ेराक़ में तड़पना या उसकी परेशानियों में मोह्ब्बि के दिल का लरज़ना और आँखों से आँसू का जारी होना है।

ख़ुदावन्द आ़लम ने अपने फ़ज़्ल-ओ-करम से इसी रोने को दिल के पाक होने का ज़रीआ़ और गुनाहों की आलूदगियों से मोह्ब्बि के दिल को पाकीज़ा होने का वसीला क़रार दिया है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़ुज़ैल इब्ने यसार से फ़रमाते हैं:

يَا فُضَيْلُ مَنْ ذَكَرَنَا أَوْ ذُكِرْنَا عِنْدَهُ فَخَرَجَ مِنْ عَيْنِهِ مِثْلُ جَنَاحِ الذُّبَابِ غَفَرَ اللَّهُ لَهُ ذُنُوبَهُ وَلَوْ كَانَتْ أَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ

या फ़ुज़ैल, मन ज़-क-रना, औ ज़ोकेर्ना इन्दहू, फ़-ख़-र-ज मिन ऐनेही मिस्लो जनाहिज़्ज़ुबाबे, ग़-फ़रल्लाहो लहू ज़ूनू-बहू व लौ कानत अक्स -र मिन ज़-बदिल बह्रे.

"ऐ फ़ुज़ैल जो हमें याद करे, या जिसके पास हम याद किये जाएँ और उसकी आँखों से मक्खी के पर के बराबर आँसू निकल आएँ। अल्लाह उसके गुनाहों को मआ़फ़ कर देगा। चाहे वोह समन्दर के झाग से ज़्यादा हों।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ४४, स. २८२)

इतना सवाब इमाम अ़लैहिस्सलाम की अ़ज़मत और उनकी मोह़ब्बत की वजह से है। इमाम अ़लैहिस्सलाम के चाहने वाले की लेयाक़त से इसका कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। इसलिए ज़रूरी नहीं है कि रोने वाला इतने अज्र का मुस्तह़क़ हो बल्कि येह अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के चाहने वालों के लिए अल्लाह की तरफ़ से एक तोह़फ़ा है।

सोज़े फ़ेराक़ और ज़मानए ग़ैबत में हिज्र का दर्द, ह़ज़रत की परेशानियों और रंज जिसे इमाम अ़लैहिस्सलाम अपने वजूद पर उठाए हुए हैं यही वोह सबब हैं जिससे ह़ज़रत के चाहने वालों की आँखें अश्कबार हैं इसके पहले वोह ह़दीस गुज़र चुकी है जिसमें इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

أَمَا وَ اللّٰهِ لَيَغِيبَنَّ إِمَامُكُمْ سِنِيناً مِنْ دَهْرِكُمْ وَ لَتُمَحَّصُنَّ حَتَّى يُقَالَ مَاتَ أَوْ هَلَكَ بِأَيِّ وَادٍ سَلَكَ وَ لَتَدْمَعَنَّ عَلَيْهِ عُيُونُ الْمُؤْمِنِينَ

अमा वल्लाहे ल-यग़ीबन्-न इमामोकुम सेनीनन मिन दह्रेकुम.....व लतद्मअ़न्-न अ़लैहे अ़ोयूनुल मोअ्मेनी-न.

"ख़ुदा की क़सम तुम्हारा इमाम तूलानी मुद्दत तक ग़ैबत के पर्दे में रहेगा.....और मोअ्मिनीन की आँखें उनके फ़ेराक़ में अश्कबार होंगी।"

(कमालुद्दीन, बाब ३३, ह़. ३५)

येह सोज़े दिल, अश्कबार आँखें, इमाम अ़लैहिस्सलाम के फ़ेराक़ में है। येह फ़रियाद किस क़द्र अहम्मीयत रखती है कि इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने उनके लिए दुआ की है। मुआविया इब्ने वहब कहते हैं कि मैंने ह़ज़रत सादिक़ अ़लैहिस्सलाम को सज्दे की ह़ालत में इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के ज़ाएरों के लिए इस तरह़ दुआ करते देखा:

اِرْحَمْ تِلْكَ الْأَعْيُنَ الَّتِي جَرَتْ دُمُوعُهَا رَحْمَةً لَنَا وَ ارْحَمْ تِلْكَ الْقُلُوبَ الَّتِي جَزِعَتْ وَ احْتَرَقَتْ لَنَا وَ ارْحَمْ تِلْكَ الصَّرْخَةَ الَّتِي كَانَتْ لَنَا

इर्ह़म तिल्कल्अअ़्योनल्लती जरत दुमूअ़ोहा रह़्मतन लना। वर्ह़म तिल्कल्कुलूबल्लती, ज-ज़अ़त वह़त-रक़त लना। वर्ह़मिस़्सर्ख़तल्लती कानत लना.

"ऐ ख़ुदा उन आँखो पर रह़्म फ़रमा जो हमारे ऊपर रह़्म की बेना पर अश्कबार होती हैं.....ऐ ख़ुदा उन दिलों पर रह़्म फ़रमा जो हमारे लिए बेताब होते और जलते हैं। और उस आह और फ़रियाद पर अपनी रह़्मत नाज़िल फ़रमा जो हमारे लिए होती है।"

(कामेलुज़्ज़ेयारात, स. ११७)

ज़मानए ग़ैबत में इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के लिए रोना, दिल का जलना और तड़पने का येह इन्आम है। इससे बढ़कर इन्आम और ख़ुशख़बरी क्या हो सकती है? मुसलमानों की चार बड़ी ईद, ईदे फ़ित्र, अज़्हा, ग़दीर और जुम्आ में दुआए नुदबा के पढ़ने की ताकीद बग़ैर वजह के नहीं है। येह चार दिन बेहतरीन अय्याम हैं जिसमें अल्लाह तआला मोअ्मिन पर रह्मत नाज़िल करता है और येह सब के सब इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के मुक़द्दस वजूद से तअल्लुक़ रखते हैं। तीन दिन; जुम्आ,फ़ित्र, क़ुर्बान - नमाज़ और ख़ुत्बए ईद इमाम अलैहिस्सलाम के ज़रीए क़ाएम होगा और ग़दीर का दिन भी अल्लाह की तरफ़ से इमामे मन्सूब से तज्दीद बैअत का दिन है और जब इन अय्याम का मालिक पर्दए ग़ैब में है तो मोअ्मिन को इन अय्याम में ग़िरिया करना चाहिए और अपने महबूब की याद और फ़ेराक़ में आह-ओ-ज़ारी करना चाहिए।

اَیْنَ الطَّالِبُ بِدَمِ الْمَقْتُولِ بِکَرْبَلاَءَ

ऐनत्तालेबो बेदमिल मक़्तूले बे-करबला?

"करबला के शहीदों के ख़ून का बदला लेने वाला कहाँ हैं?"

اَیْنَ الْمُضْطَرُّ الَّذِی یُجَابُ اِذَا دَعَا

ऐनल मुज़्तर्रुल्लज़ी युजाबो एज़ा दआ?

"वोह मुज़्तर कहाँ है जिसे (ख़ुदा) बुलाता है तो जवाब देता है?"

इसी दुआ (नुदबा) में हज़रत के चाहने वाले अपने आक़ा से इस तरह दर्दे दिल करते हैं:

يَا ابْنَ طه وَ الْمُحْكَمَاتِ يَا ابْنَ يس وَ الذَّارِيَاتِ يَا ابْنَ الطُّورِ وَ الْعَادِيَاتِ.....لَيْتَ شِعْرِى أَيْنَ اسْتَقَرَّتْ بِكَ النَّوَى.....عَزِيزٌ عَلَيَّ أَنْ أَرَى الْخَلْقَ وَ لاَ تُرَى وَ لاَ أَسْمَعَ لَكَ حَسِيساً وَ لاَ نَجْوَى .....عَزِيزٌ عَلَيَّ أَنْ أَبْكِيَكَ وَ يَخْذُلَكَ الْوَرَى

यब्-न ताहा वल मोह्कमाते, यब्-न यासी-न वज़्ज़ारेयाते, यब्नत्तूरे वल आदेयाते.....लै-त शेअ्री ऐनस्तक़र्रत बेकन्नवा.....अज़ीज़ुन अलै-य अन अरलख़ल्क़ व ला तोरा व ला अस्म-अ ल-क ह्सीसन व ला नज्वा....अज़ीज़ुन अलै-य अन अब्के-य-क व यख़्ज़ो लकल वरा.....

"ऐ ताहा और मोह्कमात के बेटे, ऐ यासीन और ज़ारियात के बेटे, ऐ तूर और आदियात के बेटे.....ऐ काश मुझे पता होता कि आप कहाँ क़याम करते हैं?.....मेरे लिए दुश्वार है कि मैं (सारी मख़्लूक़) को देखूँ और आप दिखाई न दें और आपकी धीमी आवाज़ और राज़-ओ-नेयाज़ को न सुनूँ.....मेरे लिए दुश्वार है कि मैं आप पर गिरिया करूँ जबकि लोगों ने आप को छोड़ दिया हो....." (यहाँ तक कि अपने हमदर्द और फ़रियाद करने वाले को तलाश करते हैं और कहते हैं).....

هَلْ مِنْ مُعِينٍ فَأُطِيلَ مَعَهُ الْعَوِيلَ وَ الْبُكَاءَ هَلْ مِنْ جَزُوعٍ فَأُسَاعِدَ جَزَعَهُ إِذَا خَلاَ هَلْ قَذِيَتْ عَيْنٌ فَسَاعَدَتْهَا عَيْنِى عَلَى الْقَذَى

हल मिन मोईनिन फ़ओती-ल म-अ़हुल अ़वी-ल वल बुका-अ? हल मिन जज़ूइन फ़ओसाएदा ज-ज़अ़हू एज़ा ख़ला? हल क़ज़ेयत ऐनुन फ़साअ़दत्हा ऐनी अ़लल क़ज़ा?!

"क्या कोई मददगार है जिसके साथ मैं गिरिया और फ़रियाद करूँ? क्या कोई तड़पने वाला है जिसको तन्हाई में तड़पने पर मदद करूँ? क्या कोई आँख है जो बहुत ज़्यादा गिरिया की वज़ह से ग़मगीन और बीमार हो गई हो ताकि मेरी आँख उससे हमदर्दी करे?"

इमाम अ़लैहिस्सलाम के चाहने वालों की येह दिल सोज़ फ़रियाद ईद के दिन उनकी ज़बान पर आती है और इमामे ग़ाएब अ़लैहिस्सलाम से शिद्दते मोहब्बत को बयान करती है।

इमाम अ़लैहिस्सलाम के दोस्तों से दोस्ती और उनके दुश्मनों से दुश्मनी

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से मोहब्बत की एक पहचान येह है कि उनके दोस्तों से दोस्ती रखे और उनके दुश्मनों से दुश्मनी रखे। ग़ैबत के ज़माने में ख़ास कर इस बात की ताकीद की गई है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम फ़रमाते हैं:

طُوبَى لِمَنْ أَدْرَكَ قَائِمَ أَهْلِ بَيْتِي وَ هُوَ يَأْتَمُّ بِهِ فِي غَيْبَتِهِ قَبْلَ قِيَامِهِ وَ يَتَوَلَّى أَوْلِيَاءَهُ وَ يُعَادِي أَعْدَاءَهُ ذَلِكَ مِنْ رُفَقَائِي وَ ذَوِي مَوَدَّتِي وَ أَكْرَمُ أُمَّتِي عَلَيَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

तूबा लेमन अद्र-क क़ाए-म अह्लेबैती व हो-व यअ्तम्मो बेही फ़ी ग़ैबतेही क़ब्-ल क़ेयामेही व य-तवल्ला

औवलियाअहू व योआदी अअ्दाअहू ज़ाले-क मिन रो-फ़क़ाई व ज़वी मवद्दती व अकरमे उम्मती अलै-य यौमल क़ेयामते.

"मुबारक हो उस शख़्स को जो मेरे अह्लेबैत के क़ाएम को दर्क करे। ज़हूर से पहले ग़ैबत के ज़माने में उनकी इमामत का मोअ्तक़िद हो और उनके दोस्तों से दोस्ती और उनके दुश्मनों से दुश्मनी रखता हो। ऐसा शख़्स मेरे दोस्तों में से है और क़यामत के दिन मेरी उम्मत का मेरे नज़्दीक सबसे इज़्ज़तदार शख़्स होगा।"

(कमालुद्दीन, बाब २५, ह. २)

आपने मुलाह़ेज़ा किया कि इमाम अ़लैहिस्सलाम के दोस्तों से दोस्ती और दुश्मनों से दुश्मनी इमाम अ़लैहिस्सलाम की वेलायत और इमामत को मानने से जुदा नहीं है बल्कि एक दूसरे के साथ साथ है। दूसरी बशारत एक और ह़दीस में इमाम काज़िम अ़लैहिस्सलाम से इस तरह़ नक़्ल हुई है:

طُوبَى لِشِيعَتِنَا الْمُتَمَسِّكِينَ بِحَبْلِنَا فِي غَيْبَةِ قَائِمِنَا الثَّابِتِينَ عَلَى مُوَالاتِنَا وَ الْبَرَاءَةِ مِنْ أَعْدَائِنَا أُولَئِكَ مِنَّا وَ نَحْنُ مِنْهُمْ قَدْ رَضُوا بِنَا أَئِمَّةً وَ رَضِينَا بِهِمْ شِيعَةً فَطُوبَى لَهُمْ ثُمَّ طُوبَى لَهُمْ وَهُمْ وَاللَّهِ مَعَنَا فِي دَرَجَاتِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ

तूबा लेशीअ़तेनल मु-तमस्सेकी-न बेह़ब्लेना फ़ी ग़ैबते क़ाएमेनस्साबेती-न अ़ला मोवालातेना वल बराअते मिन अअ्दाएना ऊलाएका मिन्ना व नह़्नो मिनहुम क़द रज़ू बेना अइम्मतन व रज़ीना बेहिम शीअ़तन फ़- तूबा लहुम सुम्-म

तूबा लहुम, हुम वल्लाहे म-अ़ना फ़ी द-रजातेना यौमल क़ेयामते.

"हमारे शीअ़ों को मुबारक हो जो ग़ैबत के ज़माने में हमारी रस्सी (वेलायत) से मुतमस्सिक हैं। जो हमारी दोस्ती और हमारे दुश्मनों से दुश्मनी में साबित क़दम हैं वोह हमसे हैं और हम उनसे हैं वोह हमारी इमामत पर ख़ुश हैं और हम उनकी पैरवी पर राज़ी और ख़ुश हैं पस उन्हें मुबारक हो, और उनके लिए बशारत है। ख़ुदा की क़सम क़यामत के दिन वोह लोग हमारे दर्जे में हमारे साथ होंगे।"

(कमालुद्दीन, बाब ३४, ह. ५)

लफ़्ज़े तूबा के मअ़्ना की वज़ाहत में अबू बसीर ने इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से रवायत नक़्ल की है जिसकी इब्तेदा में आया है:-

طُوبَى لِمَنْ تَمَسَّكَ بِأَمْرِنَا فِي غَيْبَةِ قَائِمِنَا فَلَمْ يَزِغْ قَلْبُهُ بَعْدَ الْهِدَايَةِ

तूबा लेमन तमस्स-क बेअम्रेना फ़ी ग़ैबते क़ाएमेना फ़लम यज़िग़ क़ल्बोहू बअ़्दल्हेदायते.

"बशारत उस शख़्स के लिए है जो ज़मानए ग़ैबत में हमारी वेलायत से मुतमस्सिक हो और उसका दिल हेदायत के बअ़्द गुमराह न हुआ हो।"

फिर अबू बसीर ने पूछा मेरी जान आप पर क़ुर्बान हो तूबा क्या है? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने इस तरह फ़रमाया:

شَجَرَةٌ فِي الْجَنَّةِ أَصْلُهَا فِي دَارِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ع وَ لَيْسَ مِنْ مُؤْمِنٍ إِلَّا وَ فِي دَارِهِ غُصْنٌ مِنْ أَغْصَانِهَا وَ ذَلِكَ قَوْلُ اللَّهِ عَزَّ وَ جَلَّ طُوبى لَهُمْ وَ حُسْنُ مَآبٍ

श-ज-र-तुन फ़ील जन्नते अस्लोहा फ़ी दारे अ़लीयिब्ने अबी तालिबिन अ़लैहिस्सलामे व लै-स मिन मोअ्मेनिन इल्ला व फ़ी दारेही ग़ुस्नुन मिन अग़सानेहा व ज़ाले-क क़ौलुल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल्ल, तूबा लहुम व हुस्नो मआबिन.

"तूबा एक दरख़्त है जिसकी जड़ अ़ली इब्ने अबी तालिब अ़लैहेमस्सलाम **के घर में है और उसकी शाख़ों में से कोई न कोई शाख़ हर मोअ्मिन के घर में है। इस बात की तरफ़ अल्लाह का येह क़ौल इशारा करता है, बशारत और नेक आ़क़ेबत उनके लिए है।"**

(कमालुद्दीन, बाब ३३, ह. ५५; सूरए रअ़्द (१३), आयत २९)

इस ह़दीस से मअ्लूम होता है कि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के दोस्तों से मोह़ब्बत और उनके दुश्मनों से दुश्मनी का मसअला इतना गेराँक़द्र है कि इसका सवाब अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के जवार में जगह और पैग़म्बर के नज़्दीक क़यामत में इज़्ज़त का सबब है। पहली नज़र में इस मसअले का तअ़ल्लुक़ दिल से है। यअ्नी अगर कोई शख़्स अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का चाहने वाला है तो इन्सान को चाहिए कि उसे दोस्त रखे, उससे नफ़रत न करे। मुम्किन है वोह शख़्स बुरा काम करे या मअ्सियत करे इस सूरत में इन्सान को उसके बुरे काम से नफ़रत करना चाहिए लेकिन जब तक वोह अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का चाहने वाला है उसे दोस्त रखे अपनी ज़ाती रंजिश की बेना पर उसे दुश्मन न रखे बल्कि हमेशा उस शख़्स को

अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मोहब्बत को देखते हुए अपने नुक़सान और फ़ाएदे पर तर्जीह दे।

यहाँ तक कि अगर कोई शख़्स साहेबे अख़्लाक़ हो लेकिन अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को न चाहता हो तो अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के चाहने वाले को उस शख़्स को तर्जीह दे। यअ़्नी उसकी दोस्ती का मेअ़्यार सिर्फ़ अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की दोस्ती हो। येह इम्तेहान है अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की मअ़्रेफ़त रखने वालों के लिए कि वोह मोहब्बते अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के ज़रीए़ अपने इख़्लास के मेअ़्यार को साबित करें। यहाँ तक मोहब्बत की तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ दिल से है।

दूसरा मरहला मोहब्बत का जो पहले मरहले के साथ साथ है, वोह अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के चाहने वालों के हुक़ूक़ और उनकी रेआ़यत का है। इन्सान जितना उन हुक़ूक़ की अदाएगी में एह्तेमाम और सन्जीदगी बरतेगा उतना ही अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से दोस्ती का पता चालेगा और जितना उन हुक़ूक़ की अदाएगी में कमज़ोरी और सुस्ती करेगा उतना ही उसकी मोहब्बत में कमी का पता चलेगा। अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के चाहने वालों के हुक़ूक़ की आदाएगी और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की वेलायत जिसको हमारी रवायतों में (मोअ्मिन) कहा गया है बहुत अहम्मीयत रखती है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَا عُبِدَ اللّٰهُ بِشَیْءٍ أَفْضَلَ مِنْ أَدَاءِ حَقِّ الْمُؤْمِنِ

मा अ़ोबेदल्लाहो बेशैइन अफ़ज़लो मिन अदाए ह़क़्क़िल मोअ्मेने.

"मोअ्मिन का ह़क़ अदा करने से बड़ी अल्लाह की ए़बादत नहीं की गई है।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ़्र, बाबो ह़क़्क़िल मोअ्मिने अ़ला अख़ीहे, ह़. ४)

एक बार मोअ़ल्ला बिन ख़ुनैस ने मोअ्मिन के हुक़ूक़ के बारे में इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से सवाल किया। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने जवाब में फ़रमाया:

سَبْعُونَ حَقّاً لَا أُخْبِرُكَ إِلَّا بِسَبْعَةٍ فَإِنِّي عَلَيْكَ مُشْفِقٌ أَخْشى أَلَّا تَحْتَمِلَ

सब्ऊना ह़क़्क़न ला उख़्बेरो-क इल्ला बेसब्अ़तिन फ़इन्नी अ़लै-क मुश्फ़ेक़ुन अख़्शा अल्ला तह़तमे-ल.

"सत्तर ह़क़ है मैं तुम्हें सात ह़क़ बताऊँगा क्योंकि मुझे ख़ौफ़ है कि तुम उनको बर्दाश्त (अन्जाम) न कर सको।"

फिर इमाम अ़लैहिस्सलाम ने सात ह़क़ इस तरह़ बयान फ़रमाया:

لَا تَشْبَعُ وَ يَجُوعُ وَ لَا تَكْتَسِي وَ يَعْرى، وَ تَكُونُ دَلِيلَهُ وَ قَمِيصَهُ الَّذِي يَلْبَسُهُ وَ لِسَانَهُ الَّذِي يَتَكَلَّمُ بِهِ، وَ تُحِبُّ لَهُ مَا تُحِبُّ لِنَفْسِكَ، وَ إِنْ كَانَتْ لَكَ جَارِيَةٌ بَعَثْتَهَا لِتُمَهِّدَ فِرَاشَهُ، وَ تَسْعى فِي حَوَائِجِهِ بِاللَّيْلِ وَ النَّهَارِ، فَإِذَا فَعَلْتَ ذلِكَ وَصَلْتَ وَلَايَتَكَ بِوَلَايَتِنَا، وَ وَلَايَتَنَا بِوَلَايَةِ اللهِ عَزَّ وَ جَلَّ

ला तश्बअ़ो व यजूअ़ो, व ला तक्तसी व यअ़्रा, व तकूनो दलील-हू व क़मी-सहुल्लज़ी यल्बसोहू व लेसानहुल्लज़ी य-तकल्लमो बेही। व तोह़िब्बो लहू मा तोह़िब्बो लेनफ़्से-क व इन कानत ल-क जारेयतुन बअ़स्तहा लेतोमह्हे-द फ़ेरा-शहू व तस्आ फ़ी ह़वाएजेही बिल्लैले वन्नहारे फ़इज़ा फ़अ़ल्-त ज़ाले-क, व सल्-त वेलाय-त-क बेवेला-यतेना व वेला-य-तना बे वेलायतिल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल्ल.

“अगर वोह भूका हो तो तुम्हारा पेट भरा न हो। तुम कपड़ा न पहनो अगर वोह नंगा हो उसके लिए राहनुमा रहो। वोह लेबास बनाओ जो वोह पहनता है। वोह ज़बान बनो जिससे वोह बोलता है। जो अपने लिए पसन्द करते हो वोह उसके लिए पसन्द करो। अगर तुम्हारे पास कनीज़ है तो उसके बिस्तर बिछाने और साफ़ सफ़ाई के लिए उसके घर भेजो। उसकी ह़ाजत पूरी करने के लिए दिन रात कोशिश करो। पस तुम अगर इस तरह़ बन गए तो गोया तुमने अपनी वेलायत को हमारी वेलायत से और हमारी वेलायत को अल्लाह की वेलायत से मिला दिया है।”

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ़्र, बाबो ह़क़्क़िल मोअ्मिने अ़ला अख़ीहे, ह़. १४)

इस ह़दीस में जो लफ़्ज़ इस्तेअ़्माल हुए हैं उनका मअ़्ना वाज़ेह़ और रोशन है मोअ्मिन दूसरों के लिए कपड़े और ज़बान की तरह़ है। यअ़्नी जैसे लेबास उ़र्यानियत और ख़तरे से बचाता है और इन्सान की ज़ाहिरी आबरू की ह़ेफ़ाज़त करता है मोअ्मिन के लिए ज़रूरी है कि अपने मोअ्मिन भाई को ख़तरात और बेआबरू होने से बचाए। ज़बान अपनी ह़ाजतों को बयान करने का ज़रीआ और अपनी बातें दूसरों को समझाने का एक रास्ता है। मोअ्मिन को इस तरह़ होना चाहिए कि दूसरे मोअ्मिनीन उसके वसाएल से अपनी ह़ाजतों को पूरा कर सके। कनीज़ का काम अपने मौला की ख़िदमत करना है अगर मोअ्मिन के एख़्तेयार में कोई ज़रीआ है जिससे अपने मोअ्मिन भाई की ख़िदमत कर सकता है तो मोअ्मिन को उससे परहेज़ नहीं करना चाहिए। मुम्किन है कि वोह ज़रीआ पैसा हो या दूसरे इम्कानात हो या इज़्ज़त और इज्तेमाई अहम्मीयत और काम हो। येह तमाम चीज़ें दूसरे मोअ्मिन भाई की ख़िदमत में पेश कर दे। अगर

मोअ्मिन की ह़ाजत पूरी करने में उसे अपनी रात की नींद और इस्तेराह़त को छोड़ना पड़े तो एक मोअ्मिन को इससे परहेज़ नहीं करना चाहिए। बल्कि अपनी नींद पर मोअ्मिन की ह़ाजत को तर्जीह़ देना चाहिए।

येह मोअ्मिन के हुक़ूक़ की एक झलक है। दूसरे मोअ्मिन पर येह बात वाज़ेह़ है कि अगर कोई अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के दोस्तों की दोस्ती में सन्जीदा है तो उसे उनके हुक़ूक़ की अदाएगी में ज़्यादा कोशिश करना चाहिए।

इमाम अ़लैहिस्सलाम के दोस्तों से परेशानियाँ दूर करना

मोअ्मिन के ह़क़ की अदाएगी इस सूरत में जब एक मोअ्मिन दूसरे मोअ्मिन से अपनी परेशानी दूर करने के लिए या अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए कहे तो सन्जीदा रुख़ एख़्तेयार कर लेती है। ह़क़ीक़त में उस वक़्त तक इन्सान की ज़िम्मेदारी कम होती है जब तक कोई मोअ्मिन उससे आकर सवाल नहीं करता है लेकिन एक मोअ्मिन का दूसरे से सवाल ह़क़ीक़त में ख़ुदा की तरफ़ से एक इम्तेह़ान है उस शख़्स के लिए जो अपने आप को मोअ्मिन और अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का चाहने वाला जानता है। बरादरे मोअ्मिन के सवाल को क्या ख़ुदा की जानिब से अपने लिए रह़मत जानता है? इमाम काज़िम अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَنْ أَتَاهُ أَخُوهُ الْمُؤْمِنُ فِي حَاجَةٍ، فَإِنَّمَا هِيَ رَحْمَةٌ مِنَ اللَّهِ- تَبَارَكَ وَ تَعَالَى- سَاقَهَا إِلَيْهِ، فَإِنْ قَبِلَ ذٰلِكَ، فَقَدْ وَصَلَهُ بِوَلَايَتِنَا وَ هُوَ مَوْصُولٌ بِوَلَايَةِ اللَّهِ؛ وَ إِنْ رَدَّهُ عَنْ حَاجَتِهِ وَ هُوَ يَقْدِرُ عَلَى قَضَائِهَا، سَلَّطَ اللَّهُ عَلَيْهِ شُجَاعاً مِنْ نَارٍ يَنْهَشُهُ فِي قَبْرِهِ إِلَى يَوْمِ

الْقِيَامَةِ، مَغْفُوراً لَهُ أَوْ مُعَذَّباً، فَإِنْ عَذَرَهُ الطَّالِبُ كَانَ أَسْوَأَ حَالاً

मन अताहो अख़ूहुल मोअ्मेनो फ़ी ह़ाजतिन, फ़इन्नमा हे-य रह़्मतुन मिनल्लाहे तबार-क व तआला सा-क़हा इलैहे फ़इन क़बे-ल ज़ाले-क फ़क़द व-स-लहू बेवेला-यतेना व हो-व मौसूलुन बेवेला-यतिल्लाहे व इन रद्दहू अ़न ह़ा-जतेही व हो-व यक़देरो अ़ला क़ज़ाएहा, सल्लतल्लाहो अ़लैहे शुजाअ़न मिन नारिन यन्हशोहू फ़ी क़ब्रेही एला यौमिल क़ेयामते, मग़फ़ूरन लहू औ-मोअ़ज़्ज़ेबन, फ़इन अ़-ज़-रहुत्तालेबो, का-न अस्व-अ ह़ालन.

"जिसके पास कोई बन्दा अपनी ह़ाजत दूर करने के लिए आए गोया अल्लाह ने उस बन्दए मोअ्मिन के ज़रीए़ उसके पास अपनी रह़मत को भेज दिया है। अगर इस शख़्स ने बन्दए मोअ्मिन की ज़रूरत पूरी करने की ह़ामी भर ली तो ह़क़ीक़त में उस शख़्स ने अह्लेबैत की वेलायत का ह़क़ अ़दा किया है। वोह वेलायत जिसका सिलसिला ख़ुदा की ज़ात पर ख़त्म होता है। लेकिन अगर उसने मोअ्मिन को रद्द कर दिया जब कि वोह ह़ाजत पूरी करने की कुदरत रखता था तो अल्लाह जहन्नम के साँप को उस पर मुसल्लत कर देगा ताकि क़यामत के दिन तक क़ब्र मे काटता रहे चाहे उस शख़्स को मआ़फ़ कर दिया गया हो या अ़ज़ाब में हो। अगर ह़ाजत मंद मोअ्मिन उस शख़्स से मअ़्ज़ेरत ख़ाह हो तो उसकी और बुरी ह़ालत होगी।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ़्र, बाबो क़ज़ाए ह़ाजतिल मोअ्मिने, ह़. १३)

जो शख़्स अपनी ह़ाजत के सिलसिले में दूसरे से रुजूअ् करता है ह़क़ीक़त में उसने अपनी इ़ज़्ज़त को पेश कर दिया है और चूँकि अल्लाह के नज़्दीक मोअ्मिन की बहुत ज़्यादा इ़ज़्ज़त है इसलिए अल्लाह नहीं चाहता है कि मोअ्मिन ज़लील और ख़ार हो। इसी वजह से उन लोगों के लिए जो बन्दए मोअ्मिन की ह़ाजत पूरी कर सकते हैं लेकिन उन्होंने पूरी नहीं किया अल्लाह ने उनके लिए अ़ज़ाबे क़ब्र क़रार दिया है। पस अगर उनकी आ़क़ेबत ख़ैर भी हो तब भी क़यामत तक उस अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तेला रहेंगे।

ह़दीस में एक नुक़्ता क़ाबिले तवज्जोह है वोह येह कि अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने मोअ्मिन की ह़ाजत की बरआवरी को अपनी वेलायत से मिलाया है। और जो भी अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को चाहता है उनकी दोस्ती की ख़ातिर मोअ्मिन की ह़ाजत रवाई को अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की वेलायत का लाज़ेमा क़रार दे और उसकी नीयत अपने वज़ीफ़े की अन्जाम देही और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के हुक़ूक़ की अदाएगी होना चाहिए। ह़दीस का आख़री जुम्ला 'अगर ह़ाजतमंद' आदमी उस शख़्स को मआ़फ़ कर दे तो उसकी ह़ालत और बदतर होगी; इस एह्तेमाल की बेना पर है जिसका इज़्हार अ़ल्लामा मजलिसी ने किया है वोह येह है उस मोअ्मिन की मआ़फ़ी से मअ्लूम होता है कि वोह इ़ज़्ज़त वाला साह़ेबे अख़्लाक़े ह़सना है और इसी दलील से ईमान के बलन्द दर्जे पर फ़ाएज़ है ऐसा आदमी एक मोअ्मिन की गर्दन पर ज़्यादा ह़क़ रखता है कि उसकी ह़ाजत पूरी की जाए और उसे नाउम्मीद न किया जाए। इस बेना पर उसे रद्द करना और उसकी ह़ाजत पूरी न करना ज़्यादा बुरा है उस शख़्स से जो इ़ज़्ज़ते नफ़्स और अच्छे अख़्लाक़ का ह़ामिल न हो। इसलिए ऐसे शख़्स की ह़ाजत पूरी न करने का अ़ज़ाब सख़्त और संगीन होगा।

पस किसी भी हालत में बन्दए मोअ्मिन को ख़ाली हाथ पलटाना किसी भी तरह मर्ज़िए परवरदिगार के मुताबिक़ नहीं है। उसके हाथ में जो है एक बन्दए मोअ्मिन के लिए उससे दरेग़ नहीं करना चाहिए। उसकी कोशिश चाहे कामियाब हो या न हो। इसलिए कि अगर उस बन्दए मोअ्मिन की हाजत पूरी न भी हुई तब भी उसने एक बड़े सवाब का काम अन्जाम दिया है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَنْ مَشى فِي حَاجَةِ أَخِيهِ الْمُؤْمِنِ يَطْلُبُ بِذلِكَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ حَتّى تُقْضى لَهُ، كَتَبَ اللّٰهُ-عَزَّ وَ جَلَّ-لَهُ بِذلِكَ مِثْلَ أَجْرِ حَجَّةٍ وَ عُمْرَةٍ مَبْرُورَتَيْنِ وَ صَوْمِ شَهْرَيْنِ مِنْ أَشْهُرِ الْحُرُمِ وَ اعْتِكَافِهِمَا فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ؛ وَمَنْ مَشى فِيهَا بِنِيَّةٍ وَلَمْ تُقْضَ كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ بِذلِكَ مِثْلَ حَجَّةٍ مَبْرُورَةٍ؛ فَارْغَبُوا فِي الْخَيْرِ

मन मशा फ़ी हाजते अख़ीहिल मोअ्मेने यत्लोबो बेज़ाले-क मा इन्दल्लाहे हत्ता तुक़्ज़ा लहू, क-तबल्लाहो अ़ज़्ज़ व जल्ल लहू बेज़ाले-क मिस्-ल अज्रे हिज्जतिन व उ़म्रतिन मब्रूरतैने व सौमे शहरैने मिन अश्हुरिल होरोमे वअ़्तेकाफ़ेहेमा फ़िल मस्जेदिल हरामे, व मन मशा फ़ीहा बेनीयतिन व लम तुक़्-ज़ क-तबल्लाहो लहू बेज़ाले-क मिस्-ल हिज्जतिन मब्रूरतिन फ़र्ग़बू फ़िल ख़ैरे.

"जो शख़्स बन्दए मोअ्मिन की हाजत रवाई के सिलसिले में एक़दाम करे जब कि उसकी नीयत सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा हो यहाँ तक कि उसकी हाजत पूरी हो जाए अल्लाह तआ़ला उस काम के बदले एक हज और एक उ़म्रए मक़बूल का सवाब और दो अ़ज़ीम महीने रोज़ा और

अल्लाह के घर में एअ्तेकाफ़ का सवाब देगा। और वोह शख़्स जो इस नीयत से एक़दाम करे लेकिन मोअ्मिन की ह़ाजत पूरी न हो। अल्लाह उसकी इस कोशिश के एवज़ एक ह़ज्जे मक़बूल का सवाब देगा बस अच्छे काम में रग़बत रखो।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ़्र, बाबो क़ज़ाए ह़ाजतिल मोअ्मिने, ह़. ९)

पस अल्लाह मोअ्मिन की ह़ाजत रवाई की कोशिश को दोस्त रखता है और उसके लिए सवाब मुअय्यन किया है। अगर उस कोशिश का कोई नतीजा बरामद हुआ तो उसका ज़्यादा सवाब मिलेगा और अगर येह कोशिश कामियाब न हुई तो भी कोशिश करने वाले ने सवाब ह़ासिल कर लिया है।

इससे भी बढ़कर वोह शख़्स जो जानता हो कि वोह अपने मोअ्मिन भाई की ह़ाजत पूरी करने की क़ुदरत नहीं रखता है लेकिन जब कोई मोअ्मिन उसके पास आता है तो दिल से वोह काम करने की हिम्मत करता है इस तरह़ से कि ह़क़ीक़त में अगर वोह काम उसके एख़्तेयार में होता तो अपने भाई के लिए ज़रूर अन्जाम देता। ऐसा आदमी भी जब कि उसके हाथ से कोई काम अन्जाम नहीं पाता है फिर भी उसी नीयत की बेना पर उसने बेपनाह सवाब ह़ासिल किया है। इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

إِنَّ الْمُؤْمِنَ لَتَرِدُ عَلَيْهِ الْحَاجَةُ لِأَخِيهِ، فَلَا تَكُونُ عِنْدَهُ، فَيَهْتَمُّ بِهَا قَلْبُهُ، فَيُدْخِلُهُ اللَّهُ- تَبَارَكَ وَ تَعَالَى- بِهَمِّهِ الْجَنَّةَ

इन्नल-मोअ्मे-न ल-तरेदो अ़लैहिल्ह़ाजतो लेअख़ीहे फ़ला तकूनो इन्दहू फ़यहतम्मो बेहा क़ल्बोहू, फ़युद-ख़ेलोहुल्लाहो तबार-क व तआ़ला बेहम्मोहिल्जन्न-त.

“एक मोअ्मिन के पास दूसरा मोअ्मिन अपनी ह़ाजत के लिए आता है लेकिन वोह उस मोअ्मिन की ह़ाजत पूरी करने की सलाहियत नहीं रखता लेकिन दिल से उसकी ज़रूरत पूरी करना चाहता है (इस तरह़ कि अगर उसके पास वोह काम करने की क़ुदरत होती तो वोह यक़ीनन उसको अन्जाम देता) अल्लाह तआ़ला ऐसे दिली एह्तेमाम की बेना पर जन्नत में दाख़िल करेगा।”

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ़्र, बाबो क़ज़ाए ह़ाजतिल मोअ्मिने, ह़. १४)

इस ह़दीस से मअ्लूम होता है कि ख़ुदा के नज़्दीक मोअ्मिन की ह़ाजत रवाई से ज़्यादा रूह़ानी और एअ्तेक़ादी ह़ालत एक दूसरे के सिलसिले में अहम्मीयत रखती है। अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के चाहने वाले एक दूसरे के लिए इस तरह़ मेल मिलाप के साथ दिल गर्म रहें ताकि वेलायत और अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मोह़ब्बत दुनिया और आख़ेरत में सारे लोगों के लिए वाज़ेह हो जाए।

४. ज़िक्र

हमेशा यादे इमाम अ़लैहिस्सलाम में रहना और उन्हें याद करना

इमाम अ़लैहिस्सलाम की मअ़्रेफ़त के आसार और निशानियों से एक येह है कि मुख़्तलिफ़ मुनासेबतों और तक़रीबात बल्कि हमेशा इमाम अ़लैहिस्सलाम को याद करना है। येह मोहब्बत का नतीजा है कि जब इन्सान किसी को दोस्त रखता है तो उसकी याद से ग़ाफ़िल नहीं रहता है क्योंकि इन्सान का अपने महबूब से क़ल्बी पेवन्द इतना क़वी है कि उसे भुला नहीं सकता है। इसलिए अह्ले ईमान और मअ़्रेफ़त, ग़ैबत के ज़माने में जब इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़ाहिरी दीदार से महरूम हैं तो दिल से हरगिज़ इमाम अ़लैहिस्सलाम की याद से ग़ाफ़िल नहीं रहते।

एक शख़्स ने हज़रत मूसा इब्ने जअ़्फ़र अ़लैहेमस्सलाम से इस आयत के बारे में सवाल किया:

وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً

वअस्ब-ग़ अ़लैकुम ने-अ़-महू ज़ाहे-रतन व बाते-नतन.

"ज़ाहिर और बातिनी नेअ़्मतों को आप पर तमाम किया"

(सूरए लुक़मान (३१), आयत २०)

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने इस तरह जवाब दिया:

النِّعْمَةُ الظَّاهِرَةُ الْإِمَامُ الظَّاهِرُ وَالْبَاطِنَةُ الْإِمَامُ الْغَائِبُ

अन्नेअ्मतुज़्ज़ाहेरतुल इमामुज़्ज़ाहेरो वल बाते-नतुल इमामुल ग़ाएबो.

"ज़ाहिरी नेअ्मत इमामे ज़ाहिर और आश्कार है और बातिनी नेअ्मत इमामे ग़ाएब है।"

फिर रावी सवाल करता है कि क्या इमामों में से कोई ग़ाएब होगा? हज़रत ने फ़रमाया:

نَعَمْ يَغِيبُ عَنْ أَبْصَارِ النَّاسِ شَخْصُهُ وَلَا يَغِيبُ عَنْ قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ ذِكْرُهُ وَهُوَ الثَّانِي عَشَرَ مِنَّا

नअ़म यग़ीबो अ़न अब्सारिन्नासे शख़्सोहू व ला यग़ीबो अ़न क़ुलूबिल मोअ्मेनी-न ज़िक्रोहू व होवस्सानी अ़-श-र मिन्ना.

"हाँ उनकी ज़ात लोगों की नज़रों से ग़ाएब होगी लेकिन उनकी याद से अह्ले ईमान के दिल ख़ाली न होंगे और वोह हम में से बारहवाँ (इमाम) है।"

(कमालुद्दीन, बाब ३४, ह. ६)

बेईमान लोग मुम्किन है कि इमाम अ़लैहिस्सलाम को भुला दें क्योंकि वोह इमाम अ़लैहिस्सलाम को नहीं पहचानते हैं लेकिन वोह लोग जो इमाम अ़लैहिस्सलाम को पहचानते हैं और उनकी मअ्रेफ़त और वेलायत रखते हैं वोह क्यों कर इमाम अ़लैहिस्सलाम को भुला सकते हैं? ज़मानए ग़ैबत में मोअ्मिन का रिश्ता इमाम अ़लैहिस्सलाम से इतना क़वी होना चाहिए कि वोह हरगिज़ इमाम अ़लैहिस्सलाम की याद से ग़ाफ़िल न हो। और कोई चीज़ उन्हें अपने महबूब की याद से न रोक सके।

मरहूम सैयद मोहम्मद तक़ी मूसवी इस्फ़हानी साहबे किताब "मिकयालुल मकारिम" के क़ौल के मुताबिक़ मोअ्मिन अपने मौला को याद करने में अपनी मअ्रेफ़त अपने यक़ीन और अपने ईमान के दर्जे के हिसाब से अलग अलग हैं। बअ्ज़ की हालत अपने मौला को याद करने में ऐसी है जैसा कि शाएर कहता है:

अल्लाहो यअ्लमो अन्नी लस्तो अज़्कोरो कुम

फ़कै-फ़ अज़्कोरो कुम इज़लस्तो अन्साकुम

"ख़ुदा जानता है कि मैं आप को याद नहीं करता।

क्योंकि याद आपको वोह करता है जो आपको भुला हो जबकि मैं कभी भी आपको नहीं भूला।"

फिर साहेबे "मिकयालुल मकारिम" दिन रात इमाम अ़लैहिस्सलाम की याद ताज़ा रखने के लिए चन्द नुक्ते की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं जिसका हम यहाँ तर्जुमा ज़िक्र कर रहे हैं। जब सुब्ह हो तो तुम्हें जान लेना चाहिए कि येह ज़िन्दगी जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें दी है वोह हज़रत की बरकत से है। पस इमाम अ़लैहिस्सलाम का शुक्रिया अदा करो और अल्लाह का शुक्रिया अदा करो उस नेअ्मत पर जो अल्लाह ने तुम्हें दी है। और अपने आप से होशियार रहो कि कहीं येह नेअ्मत अल्लाह की मर्ज़ी के ख़ेलाफ़ इस्तेअ्माल न हो जिसके सबब से रू सियाह और बार संगीन हो जाए। पस अगर गुनाह की जगह में पड़ जाओ तो अपने मौला को याद करो कि इस बुरी हालत में तुमको इमाम अ़लैहिस्सलाम देख रहा है पस इमाम अ़लैहिस्सलाम के एह्तेराम में इस गुनाह को छोड़ दो। अगर अच्छा काम तुम्हारे सामने पेश आए तो उसको अन्जाम देने में उ़जलत करो और जान लो कि येह नेअ्मत अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह ने इमाम अ़लैहिस्सलाम की बरकत से तुम्हें दिया है। उस नेअ्मत पर अल्लाह का शुक्र करो और

उसको अपने मौला के लिए हदिया करो। अपनी ज़बान और दिल से कहो:

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قالُوا يا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنا وَ أَهْلَنَا الضُّرُّ وَ جِئْنا بِبِضاعَةٍ مُزْجاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ تَصَدَّقْ عَلَيْنا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ

या अय्योहल अ़ज़ीज़ो मस्सना व अह्लनज़्ज़ुर्रो व जेअ्ना बे बेज़ाअ़तिन मुज़्जातिन फ़औफ़े लनलकै-ल व तसद्दक़ अ़लैना इन्नल्लाह यज़्ज़िल्मुतसद्देक़ी-न.

"ऐ अ़ज़ीज़ (बादशाह) हमको और हमारे अह्ल-ओ-अ़याल को परेशानियों ने घेर लिया है हम एक हक़ीर सी पूँजी लेकर आपकी ख़िदमत में आए हैं आप हमें पूरा सामान दे दें और हम पर एहसान करें कि ख़ुदा कारे ख़ैर करने वालों को जज़ाए ख़ैर देता है।"

(सूरए यूसुफ़ (१२), आयत ८८)

ख़ुज़ूअ् और ख़ुशूअ् को किसी हालत में अपने हाथ से जाने न देना उस ग़ुलाम की तरह जो अपने आक़ा के हुक्म को सुनने के लिए अपने आक़ा की बारगाह में खड़ा हो। हर सुब्ह-ओ-शाम अपने आक़ा को सलाम करो उस ग़ुलाम की तरह जो अपने आक़ा के दीदार का मुश्ताक़ हो और अपने आक़ा के फ़ेराक़ में ग़मगीन हो। उस मुख़्लिस की तरह सलाम करो जिसकी आँखों से आंसू जारी हैं और वोह यक़ीन रखता है कि अपने मौला की बारगाह में खड़ा है। दिल और ख़ुशूअ् के साथ, अल्लाह के सिवा तमाम चीज़ों को नज़र अन्दाज़ करते हुए अपने इमाम अ़लैहिस्सलाम की पैरवी करो। और जान लो इस अम्र की तौफ़ीक़ इमाम अ़लैहिस्सलाम की

बरकत के बग़ैर मुम्किन नहीं है। येह ए़बादत, मोह़ब्बत, पैरवी ऑह़ज़रत की मअ़्रेफ़त के बग़ैर क़बूल नहीं है। और जितनी इन्केसारी इमाम अ़लैहिस्सलाम की पैरवी, मअ़्रेफ़त और हुक्म के सिलसिले मे होगी उतना ही अल्लाह तुम्हारे अज्र-ओ-सवाब, इज़्ज़त और शरफ़ में एज़ाफ़ा करेगा।

और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो ऑह़ज़रत को अल्लाह के सामने वसीला और शफ़ीअ़् क़रार दो कि अल्लाह तुम्हारी नमाज़ को क़बूल करे। इस अ़ज़ीम ह़क़ और एह़सान के बदले हर दुआ़ से पहले अपने इमाम अ़लैहिस्सलाम के लिए दुआ़ करो। जब तुम्हें ज़रूरत पेश आए या बड़ी मुसीबत आए तो इमाम अ़लैहिस्सलाम से कहो और ह़ज़रत से इल्तेजा करो ताकि इमाम अ़लैहिस्सलाम अल्लाह की बारगाह में तुम्हारी ह़ाजत के लिए अल्लाह से सेफ़ारिश कर दें। क्योंकि अल्लाह तआ़ला तक पहुँचने का वसीला और दरवाज़ा इमाम अ़लैहिस्सलाम हैं जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا

व आतुल्बुयू-त मिन अब्वाबेहा.

"घरों में घर के दरवाज़े से आओ।"

(सूरए बक़रह (२), आयत १८९)

अगर कोई सह़ीह़ मअ़्रेफ़त इमाम अ़लैहिस्सलाम की मन्ज़ेलत और मक़ाम के सिलसिले में रखता है तो वोह जानता है कि यही 'याद' बड़ी ए़बादतों में शुमार होती है और इसी अहम्मीयत की बेना पर अल्लाह से उसकी दरख़ास्त करने को हमें सिखाया गया है:

لَا تُنْسِنَا ذِكْرَهُ

व ला तुन्सेना ज़िक-रहू.

"ऐ अल्लाह..... हमें उसकी याद को भुलाने से महफ़ूज़ फ़रमा।"

(कमालुद्दीन, बाब ४५, ह. ४३)

इमाम अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र उनकी याद में रहना और उनको याद करने का तअ़ल्लुक़ एक दिल से है और दूसरे मआ़शरे से है। पहला काम ख़ुद इन्सान के लिए है और दूसरे में और लोग भी शामिल हैं। इन्सान क़ुदरत रखता है इमाम अ़लैहिस्सलाम की याद के अस्बाब ख़ुद अपने लिए और दूसरे के लिए फ़राहम करे ताकि न ख़ुद ग़ाफ़िल रहे और न दूसरे ग़ाफ़िल हों।

उस मजलिस में शिरकत जो इमाम अ़लैहिस्सलाम की याद में हो

इसी दलील की बेना पर हमारे रहनुमाओं ने मजलिस बरपा करने और मजलिसों में शिरकत करने की रग़बत दिलाई है ख़ास कर वोह मजलिस जिसमें अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का ज़िक्र हो।

इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम दाऊद बिन सरहान से फ़रमाते हैं:

يَا دَاوُدُ أَبْلِغْ مَوَالِيَّ عَنِّي السَّلَامَ وَ أَنِّي أَقُولُ رَحِمَ اللَّهُ عَبْداً اجْتَمَعَ مَعَ آخَرَ فَتَذَاكَرَ أَمْرَنَا فَإِنَّ ثَالِثَهُمَا مَلَكٌ يَسْتَغْفِرُ لَهُمَا وَ مَا اجْتَمَعَ اثْنَانِ عَلَى ذِكْرِنَا إِلَّا بَاهَى اللَّهُ تَعَالَى بِهِمَا الْمَلَائِكَةَ فَإِذَا اجْتَمَعْتُمْ فَاشْتَغِلُوا بِالذِّكْرِ فَإِنَّ فِي اجْتِمَاعِكُمْ وَ مُذَاكَرَتِكُمْ إِحْيَاءَنَا وَ خَيْرُ النَّاسِ مِنْ بَعْدِنَا مَنْ ذَاكَرَ بِأَمْرِنَا وَ دَعَا إِلَى ذِكْرِنَا.

या दाऊदो अब्लिग़ मवालीया अ़न्निस्सला-म व अन्नी अक़ूलोः रहेमल्लाहो अ़ब्दन इज्त-म-अ़ म-अ़ आ-ख़ -र

फ़-तज़ाक-र अम्रना। फ़इन्-न साले-सहोमा म-लकुन यस्तग़फ़ेरो लहोमा व मा इज्त-म-अ़स्नाने अ़ला ज़िक्रेना इल्ला बाहल्लहो तआ़ला बेहेमल्मलाएक-त फ़-एज़जतमअ़् तुम फ़श्तग़ेलू बिज़्ज़िक्रे फ़इन्-न फ़ी इज्तेमाएकुम व मुज़ाक-रतेकुम एह्याअना व ख़ैरुन्नासे मिन बअ़्दे ना मन ज़ा-क-र बेअम्रेना व दआ़ एला ज़िक्रना.

"ऐ दाऊद हमारे दोस्तों को हमारा सलाम और हमारा येह पैग़ाम पहुँचा दो। अल्लाह उस बन्दे पर रह्मत करे जो अपने एक दोस्त के साथ जब होता है तो हमारे बारे में बात करता है। उस सूरत में तीसरा फ़रिश्ता होता है जो उन दोनों की मग़फ़ेरत तलब करता है दो आदमी कोई भी जब हमें याद करने के लिए जमअ़् होते है तो अल्लाह उन दोनों पर फ़रिश्तों के दरमियान मुबाहात करता है पस जब तुम जमअ़् हो तो हमें याद करो क्योंकि तुम्हारा जमअ़् होना और याद करना हमारे उमूर को ज़िन्दा करता है। हमारे बअ़्द बेहतरीन शख़्स वोह है जो हमारे बारे में लोगों से गुफ़्तुगू करे और हमारी गुफ़्तुगू के लिए लोगों को दअ़्वत दे।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. १, स. २००)

आप मुलाह़ेज़ा कर रहे हैं कि येह मजलिस जो अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के ज़िक्र के लिए मुन्अ़क़िद की जाती है वोह कितनी पुर बरकत और सवाब का ज़रीआ़ है। यहाँ तक कि अगर कोई इज्तेमाअ़् या नशिस्त बग़ैर किसी प्रोग्राम और मक़सद के मुन्अ़क़िद हो लेकिन उसमें अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम का ज़िक्र न हो तो येह नशिस्त क़यामत के दिन शिरकत करने वालों के लिए ह़सरत का सबब होगी। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَا اجْتَمَعَ فِي مَجْلِسٍ قَوْمٌ لَمْ يَذْكُرُوا اللَّهَ - عَزَّ وَ جَلَّ- وَ لَمْ يَذْكُرُونَا، إِلَّا كَانَ ذٰلِكَ الْمَجْلِسُ حَسْرَةً عَلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

मा इज्त-म-अ फ़ी मज्लेसिन क़ौमुन लम यज़्कोरुल्ला-ह अ़ज़्ज़ व जल्ल व लम यज़्कोरूना इल्ला का-न ज़ालेकल मज्लिसो ह़सरतन अ़लैहिम यौमल क़ेयामते.

"जो इज्तेमाअ़् या नशिस्त मुन्अ़क़िद हो अगर उसमें अल्लाह और अइम्मा की याद न हो तो वोह इज्तेमाअ़् साह़ेबाने मजलिस के लिए क़यामत के दिन ह़सरत का सबब होगी।"

(उसूले काफ़ी, किताबुद्दुआ, बाबो मा यजेबो मिन ज़िक्रिल्लाहे फ़ी कुल्ले मजलिसिन, ह़. २)

अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की याद, उनके फ़ज़ाएल और मसाएब से ज़िन्दा होती है। अह़ादीस और सीरते अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम को याद करने का येह भी एक तरीक़ा है और इसी वजह से अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने दीनी भाइयों से मुलाक़ात और दीदार की सेफ़ारिश की है। इस मुलाक़ात की ग़रज़ ह़दीसे अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम का नक़्ल करना और उनके फ़ज़ाएल और मसाएब बयान होना चाहिए इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

تَزَاوَرُوا فَإِنَّ فِي زِيَارَتِكُمْ إِحْيَاءً لِقُلُوبِكُمْ، وَ ذِكْراً لِأَحَادِيثِنَا؛ وَ أَحَادِيثُنَا تُعَطِّفُ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ، فَإِنْ أَخَذْتُمْ بِهَا رَشَدْتُمْ وَ نَجَوْتُمْ، وَ إِنْ تَرَكْتُمُوهَا ضَلَلْتُمْ وَ هَلَكْتُمْ، فَخُذُوا بِهَا، وَ أَنَا بِنَجَاتِكُمْ زَعِيمٌ

तज़ावरू फ़इन्-न फ़ी ज़ेया-रते कुम एह्याअन लेकुलूबेकुम व ज़िक्रन ले अह्रादीसेना व अह्रादीसोना तोअ़त्तेफ़ो बअ़्-ज़कुम अ़ला बअ़्ज़िन फ़इन अख़ज़्तुम बेहा रशद्तुम व नजौतुम। व इन तरक्तोमूहा ज़लल्तुम व हलक्तुम फ़ ख़ुज़ूबेहा व अना बे-नजातेकुम ज़ईमुन.

"एक दूसरे की मुलाक़ात के लिए जाओ। इसलिए कि मुलाक़ात तुम्हारे दिलों को ज़िन्दा करती है और हमारी ह्रदीसों को याद करने का ज़रीआ है। हमारी ह्रदीसें तुमको एक दूसरे के लिए मेह्रबान बना देंगी। पस अगर तुम उन पर अ़मल करो तो ह्रेदायत और नजात पाओगे और अगर उनको छोड़ दिया तो गुमराह और हलाक हो जाओगे। इसलिए हमारी ह्रदीसों को काम में लाओ मैं तुम्हारी नजात का ज़ामिन हूँगा।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ़्र, बाबो तज़ाकोरिल इख़्वाने, ह्र. २)

बेशक ह्रेदायत और कामियाबी अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की अह्रादीस पर अ़मल के बग़ैर मुम्किन नहीं है। मजलिसें जो अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के चाहने वाले मुन्अ़क़िद करते हैं यही मजलिसें अह्रादीसे अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम को याद करने का ज़रीआ हैं और नजात भी इसी में है। ह्रक़ीक़त में अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की याद मोअ्मिन के दिल के लिए रूह्रानी ग़ेज़ा है। क्योंकि ख़ुदावन्द मुतआ़ल ने उनकी मोह्रब्बत और वेलायत को दिलों के ज़िन्दा रहने का सबब क़रार दिया है और जो ज़िन्दा दिली का तलबगार है उसके लिए ज़रूरी है उनकी वेलायत को अपने दिल में ज़िन्दा रखे।

इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़ुज़ैल से फ़रमाया:

تَجْلِسُونَ وَ تُحَدِّثُونَ

तज्लेसू-न व तोह़द्देसू-न?

"क्या तुम लोग बैठते हो और एक दूसरे को ह़दीसें सिखाते हो।"

फ़ुज़ैल ने अ़र्ज किया **"हाँ"**। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

إِنَّ تِلْكَ الْمَجَالِسَ أُحِبُّهَا فَأَحْيُوا أَمْرَنَا يَا فُضَيْلُ فَرَحِمَ اللَّهُ مَنْ أَحْيَا أَمْرَنَا يَا فُضَيْلُ مَنْ ذَكَرَنَا أَوْ ذُكِرْنَا عِنْدَهُ فَخَرَجَ مِنْ عَيْنِهِ مِثْلُ جَنَاحِ الذُّبَابِ غَفَرَ اللَّهُ لَهُ ذُنُوبَهُ وَلَوْ كَانَتْ أَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ

इन्-न तिल्कल्मजालि-स ओहिब्बोहा फ़अह़्यू अम्रना या फ़ुज़ैल फ़रह़ेमल्लाहो मन अह़्या अम्रना. या फ़ुज़ैलो मन ज़-करना, औ ज़ो-केर्ना इन्दहू, फ़ख़-र-ज मिन ऐ़नेही मिस्लो जनाहिज़्ज़ोबाबे, ग़-फ़रल्लाहो लहू व लौ कानत अक्स-र मिन ज़-बदिल बह़्रे.

"मैं इस तरह़ की नशिस्त पसन्द करता हूँ पस ऐ फ़ुज़ैल हमारे अम्र को ज़िन्दा रखो। अल्लाह उस शख़्स पर रह़मत करे जिसने हमारे अम्र को ज़िन्दा किया। ऐ फ़ुज़ैल जो हमें याद करे या जिसके पास हमें याद किया जाए और उसके आँखों से मक्खी के पर के बराबर भी आंसू निकल आएँ अल्लाह उसके गुनाहों को मआ़फ़ कर देगा अगरचे उसके गुनाह समन्दर के झाग से ज़्यादा हों।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ४४, स. २८२)

रोना मुम्किन है अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की मुसीबत याद करके हो या मोह़ब्बत और दिलसोज़ी में हो या इमामे ग़ाएब अ़लैहिस्सलाम के फ़ेराक़ और हिज्र में हो या फिर शौक़े मोह़ब्बत और वेलायते अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम में हो। किसी भी सूरत में रोने से दिल पाक और इन्सान के गुनाह धुल जाते हैं। इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَنْ ذُكِّرَ بِمُصَابِنَا فَبَكَى وَ أَبْكَى لَمْ تَبْكِ عَيْنُهُ يَوْمَ تَبْكِي الْعُيُونُ وَ مَنْ جَلَسَ مَجْلِساً يُحْيَا فِيهِ أَمْرُنَا لَمْ يَمُتْ قَلْبُهُ يَوْمَ تَمُوتُ الْقُلُوبُ

मन ज़ोक्केरा बेमुसाबेना फ़ बका व अब्का लम तब्के ऐ़नोहू यौमा तब्किल ओ़यूनो.....मन ज-ल-स मज्लेसन योह़्या फ़ीहे अम्रोना, लम यमुत क़ल्बोहू यौ-म तमूतुल्कुलूबो.

“जो हमारी मुसीबतों को याद करके रोए और रुलाए उसकी आँख जिस रोज़ सारी आँखें गिरियाँ कुनाँ होंगी, नहीं रोएगी।.....जो शख़्स उस मजलिस में बैठे जिसमें हमारा अम्र ज़िन्दा किया जाता है उस रोज़ जिस दिन सारे दिल मुर्दा हो जाएँगे, उसका दिल मुर्दा न होगा।”

(बेह़ारुल अनवार, जि. ४४, स. २७८)

५. इ़ल्म

उ़लूमे आले मोह़म्मद को सीखना और सिखाना

अम्रे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को ज़िन्दा करने की फ़ज़ीलत को हमने जान लिया। मुनासिब है कि हम अम्रे अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम को ज़िन्दा करने के बेहतरीन तरीक़े से वाक़िफ़ हों जिसका बयान भी ख़ुद अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने किया हो। और जो इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत में ख़ास कर इमाम अ़लैहिस्सलाम की मअ़्रेफ़त का अहम ज़रीआ और वसीला हो।

इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

رَحِمَ اللّٰهُ عَبْداً أَحْيَا أَمْرَنَا

रह़ेमल्लाहो अ़ब्दन अह़्या अम्रना.

"ख़ुदा रह़मत करे उस बन्दे पर जो हमारे उमूर को ज़िन्दा रखता है।"

हरवी, जो ह़दीस का रावी है उसने इमाम अ़लैहिस्सलाम से पूछा:

وَ كَيْفَ يُحْيِي أَمْرَكُمْ

व कै-फ़ योह़्या अम्रोकुम.

"कैसे आप के अम्र को ज़िन्दा रखा जाए?"

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया:

يَتَعَلَّمُ عُلُومَنَا وَ يُعَلِّمُهَا النَّاسَ فَإِنَّ النَّاسَ لَوْ عَلِمُوا مَحَاسِنَ كَلَامِنَا لَاتَّبَعُونَا

य-तअ़ल्लमो उ़लू-मना व योअ़ल्लेमोहन्ना-स लौ अ़लेमू महासे-न कलामेना लत्त-बऊ़ना.

"हमारे उ़लूम को सीखे और लोगों को सिखाए। पस बेशक अगर लोग हमारे कलाम की ख़ूबी को जान जाएँ तो हमारी पैरवी करेंगे।"

(बेहारुल अनवार, जि. २, स. ३०)

यहाँ पर अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के उ़लूम को सीखने और सिखाने की ताकीद की गई है जिसका रास्ता ह़दीसों को पढ़ना और बयान करना है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

تَلَاقُوْا وَ تَحَادَثُوْا الْعِلْمَ فَاِنَّ بِالْحَدِيْثِ تُجْلَى الْقُلُوْبُ الرَّائِنَةُ وَ بِالْحَدِيْثِ اِحْيَاءُ اَمْرِنَا فَرَحِمَ اللهُ مَنْ اَحْيَا اَمْرَنَا

तलाक़ू व तहा-दसुल्इ़ल-म फ़इन्न बिल ह़दीसे तुज्लल्कुलूबुर्राएनतो व बिल ह़दीसे एह़्याओ अम्रेना फ़-रह़ेमल्लाहो मन अह़्या अम्रना.

"एक दूसरे से मुलाक़ात के लिए जाओ और इ़ल्मी मतालिब (ह़दीस) के बारे में एक दूसरे से गुफ़्तुगू करो। इसलिए कि ह़दीसों के ज़रीए़ आलूदा दिल पाक और हमारा अम्र ज़िन्दा होता है। ख़ुदा रह़मत करे उस शख़्स पर जो हमारे अम्र को ज़िन्दा करता है।"

(बेहारुल अनवार, जि. १, स. २०२)

उ़लूमे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को सीखना जो सह़ीह़ और वाक़ई इ़ल्म है, इन्सान को पाक करता है और ह़क़ीक़ी सआ़दत तक पहुँचा देता है। और उसके साथ साथ लोगों को अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ राग़िब करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। उ़लूम को फैलाना और मआ़रिफ़ का बयान

अगर येह बयान अच्छी तरह़ से किया जाए तो लोग देखेंगे कि किसी दूसरे कलाम में वोह तरावट और ख़ूबसूरती नहीं है जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के कलाम में है जो कोई बात इतना दिल पर असर अन्दाज़ नहीं होती जितनी अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की बात दिल में बैठती है। येह लोगों की फ़ितरत के मुताबिक़ है उनकी अ़क़्ल इसकी ताईद करती है उनका दिल इसकी सेह़त की गवाही देता है जबकि दूसरों की बात येह ख़ुसूसियत नहीं रखती। पस कितना अच्छा है कि लोग इस रास्ते से अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ बुलाए जाएँ ताकि लोग ख़ुद इसकी ह़क़्क़ानियत के गवाह बन जाएँ। पस मोअ्मिन के लिए ज़रूरी है कि ख़ुद भी अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के मआ़रिफ़ को ह़ासिल करने की कोशिश करे और दूसरों को भी सीखने की दअ़्वत दे। ग़ैबत के ज़माने में येह ज़िम्मेदारी बहुत संगीन है और बहुत ज़्यादा अहम्मीयत की ह़ामिल है थोड़ी सी लापरवाही ज़िम्मेदारी के अन्जाम देने में तमाम लोगों की बेदीनी का सबब होगी और कोई भी मह़फ़ूज़ न रहेगा।

इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

لَوْ لَا مَنْ يَبْقَى بَعْدَ غَيْبَةِ قَائِمِنَا ع مِنَ الْعُلَمَاءِ الدَّاعِينَ إِلَيْهِ وَ الدَّالِّينَ عَلَيْهِ وَ الذَّابِّينَ عَنْ دِينِهِ بِحُجَجِ اللَّهِ وَ الْمُنْقِذِينَ لِضُعَفَاءِ عِبَادِ اللَّهِ مِنْ شِبَاكِ إِبْلِيسَ وَ مَرَدَتِهِ وَ مِنْ فِخَاخِ النَّوَاصِبِ لَمَا بَقِيَ أَحَدٌ إِلَّا ارْتَدَّ عَنْ دِينِ اللَّهِ وَ لَكِنَّهُمُ الَّذِينَ يُمْسِكُونَ أَزِمَّةَ قُلُوبِ ضُعَفَاءِ الشِّيعَةِ كَمَا يُمْسِكُ صَاحِبُ السَّفِينَةِ سُكَّانَهَا أُولَئِكَ هُمُ الْأَفْضَلُونَ عِنْدَ اللَّهِ عَزَّ وَ جَلَّ.

लौ ला मन यब्क़ा बअ़्-द ग़ैबते क़ाएमेना मिनल उ़-लमा-इद्दाई-न इलैहे वद्दाल्ली-न अ़लैहे वज़्ज़ाब्बी-न अ़न दीनेहे

बेह्रुजजिल्लाहे वल-मुन्क़ज़ी-न लेज़ो-अ़फ़ाए ए़बादिल्लाहे मिन शेबाके इब्ली-स व म-र-दतेही व मिन फ़ेख़ाख़िन्नवासिबे लमा बक़े-य अ-ह्दुन इल्लर्तद्द अ़न दीनिल्लाहे व लाकिन्नहुमुल्लज़ी-न युम्सेकू-न अज़िम्म-त कुलूबे ज़ो-अ़फ़ाइश्शीअ़ते कमा युम्सेको साह्रेबुस्सफ़ी-नते सुक्का-नहा ऊलाए-क हुमुल अफ़्ज़लू-न इन्दल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल्ल.

"अगर हमारे क़ाएम की ग़ैबत में चले जाने के बअ़्द लोगों के दरमियान उ़लमा न होते जो लोगों को उनकी तरफ़ बुलाते और उनकी तरफ़ राहनुमाई करते और एलाही दलीलों के साथ दीन का देफ़ाअ़् करते और ख़ुदा के जईफ़ बन्दों को शैतान के फ़रेब और सरकश शैतान के चंगुल से नजात देते और दुश्मन की कमीनगाहों से "जो लोगों के हेदायत के रास्ते में" बैठे हैं नजात देते तो दीने ख़ुदा पर कोई बाक़ी नहीं रहता था। लेकिन वोह हैं जो ज़ईफ़ शीआ़ के दिलों की रस्सी को पकड़े हुए हैं बिल्कुल उसी तरह से जैसे नाख़ुदा कश्ती में बैठने वालों की। येह लोग ख़ुदा के नज़्दीक सबसे बेहतर बन्दे हैं।"

(बेह्रारुल अनवार, जि. २, स. ६)

इस ह्दीस में इमाम अ़लैहिस्सलाम ने ग़ैबत के ज़माने में उ़लमा के फ़र्ज़ को अच्छी तरह से बयान किया है। वोह लोग हर चीज़ से ज़्यादा लोगों को इमामे ग़ाएब अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ बुलाएँ (वद्दाई-न इलैहे वद्दाल्ली-न अ़लैहे) और येह काम इमाम अ़लैहिस्सलाम की याद को ज़िन्दा करने और उनके फ़ज़ाएल और मनाक़िब को बयान करने और इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के सिलसिले में अह्दीस के बयान से मुम्किन होगा। इसके

बावजूद अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के उ़लूम और मअ़ारिफ़ को सीखना और सिखाना भी लोगों को इमाम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ बुलाने का बेहतरीन ज़रीआ़ है जिससे ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिए।

ग़ैबत में उ़लमा को अपनी तरफ़ लोगों को दअ़्वत नहीं देना चाहिए बल्कि ख़ुलूस के साथ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की मुक़द्दस बारगाह की तरफ़ दअ़्वत देनी चाहिए यअ़्नी उस पुल की तरह होना चाहिए जिससे इमाम अ़लैहिस्सलाम के चाहने वाले दूसरे किनारे जा सकें और मंज़िले मक़सूद जो वेलायत और मअ़्रेफ़ते इमाम अ़लैहिस्सलाम है, तक पहुँच जाएँ।

इमाम अ़लैहिस्सलाम से राबेत़े के लिए किसी वसीले की ज़रूरत नहीं है ताकि कोई इस उ़न्वान से लोगों को अपनी तरफ़ बुलाए और अपनी करामत को उन लोगों को दिखाए। आ़लिम का काम नूरे मोहब्बत और इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की वेलायत को वाज़ेह करना है उन लोगों के दिलों में जो वलीये नेअ़्मत से ग़ाफ़िल हैं। सरगर्दां और परेशान पनाह गाह की तलाश में भटक रहे हैं, इस दरवाज़े और उस दरवाज़े पर जा रहे हैं इमाम अ़लैहिस्सलाम की याद और उनके इ़ल्मी मआ़रिफ़ का बयान दिल को नूरानी करता है और फिर अपने एख़्तेयार से और ह़ज़रत की ए़नायत से इस राह को तै करता है। शुब्हात को दूर करना, मुश्केलात को ख़त्म करना उ़लमा की ज़िम्मेदारी है लेकिन लोगों के दिलों को अपनी तरफ़ मोड़ लेना अपने से क़रीब कर लेना इमाम अ़लैहिस्सलाम का काम है। उ़लमाए ह़क़ीक़ी अपने अन्दर येह ख़ुसूसीयत पैदा करें और अपने आप को इससे सजाएँ और इसी सूरत में वोह ख़ुदा के नज़्दीक सबसे बेहतर होंगे।

६. इन्तेज़ार

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का इन्तेज़ार

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की मअ़्रेफ़त के आसार में से एक असर इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का इन्तेज़ार करना है। रवायत में ह़ज़रत के ज़हूर के इन्तेज़ार को बेहतरीन ए़बादत क़रार दिया गया है। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम फ़रमाते हैं:

اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اِنْتِظَارُ الْفَرَجِ

अफ़-ज़लुल ए़बादते इन्तेज़ारुल फ़-रजे.

"इन्तेज़ारे फ़रज बेहतरीन ए़बादत है।"

(मुन्तख़बुल असर, बाब ११, फ़स्ल २, ह़. १७)

यहाँ पर इन्तेज़ार किसी तरह़ भी अल्लाह के जानिब से ज़हूर के लिए रास्ते के हमवार होने को बेहतरीन ए़बादत क़रार दिया गया है। येह मसअला अगर अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के फ़रज से तअ़ल्लुक़ रखता है तो ग़ैबत के ज़माने में ख़ास फ़ज़ीलत रखता है जिसका इशारा ह़दीसों में हुआ है। हम यहाँ पर बऱ्वाने मिसाल कुछ का ज़िक्र करेंगे। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَنْ مَاتَ مِنْكُمْ وَهُوَ مُنْتَظِرٌ لِهَذَا الْأَمْرِ كَمَنْ هُوَ مَعَ الْقَائِمِ فِي فُسْطَاطِهِ

मन मा-त मिन्कुम व हो-व मुन्तज़ेरुन लेहाज़ल अम्रे कमन हो-व मअ़ल्क़ाएमे फ़ी फ़ुस्तातेही.

"तुम में से जो इन्तेज़ार करते हुए मर जाए वोह उस शख़्स की तरह है जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के साथ उनके ख़ैमे में रहा हो।"

फिर थोड़ी देर के बअ़्द फ़रमाया:

لَا بَلْ كَمَنْ قَارَعَ مَعَهُ بِسَيْفِهِ

ला, बल कमन क़ा-र-अ़-मअ़हू बेसैफ़ेही.

"नहीं बल्कि उस शख़्स की तरह है जो ह़ज़रत के साथ ह़ज़रत की नुसरत में तलवार चलाए।"

फिर इमाम अ़लैहिस्सलाम ने एक और जुम्ले का इज़ाफ़ा किया:

لَا وَاللّٰهِ إِلَّا كَمَنِ اسْتُشْهِدَ مَعَ رَسُولِ اللّٰهِ ص

ला वल्लाहे इल्ला क-मनिस्तुश्हे-द म-अ़ रसूलिल्लाहे सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम.

"नहीं ख़ुदा की क़सम वोह नहीं है मगर उस शख़्स की तरह जो रसूल के साथ शहीद हुआ हो।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ५२, स. १२६)

येह ह़ालत हर किसी को नसीब नहीं होगी बल्कि इस बड़ी नेअ़्मत से तन्हा वोह लोग सरफ़राज़ होंगे जो अच्छी तरह से समझ और इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत से मुतअ़ल्लिक़ गहरी मअ़्रेफ़त रखते होंगे। लोगों की ज़ाहिरी चीज़ों को देखने वालों की तरह सत्ही फ़िक्र नहीं रखते होंगे। इस सूरत में

वोह लोग हर ज़माने के रहने वालों से बेहतर होंगे। जैसा कि इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

يَا أَبَا خَالِدٍ إِنَّ أَهْلَ زَمَانِ غَيْبَتِهِ الْقَائِلِينَ بِإِمَامَتِهِ وَ الْمُنْتَظِرِينَ لِظُهُورِهِ أَفْضَلُ مِنْ أَهْلِ كُلِّ زَمَانٍ لِأَنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَ تَعَالَى أَعْطَاهُمْ مِنَ الْعُقُولِ وَ الْأَفْهَامِ وَ الْمَعْرِفَةِ مَا صَارَتْ بِهِ الْغَيْبَةُ عِنْدَهُمْ بِمَنْزِلَةِ الْمُشَاهَدَةِ وَ جَعَلَهُمْ فِي ذَلِكَ الزَّمَانِ بِمَنْزِلَةِ الْمُجَاهِدِينَ بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ اللَّهِ ص بِالسَّيْفِ أُولَئِكَ الْمُخْلَصُونَ حَقّاً وَ شِيعَتُنَا صِدْقاً وَ الدُّعَاةُ إِلَى دِينِ اللَّهِ عَزَّ وَ جَلَّ سِرّاً وَ جَهْراً

या अबा ख़ालिदिन, इन्-न अह-ल ज़माने ग़ैबतेहिल क़ाएली-न बेइमा-मतेही वल-मुन्तज़ेरी-न लेज़ुहूरेही अफ़्ज़लो मिन अह्ले कुल्ले ज़मानिन ले अन्नल्ला-ह तबार-क व तआ़ला अअ़्ताहुम मिनल उ़क़ूले वल अफ़्हामे वल मअ़्रेफ़ते मा सारत बेहिल ग़ै-बतो इन्दहुम बे मन्ज़ेलतिल मुशाहदते व जअ़लुहम फ़ी ज़ालेकज़्ज़मानए बे-मन्ज़ेलतिल मुजाहेदी-न बै-न यदै रसूलिल्लाहे सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम बिस्सैफ़े. ऊलाएकल्मुख़्लेसू-न ह़क़्क़न व शीअ़तोना सिद्क़न वद्दुआ़ते एला दीनिल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल्ल सिर्रन व जह्रन.

"ऐ अबू ख़ालिद, बेशक (ह़ज़रत महदी) के ग़ैबत के ज़माने के लोग उनकी इमामत पर एअ़्तेक़ाद रखते होंगे और उनके ज़हूर का इन्तेज़ार कर रहे हैं। वोह तमाम ज़माने

के लोगों से बेहतर हैं क्योंकि ख़ुदावन्द आ़लम ने उन्हें अ़क्ल-ओ-फ़हम और मअ़्रेफ़त इस तरह़ दी है कि ग़ैबत उनके लिए इमाम के हुज़ूर की तरह़ हो गई है। उन लोगों को इस ज़माने में उस शख़्स की तरह़ क़रार दिया है जिसने रसूल के सामने तलवार से जेहाद किया है। वोह लोग ह़क़ीक़ी मुख़्लिस और हमारे सच्चे शीआ़ हैं और वोह लोग ख़ुदा के दीन की तरफ़ ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर दअ़्वत देने वाले हैं।"

(कमालुद्दीन, बाब ३१, ह़. २)

येह लोग दो सिफ़तों की बेना पर हर ज़माने के लोगों से बेहतर हैं। एक इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की इमामत पर अ़कीदा और दूसरे उनके ज़हूर का इन्तेज़ार। इन दो सिफ़तों ने इन्हें सच्चा शीआ़ बना दिया है और उन लोगों में से क़रार दिया है जो ज़ाहिर और बातिन में दीने ख़ुदा की तरफ़ दअ़्वत देते हैं। दीने ख़ुदा में हर चीज़ से ज़्यादा इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का मुक़द्दस वजूद है। ख़ुदा के दीन की तरफ़ दअ़्वत यअ़्नी मअ़्रेफ़त की तरफ़ दअ़्वत और इमामे ग़ाएब अ़लैहिस्सलाम से राबेता है। ग़ैबत के ज़माने में इन्तेज़ार की एक पहचान लोगों को इमाम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर दअ़्वत देना है।

इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर को नज़दीक जानना

आ़म तौर से ज़हूर का इन्तेज़ार दिल से होता है और येह उस वक़्त ह़ासिल होता है जब इन्सान किसी भी ह़ालत में इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर से नाउम्मीद न हो और उसको मुह़ाल न जाने। इन्तेज़ार करने वाले की आँखें सुब्ह-ओ-शाम इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर में टकी रहती हैं और

कभी भी ज़हूर को दूर नहीं जानता। ज़मानए ग़ैबत में दिल की येह ह़ालत रज़ाए परवरदिगार की वजह है और इन्सान के लिए नजात का ज़रीआ है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ إِلَى اللَّهِ عَزَّ وَ جَلَّ وَ أَرْضَى مَا يَكُونُ عَنْهُ إِذَا افْتَقَدُوا حُجَّةَ اللَّهِ فَلَمْ يَظْهَرْ لَهُمْ وَ حُجِبَ عَنْهُمْ فَلَمْ يَعْلَمُوا بِمَكَانِهِ وَ هُمْ فِي ذَلِكَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ لَا تَبْطُلُ حُجَجُ اللَّهِ وَ لَا بَيِّنَاتُهُ فَعِنْدَهَا فَلْيَتَوَقَّعُوا الْفَرَجَ صَبَاحاً وَ مَسَاءً

अक़्रबो मा यकूनुल्अब्दो एलल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल्ल व अर्ज़ा मा यकूनो अ़न्हो एज़फ़्-त-क़दू हुज्जतल्लाहे फ़लम यज़्हर लहुम व ह़ोजे-ब अ़न्हुम फ़लम यअ़्-लमू बेमकानेही व हुम फ़ी ज़ाले-क यअ़्लमू-न अन्नहू ला तब्तोलो ह़ोजजुल्लाहे वला बय्यनातोहू. फ़इन्दहा फ़ल्य-तवक़्क़ुल-फ़-र-ज सबाह़न व मसाअन.

"सबसे नज़्दीक ह़ालत बन्दे की ख़ुदा से और सबसे ज़्यादा रेज़ायत ख़ुदा की अपने बन्दे से उस वक़्त है जब बन्दा हुज्जते ख़ुदा को ना पाए। हुज्जते ख़ुदा ज़ाहिर न हो बल्कि वोह लोगों से पोशीदा हो। पस लोग हुज्जत को न जानने के बावजूद येह जानते है कि अल्लाह की दलीलें और उसकी निशानियाँ ख़त्म नहीं होंगी। पस ऐसे वक़्त हर सुब्ह-ओ-शाम ज़हूर का इन्तेज़ार करो।"

(कमालुद्दीन, बाब ३३, ह़. १७)

ज़हूर का नज़्दीक जानना एक दिली कैफ़ीयत है और येह ह़ालत इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के सिलसिले में इन्सान के यक़ीन का पता देती है

क्योंकि ज़हूर के वक़्त को नहीं बताया गया है। इसलिए हर सुब्ह-ओ-शाम उसके वाक़ेअ् होने का इम्कान पाया जाता है। ज़हूर को नज़्दीक जानना ज़हूर में जल्दी करना नहीं है जिसके सिलसिले में हमने कहा कि तस्लीम से साज़गार नहीं है। इस्तेअ्जाल का मतलब ज़हूर के वक़्त के सिलसिले में ख़ुदा के हुक्म पर राज़ी न होना है लेकिन ज़हूर को नज़्दीक जानना ख़ुद तस्लीम का मिस्दाक़ है क्योंकि ख़ुदा इससे राज़ी है और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने इसकी सिफ़ारिश की है। इससे बढ़कर इस हालत का न होना यअ्नी (ज़हूर से नाउम्मीद होना) चाहे थोड़ी देर के लिए हो और ज़हूर को दूर जानना अगरचे थोड़े ज़माने के लिए हो, गुनाहे कबीरा में हिसाब किया जाता है।

इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

هَلَكَتِ الْمَحَاضِيرُ

ह-ल-कतिल महाज़ीरो.

"महाज़ीर हलाक हुए"

रावी ने पूछा मौला महाज़ीर क्या है? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने जवाब में फ़रमाया:

الْمُسْتَعْجِلُونَ

अल-मुस्तअ्ज़ेलू-न.

"जल्दी करने वाले"

फिर फ़रमाते हैं:

وَنَجَا الْمُقَرِّبُونَ

व नजलमुक़र्रबू-न.

"नज़्दीक जानने वाले नजात पाएँगे"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ५२, स. १३८)

मह़ाज़ीर जम्ए़ मह़ज़र है। इसका मअ़्ना उस घोड़े के है जो ज़्यादा दौड़ता है यहाँ पर मुराद वोह लोग हैं जो ज़हूर में जल्दी करते हैं। इस तरह़ की जल्द बाज़ी इन्सान को कजरवी और अ़क़ीदे की ख़राबी की तरफ़ खींचती है। इसके मुक़ाबिल में वोह लोग जो ज़हूर को नज़्दीक जानते हैं वोह लोग साह़ेबाने नजात हैं। दुआए अ़ह्द में इस तरह़ पढ़ते हैं:

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيداً وَنَرَاهُ قَرِيباً

इन्नहुम यरौनहू बईदन व नराहो क़रीबन.

"वोह लोग (मुख़ालिफ़) इमाम के ज़हूर को दूर ख़याल करते हैं जब कि हम ज़हूर को क़रीब जानते हैं।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ९९, स. ११२)

लेकिन ज़हूर को नज़्दीक जानने का मतलब ज़हूर का वक़्त मोअ़य्यन करना नहीं है ज़हूर के वक़्त की पेशीनगोई मर्ज़िए परवरदिगार और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से उतना ही दूर है जितना की ज़हूर में जल्दी करना। अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ने उन लोगों को जो ज़हूर का वक़्त मोअ़य्यन करना चाहते थे शिद्दत से मनअ़् किया है और ऐसे लोगों को झूठा जाना है।

एक बार एक शख़्स इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से ज़हूर के वक़्त के बारे में सवाल करता है और कहता है:

جُعِلْتُ فِدَاكَ: أَخْبِرْنِي عَنْ هَذَا الْأَمْرِ الَّذِي نَنْتَظِرُهُ مَتَى هُوَ؟

जोइ़ल्तो फ़ेदा-कः अख़्बरनी अ़न हाज़ल अम्रिल लज़ी नन्तज़ेरोहू मता हो-व?

"मैं आप पर फ़ेदा हो जाऊँः मुझे बताएँ येह अम्र यअ़्नी ज़हूरे फ़रज जिसका हम इन्तेज़ार कर रहे हैं कब होगा?"

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने इस तरह जवाब दिया:

كَذَبَ الْوَقَّاتُونَ وَهَلَكَ الْمُسْتَعْجِلُونَ وَنَجَا الْمُسَلِّمُونَ.

क-ज़-बल्वक़्क़ातू-न व ह-ल-कल्मुस्तअ़्जेलू-न व नजल्मुसल्लेमू-न.

"वक़्त मुअ़य्यन करने वाले झूठे हैं और जल्दी करने वाले हलाक होंगे और साहेबाने तस्लीम नजात पाएंगे।"

(ग़ैबते नोअ़्मानी, बाब १६, ह. ११)

पस वोह लोग जो ज़हूर के वक़्त को नज़्दीक बताते हैं वोह अपने ख़याल में लोगों को इमाम अ़लैहिस्सलाम से क़रीब करने और ज़हूर के लिए ज़मीन को हमवार करने का नाम ज़हूरे सुग़रा या ऐसे नाम फ़राहम करते हैं। वोह लोग ख़ुद गुमराह हैं और दूसरों को भी गुमराही की तरफ़ ढकेल रहे हैं। इन्तेज़ार करने वाले का काम ज़हूर के वक़्त के सिलसिले में क़ज़ा-ओ-क़दरे एलाही पर तस्लीम होना है। इस हालत में हर सुब्ह-ओ-शाम इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर से नाउम्मीद न होना ज़रूरी है और इसको दिल से क़रीब जानना है। लेकिन ज़रूरी है कि ख़ुद इसमें जल्दी न करे और दूसरों को भी ज़हूर के सिलसिले में जल्दबाज़ी की बातिल ख़ाहिश और ग़लती की तरफ़ न ले जाए। इस बेना पर आ़म तौर से इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर को नज़्दीक जानने को ज़हूर के वक़्त की पेशीनगोई में ग़लती न करे

क्योंकि पहली सूरत मम्दूह है और दूसरी सूरत की मज़म्मत की गई है और दोनों का हिसाब एक दूसरे से जुदा है।

ज़हूर की अ़लामत के बारे में याद दहानी

आ़म तौर से ज़हूर की जो अ़लामतें बताई गई हैं उन में से कोई भी क़तई नहीं है। यअ़्नी मुम्किन है कि उन अ़लामतों के बग़ैर इमाम अ़लैहिस्सलाम का ज़हूर हो जाए। इसकी वजह उन अ़लामतों में बदा का इम्कान है उस मअ़्नी में कि उनके वाक़ेअ़् होने से पहले बदलने और न होने का एह्तेमाल ख़त्म नहीं हुआ है।

उन तमाम निशानियों में जब उनके वाक़ेअ़् होने का वक़्त मोअ़य्यन नहीं है (इल्मी तअ़्बीर में क़दरे एलाही में नहीं है) या अगर उनके वाक़ेअ़् होने का वक़्त मोअ़य्यन है लेकिन अल्लाह ने मौजूद होने का हुक्म नहीं दिया है (यअ़्नी क़ज़ाए एलाही में नहीं) और अगर वाक़ेअ़् होने का हुक्म दिया है लेकिन अभी वजूदे ख़ारिजी उसका नहीं हुआ है इस सूरत में भी अल्लाह उसके वाक़ेअ़् होने को रोक सकता है ख़ास कर उन अ़लामतों के बारे में जिनके वाक़ेअ़् होने की ह़त्मी ख़बर दी गई है। मसलन सुफ़यानी का ख़ुरूज जैसे ह़त्मी अ़लाएमे ज़हूर में से क़रार दिया गया है।

(ग़ैबते नोअ़्मानी, बाब १८, ह़. १)

ऐसी अ़लामतों के ह़त्मी होने का मतलब येह नहीं है कि उसमें बदा नहीं हो सकती बल्कि इसका मअ़्ना येह है कि उसके वाक़ेअ़् होने के सिलसिले में तक़दीरे एलाही के साथ साथ क़ज़ाए एलाही भी पाई जाती है यअ़्नी ह़त्मी तौर पर वाक़ेअ़् होना है लेकिन उस वक़्त तक जब तक वोह अ़लामत ज़ाहिर नहीं हुई बदा का एह्तेमाल पाया जाता है।

इस मरहले को हमारी हदीसों मे क़जाए एलाही पर दस्तख़त होना कहा गया है। अइम्मा अलैहिमुस्सलाम ने फ़रमाया है:

فَإِذَا وَقَعَ الْقَضَاءُ بِالْإِمْضَاءِ فَلَا بَدَاءَ

फ़-एज़ा व-क़अल क़ज़ाओ बिल्इम्ज़ाए फ़ला बदाअ.

"यअ्नी जब क़ज़ा पर दस्तख़त हो जाए तो फिर बदा नहीं है।"

(उसूले काफ़ी, किताबुत्तौहीद, बाबुल बदा, ह. १६)

क़ज़ा पर दस्तख़त होने का मतलब उसका ख़ारिज होना है येह मसअला मुक़द्दराते एलाही में जारी है। मसलन मुम्किन है कि अल्लाह किसी की उ़म्र कम क़रार दे और रूह के फ़रिश्ते को क़ब्ज़े रूह का भी हुक्म दे दे कि ख़ास वक़्त में उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेना। यही हुक्म क़ज़ाए एलाही है पस ऐसे आदमी का मरना हतमी है लेकिन मुम्किन है उसके किसी अच्छे काम की बेना पर (जैसे सदक़ा या सिलए रह्म) बदा हो जाए और अल्लाह उसकी उ़म्र को बढ़ा दे। येह काम चूँकि दस्तख़त के मरहले तक नहीं पहुँचा है इसलिए बदा के क़ाबिल है।

सुफ़यानी का ख़ुरूज भी हतमी होने के बावजूद रवायात में क़ाबिले बदा होने से मुतअ़ल्लिक़ है। अबू हाशिम जअ़्फ़री इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से सवाल करते हैं कि ख़ुरूजे सुफ़यानी की रवायत हतमी होने के बावजूद क्या मुम्किन है कि ख़ुदा उसमें बदा कर दे। **हल यब्दओ लिल्लाहे फ़िल महतूमे** इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: **'नअ़म'** हाँ। फिर अबू हाशिम एज़ाफ़ा करता है कि मैं डरता हूँ कि कहीं अस्ले ज़हूर में भी बदा न हो जाए। इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

إِنَّ الْقَائِمَ مِنَ الْمِيعَادِ وَاللَّهُ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ

इन्नल क़ाए-म मिनल मिआदे वल्लाहो ला युख़्लेफ़ुल-मिआ-द.

"बेशक क़ाएम का क़याम वअ़्दा है और अल्लाह वअ़्दा ख़ेलाफ़ी नहीं करता है।"

(ग़ैबते नोअ़्मानी, बाब १८, ह़. १०)

लेहाज़ा ज़हूर में बदा नहीं हो सकता है लेकिन ह़त्मी अ़लामतें भी बदा के क़ाबिल हैं बस दूसरी अ़लामतों का ह़ाल वाज़ेह़ है। लेकिन इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के वक़्त में बदा हो सकता है। आगे, पीछे, जल्दी या देर होना ज़हूर में उसके वाक़ेअ़् होने से पहले हो सकता है।

पस ज़हूर की अ़लामतें जो ह़दीस में आई हैं उनको यक़ीनी नहीं जानना चाहिए ग़ैर यक़ीनी मानने में कोई एअ़्तेराज़ नहीं है। मुम्किन है इसमें से कुछ अ़लामतें इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए मोअ़्मेनीन को ज़्यादा तैयार करने के लिए आई हों या कोई दूसरी ह़िकमत हो जिसका इ़ल्म हमें न हो। लेकिन जो बात यक़ीनी है वोह येह है कि ह़ज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर को पहचानने के लिए उन अ़लामतों के देखने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि ग़ैबत से इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर को यक़ीनी बताया गया है इसमें किसी शक की गुंजाइश नहीं है जैसा की बअ़्ज़ ह़दीसों मे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के क़याम को रसूल के क़याम से तश्बीह दी गई है जो बहुत वाज़ेह और रोशन था। इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَثَلُ خُرُوجِ الْقَائِمِ مِنَّا أَهْلَ الْبَيْتِ كَخُرُوجِ رَسُولِ اللَّهِ ص

म-सलो ख़ुरूजिल्क़ाएमे मिन्ना अह्लल्बैते क-ख़ुरूजे रसूलिल्लाहे सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम.

"हमारे क़ाएम का क़याम रसूलुल्लाह के क़याम की तरह़ है।"

(ग़ैबते नोअ़्मानी, बाब ११, ह़. १४)

और कभी ज़हूर को सूरज की रोशनी से तश्बीह दी गई है जिससे ज़्यादा वाज़ेह़ मह़सूसात में कोई चीज़ वजूद नहीं रखती। जैसा कि इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

فَإِنَّ أَمْرَكُمْ لَيْسَ بِهِ خَفَاءٌ أَلَا إِنَّهَا آيَةٌ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ لَيْسَتْ مِنَ النَّاسِ أَلَا إِنَّهَا أَضْوَأُ مِنَ الشَّمْسِ لَا تَخْفَى عَلَى بَرٍّ وَلَا فَاجِرٍ أَ تَعْرِفُونَ الصُّبْحَ فَإِنَّهَا كَالصُّبْحِ لَيْسَ بِهِ خَفَاءٌ

इन्-न अम्रकुम लै-स बेही ख़ेफ़ाउन अला इन्नहा आयतुन मिनल्लाहे अ़ज़्ज व जल्ल लैसत मिनन्नासे अला इन्नहा अज़्वओ मिनश्शम्से ला तख़्फ़ा अ़ला बिर्रिन वला फ़ाजेरिन अ-तअ़्रेफ़ूनस्सुब्ह़? फ़इन्नहा कस्सुब्ह़े लै-स बेही ख़फ़ा.

"आपके अम्र (ज़हूर) में कोई चीज़ पोशीदा नहीं है। आगाह हो जाओ कि ज़हूर इन्सानों की नहीं बल्कि अल्लाह की निशानियों में से एक है। येह भी जान लो कि वोह (यअ़्नी ज़हूर) सूरज से भी ज़्यादी नूरानी है। वोह किसी अच्छे और बुरे आदमी से पोशीदा नहीं है। क्या सुब्ह पहचानते हो? वोह (यअ़्नी ज़हूर) सुब्ह की तरह़ है जिसमें किसी तरह़ का राज़ नहीं है।"

(ग़ैबते नोअ़्मानी, बाब ११, ह़. १७)

पस ज़हूर की अ़लामतें पहले तो कोई भी यक़ीनी और ग़ैर क़ाबिले तब्दील नहीं है और दूसरे ख़ुद ज़हूर को पहचानने के लिए काम नहीं आएंगी। इस

बेना पर उनका मुतालेआ करते वक़्त येह दो नुक्ते नज़र में रहें। ज़हूर की अ़लामत के बारे में बह्स करते वक़्त येह ध्यान रहे कि कहीं येह बह्स ग़ैबत के ज़माने में हमारी ज़िम्मेदारियों को ज़ैरे सवाल क़रार न दे दे या उनमें फँसकर उन वाजेबात से ग़ाफ़िल हो जाएँ जिनको अल्लाह ने हमसे तलब किया है।

इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद इन्तेज़ार करने वाले की नीयत होना चाहिए

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का इन्तेज़ार करने वाला अपने आप को ज़हूर के अय्याम में इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद के लिए आमादा करता है। येह उस वक़्त हो सकता है जब ह़त्मी एरादा और पक्की नीयत ग़ैबत के ज़माने में रखता हो। अच्छे काम करने की अहम्मीयत इतनी ज़्यादा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया है:

نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ

नीयतुल मोअ्मिने ख़ैरुन मिन अ़-मलेही.

"मोअ्मिन की नीयत उसके अ़मल के बेहतर है।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ्र, बाबुन्नीयत, ह़. २)

मोअ्मिन बहुत से अच्छे काम करने की नीयत करता है लेकिन तमाम काम करने में कामियाब नहीं हो पाता है और मुम्किन है बअ़्ज़ काम करते वक़्त रेयाकारी में मुब्तेला हो जाए और अपना इख़्लास खो दे। इसलिए अच्छे काम की नीयत अच्छे काम से बेहतर है। अल्लाह अपने लुत़्फ़ और एह़सान की बेना पर मोअ्मिन को उसके नीयत की जज़ा देता है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

إِنَّ الْعَبْدَ الْمُؤْمِنَ الْفَقِيرَ لَيَقُولُ: يَا رَبِّ ارْزُقْنِي حَتّٰى أَفْعَلَ كَذَا وَ كَذَا مِنَ الْبِرِّ وَ وُجُوهِ الْخَيْرِ، فَإِذَا عَلِمَ اللّٰهُ- عَزَّ وَ جَلَّ- ذٰلِكَ مِنْهُ بِصِدْقِ نِيَّةٍ كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ مِنَ الْأَجْرِ مِثْلَ مَا يَكْتُبُ لَهُ لَوْ عَمِلَهُ؛ إِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ كَرِيمٌ

इन्नल अ़ब्दल मोअ्मिनल्फ़क़ी-र ल-यक़ूलो: या रब्बिर्ज़ुक़्नी ह़त्ता अफ़्अ-ल कज़ा व कज़ा मिनल बिर्रे व वुजूहिल्ख़ैरे फ़इज़ा अ़लेमल्लाहो अ़ज़्ज़ व जल्ल ज़ाले-क मिन्हो बेसिद्क़े नीयतिन, क-त-बल्लाहो लहू मिनल्अज्रे मिस्ल मा यक्तोबो लहू लौ अ़मे-लहू इन्नल्ला-ह वासेउ़न करीम.

"बेशक फ़क़ीर मोअ्मिन कहता है: ऐ मेरे पालने वाले मुझे रिज़्क़ दे ताकि अच्छे काम और अच्छी राह में तरह़ तरह़ के काम कर सकूँ। पस चूँकि अल्लाह तआ़ला जानता है कि उसकी नीयत सच्ची है इसलिए उसको सवाब अ़ता करता है बिल्कुल उसी तरह़ जैसे उसने उस काम को दिया हो। बेशक अल्लाह बहुत ज़्यादा अ़ता करने वाला और करीम है।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ्र, बाबुन्नीयत, ह़. ३)

इस नज़रिए के मुताबिक़ नीयत का सह़ीह़ होना बहुत ज़्यादा अहम्मीयत रखता है। मोअ्मिन की नीयत ज़रूरी है कि ख़ुदा और इमाम अ़लैहिस्सलाम के लिए ख़ालिस हो। इसी बेना पर इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम अपने आप को करबला में इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मदद करने वाला जानते हैं। और उस दिन शोहदा के सवाब को अपने लिए मानते हैं।

اِنِّی لاَ اُخْرِجُ نَفْسِیْ مِنْ شُهَدَآءِ الطُّفُوْفِ وَ لاَ اَعُدُّ ثَوَابِیْ اَقَلَّ مِنْهُمْ، لِاَنَّ مِنْ نِیَّتِی النُّصْرَةَ لَوْ شَهِدْتُ ذَالِكَ الْیَوْمَ وَ كَذَالِكَ شِیْعَتُنَا هُمُ الشُّهَدَاءُ وَاِنْ مَاتُوا عَلٰی فُرُشِهِمْ

इन्नी ला उख़रेजो नफ़्सी मिन शोहदाइत्तुफ़ूफ़े व ला अउद्दो सवाबी अक़ल्ल मिन्हुम लेअन्-न मिन नीयतिन्नुस्र-त लौ शहिद्तो ज़ालेकल्यौ-म व-कज़ाले-क शीअ़तोना हुमुश्शो-हदाओ व इन मा तू अ़ला फ़ोरोशेहिम.

"मैं अपने आप को करबला के शहीदों से अलग नहीं जानता और अपने सवाब को उनसे कम शुमार नहीं करता। क्योंकि मेरी नीयत येह है कि अगर मैं उस रोज़ होता तो (इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम) की मदद करता। और उसी तरह हमारे शीआ़ शहीद शुमार किए जाएंगे अगरचे वोह बिस्तर पर इस दुनिया से चले जाएँ।"

(मिकयालुल मकारिम, जि.२, स. २२८, ब नक़्ल अ़ज़ शर्हे सहीफ़ए सज्जादिया सैयद नेअ़्मतुल्लाह जज़ाएरी)

इस बेना पर वोह शख़्स जो इमाम ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के इन्तेज़ार का दिन गिन रहा है बल्कि घन्टे और मिनट को गिन रहा है अगर ह़क़ीक़त में सच्चा और इसकी नीयत ख़ालिस तौर पर इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद हो तो ज़हूर का ज़माना न मिलने के बावजूद उसे नुक़सान नहीं होगा क्योंकि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर को दर्क करने और इमाम अ़लैहिस्सलाम के साथ इमाम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ से जंग करने का सवाब बग़ैर जंग किए मिलेगा और उसने सवाब को ग़ैबत के ज़माने में ही ह़ासिल कर लिया है।

इस मतलब का राज़ येह है कि इमाम अ़लैहिस्सलाम को मदद पहुँचाने में उस शख़्स के हाथ में जो था वही दिली और रूहानी तैयारी थी और ह़क़ीक़त में मदद का तअ़ल्लुक़ ऐसी शराएत से था जिसका होना या न होना उसके हाथ में नहीं है बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी पर है। पस जब अल्लाह ने उसे तौफ़ीक़ से मह़रूम कर दिया है तो अपने लुत़्फ़-ओ-करम से मदद पहुँचाने के सवाब को देने में दरेग़ नहीं करता है।

इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के इन्तेज़ार करने वालों में एक शख़्स अ़ब्दुल ह़मीद वास्ती नाम का पाँचवें इमाम अ़लैहिस्सलाम के इमामत के ज़माने में रहता था। एक बार वोह अपने इन्तेज़ार की ह़ालत बयान करने के बअ़्द और इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूरे क़ाएमे आले मोह़म्मद के बारे में गुफ़्तुगू के बअ़्द इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ करता है:

فَإِنْ مِتُّ قَبْلَ أَنْ أُدْرِكَ الْقَائِمَ عليه السلام؟

फ़-इन मित्तो क़ब्ल अन उद्रेकल्क़ाए-म अ़लैहिस्सलाम.

"अगर क़ाएम के दर्क करने से पहले मर गया तो क्या होगा?"

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

إِنَّ الْقَائِلَ مِنْكُمْ إِذَا قَالَ: إِنْ أَدْرَكْتُ قَائِمَ آلِ مُحَمَّدٍ نَصَرْتُهُ كَالْمُقَارِعِ مَعَهُ بِسَيْفِهِ

इन्नल क़ाए-ल मिन्कुम एज़ा क़ा-लः इन अद्रक्तो क़ाए-म आले मोह़म्मदिन सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्ल-म नसर्तोहू, कल्मुक़ारेए़ म-अ़हू बेसैफ़ेही.

“अगर तुम में से कोई (जान और दिल से) कहे: अगर क़ाएम अ़लैहिस्सलाम को दर्क करूँ तो उनकी मदद करूँगा। वोह उस शख़्स की तरह है जो इमाम अ़लैहिस्सलाम के साथ उनकी नुसरत में तलवार चलाए।”

(उसूले काफ़ी, किताबुर्रौज़ा, ह़. ३७)

इन्सान में इस अ़क़ीदे और इस रूह़ानी कैफ़ीयत का पैदा होना ख़ुदा पैग़म्बर और इमाम और उनके हुक़ूक़ की पहचान और सह़ीह़ मअ़्रेफ़त का नतीजा है। अमीरुल मोअ्मिनीन अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

اِلْزَمُوا الْأَرْضَ وَ اصْبِرُوا عَلَى الْبَلَاءِ وَ لَا تُحَرِّكُوا بِأَيْدِيكُمْ وَ سُيُوفِكُمْ فِي هَوَى أَلْسِنَتِكُمْ وَ لَا تَسْتَعْجِلُوا بِمَا لَمْ يُعَجِّلْهُ اللَّهُ لَكُمْ فَإِنَّهُ مَنْ مَاتَ مِنْكُمْ عَلَى فِرَاشِهِ وَ هُوَ عَلَى مَعْرِفَةِ حَقِّ رَبِّهِ وَ حَقِّ رَسُولِهِ وَ أَهْلِ بَيْتِهِ مَاتَ شَهِيداً وَ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَ اسْتَوْجَبَ ثَوَابَ مَا نَوَى مِنْ صَالِحِ عَمَلِهِ وَ قَامَتِ النِّيَّةُ مَقَامَ إِصْلَاتِهِ لِسَيْفِهِ فَإِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ مُدَّةً وَ أَجَلا

इल्ज़मुलअर्ज़ वस्बेरू अ़लल बलाए व ला तोह़र्रेकू बेऐदीकुम व सुयूफ़ेकुम फ़ी हवा अलसे-नतेकुम वला तस्तअ्जेलू बेमा लम योअ़ज्जिल्हुल्लाहो लकुम फ़इन्नहू मन मा-त मिन्कुम अ़ला फ़ेराशेही व हो-व अ़ला मअ़्रे-फ़ते ह़क़्क़े रब्बेही व ह़क़्क़े रसूलेही व अह्ले बैतेही, मा-त शहीदन व व-क़-अ अज्रोहू अ़लल्लाहे वस्तौज-ब सवा-ब मा नवा मिन सालेह़े अ़-मलेही व क़ामतिन्नीयतो मक़ा-म इस्लातेही बेसैफ़ेही व-इन्-न लेकुल्ले शैइन मुद्दतन व अजलन.

“गोशा नशीनी एख़्तेयार करो, बला पर सब्र करो। अपने हाथ और अपनी तलवार को ज़बान की ख़ाहिशात पूरा करने के लिए न चलाओ। और उस चीज़ की बनिस्बत जिसको ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जल्दी नहीं किया है उसमें जल्दी न करो। इसलिए कि तुम में जो भी बिस्तर पर मर जाए जब कि वोह अपने परवरदिगार के ह़क़ को और उसके पैग़म्बर के ह़क़ को और अह्लेबैत के ह़क़ को जानता हो वोह इस दुनिया से शहीद जाता है और उसका अज्र ख़ुदा के पास है और वोह अपने अच्छे काम की नीयत का सवाब पा लेगा और उसकी नीयत तलवार खींचने के मानिन्द होगी और हर चीज़ का एक वक़्त और इन्तेहा है।”

(नह्जुल बलाग़ा, ख़ुत्बा १९०)

इस ह़दीस में एक नुक्ता बहुत अच्छा है। ख़ुदा, पैग़म्बर और इमाम के हुक़ूक़ पहचाने की अहम्मीयत और वोह भी उनकी मअ्रेफ़त के साए में हो क्योंकि इन्सान की मअ्रेफ़त जितनी ज़्यादा होगी उनके ह़क़ की पहचान भी ज़्यादा होगी और हुक़ूक़ के बारे में जो हमारी ज़िम्मेदारी है वोह भी अच्छी तरह़ से जानेगा। बस किताब के शुरुअ् में इमाम अ़लैहिस्सलाम की मअ्रेफ़त की अहम्मीयत को जो हमने बयान किया उसे भी अच्छी तरह़ से समझ सकेगा।

इस बेना पर ज़मानए ग़ैबत में इन्तेज़ार करने वाला वही है जो ज़बान और दिल से इस तरह़ कहे:

نُصْرَتِي مُعَدَّةٌ لَكُمْ

नुसरती मुअ़द्दतुन लकुम.

“मेरी मदद आप (अह्लेबैत) के लिए आमादा है।”

(एह्तेजाजे तबरसी, जि. २, स. ३१७, ज़ेयारते आले यासीन)

अगर तमाम इमाम के मानने वाले ज़मानए ग़ैबत में ऐसी ह़ालत रखें तो ख़ुद इमाम अ़लैहिस्सलाम के वअ़्दे के मुताबिक़ ह़ज़रत की ज़ेयारत से मह़रूम नहीं रहेंगे। और ग़ैबत उन लोगों के लिए हुज़ूर की जगह ले लेगी। इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम अपनी तौक़ीअ़् में शेख़ मुफ़ीद अ़लैहिर्रह़्मा से फ़रमाते हैं:

لَوْ أَنَّ أَشْيَاعَنَا وَفَّقَهُمُ اللَّهُ لِطَاعَتِهِ عَلَى اجْتِمَاعٍ مِنَ الْقُلُوبِ فِي الْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ عَلَيْهِمْ لَمَا تَأَخَّرَ عَنْهُمُ الْيُمْنُ بِلِقَائِنَا وَ لَتَعَجَّلَتْ لَهُمُ السَّعَادَةُ بِمُشَاهَدَتِنَا عَلَى حَقِّ الْمَعْرِفَةِ وَ صِدْقِهَا مِنْهُمْ بِنَا

लौ अन्-न अश्याअ़ना वफ़्फ़-क़हुमुल्लाहो लेताअतेही अ़ला इज्तेमाए़ मिनल कुलूबे फ़िल वफ़ाए बिल्अह्दे अ़लैहिम लमा तअख़्ख़-र अ़न्हुमुल्युम्नो बेलेक़ाएना व ल-तअ़ज्जलत लहुमुस्सअ़ादतो बेमुशाह-दतेना अ़ला ह़क़्क़िल मअ़्रेफ़ते व सिद्क़ेहा मिन्हुम बेना.

“अगर हमारे मानने वाले, अल्लाह उन्हें इताअ़त की तौफ़ीक अ़ता करे, दिल से वफ़ा और अ़ह्द को पूरा करने में जो उनकी गर्दन पर है इत्तेफ़ाक़ करते तो हमारे दीदार की बरकत में ताख़ीर न होती और हमारे दीदार की सअ़ादत, सह़ीह़ और ह़क़ीक़ी मअ़्रेफ़त उनकी तरफ़ से हमारे लिए बहुत जल्द ह़ासिल होती।”

(एह्तेजाजे तबरसी, जि. २, स. ३२५)

तजदीदे बैअ़त मदद के इज़्हार का ज़रीआ़

कितना अच्छा है कि इन्सान इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद की ख़ाहिश अपनी ज़बान पर ले आए और अपने ख़ुदा से अ़ह्द-ओ-पैमान करे कि कभी भी अपनी नीयत से ग़ाफ़िल नहीं रहेगा और कोताही नहीं करेगा। इसी मक़सद के लिए ज़मानए ग़ैबत में बैअ़त का मसअला उठता है। बैअ़त का मतलब इमाम अ़लैहिस्सलाम की एताअ़त पर दिल से राज़ी होना और ज़बान से मदद करना है। मुख़्तलिफ़ मुनासेबतों में इस अ़मल को दोहराया जाता है और ह़क़ीक़त में बैअ़त की तज्दीद होती है। मिसाल के तौर पर दुआए अह़द में इमाम अ़लैहिस्सलाम के साथ बैअ़त की तज्दीद हर दिन की सुब्ह़ में होती है। और वोह इस तरह़ है:

اللَّهُمَّ إِنِّي أُجَدِّدُ لَهُ فِي صَبِيحَةِ يَوْمِي هَذَا وَ مَا عِشْتُ مِنْ أَيَّامِي عَهْداً وَ عَقْداً وَ بَيْعَةً لَهُ فِي عُنُقِي لَا أَحُولُ عَنْهَا وَ لَا أَزُولُ أَبَداً اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنْ أَنْصَارِهِ وَ أَعْوَانِهِ وَ الذَّابِّينَ عَنْهُ وَ الْمُسَارِعِينَ إِلَيْهِ فِي قَضَاءِ حَوَائِجِهِ وَ الْمُحَامِينَ عَنْهُ وَ السَّابِقِينَ إِلَى إِرَادَتِهِ وَ الْمُسْتَشْهَدِينَ بَيْنَ يَدَيْهِ

अल्लाहुम्-म इन्नी ओजद्देदो लहू फ़ी सबीह़ते यौमी ह़ाज़ा व मा इश्तो मिन अय्यामे ह़याती अ़ह्दन व अ़क़्दन व बैअ़तन लहू फ़ी ओनोक़ी ला अह़ूलो अन्हा व ला अज़ूलो अबदन अल्लाहुम्मज़अ़ल्नी मिन अन्सारेही व अ़अ़्वानेही वज़्ज़ाब्बी-न अ़न्हो वल मुसारेई-न इलैहे फ़ी क़ज़ाए ह़वाएजेही वल मुम्तसेली-न लेअवामेरेही वल मुह़ामी-न अ़न्हो वस्साबेक़ी-न एला एरादतेही वल मुस्तश्हदी-न बै-न यदैहे.

"ख़ुदाया मैं हर सुब्ह और अपनी ज़िन्दगी के तमाम दिनों में वोह अ़ह्द-ओ-पैमान और बैअ़त ऑहज़रत की जो अपनी गर्दन पर रखता हूँ उसकी तज्दीद करता हूँ इस तरह कि मैं हरगिज़ उससे नहीं पलटूँगा और न ही अपनी गर्दन को ख़ाली करूँगा। ऐ ख़ुदा मुझे उनके दोस्तों और मददगारों में क़रार दे और मुझे उन लोगों में क़रार दे जो हज़रत का देफ़ाअ् करते हैं और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने में जल्दी करते हैं और उनके अहकाम की पैरवी करते हैं और उनके मुक़द्दस वजूद की हेमायत करते हैं और उनकी ख़ाहिशात पूरी करने में एक दूसरे पर सबक़त करते हैं और उनके सामने शहादत पर फ़ाएज़ होते हैं।"

(बेहारुल अनवार, जि. ९९, स. १११)

वोह अ़ह्द-ओ-पैमान जो तमाम ख़ाहिशों का एहाता करता है इन आर्ज़ूओं को इन्तेज़ार करने वाले की ज़बान पर जारी करता है हक़ीक़त में वोह इन्सान को बदल देता है और हर रोज़ जब बैअ़त की तज्दीद करता है तो उसका एरादा और अ़ज़्म मोहकम से मोहकम तर हो जाता है और अपने आप को वअ़्दा वफ़ा करने के लिए पहले से ज़्यादा आमादा पाता है।

जो कोई इस हालत में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता है और जब मौत उसके क़रीब आती है उस हालत में कि अभी उसके मौला ने ज़हूर नहीं किया है तो उसका पूरा वजूद जलने लगता है और हज़रत के दीदार की हसरत में रोता है कि क्यों इतना इन्तेज़ार करने के बावजूद अपनी आर्ज़ूओं तक पहुँचे बग़ैर मौत की आग़ोश में जा रहा है और अपने आप को इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद करने से लाचार पाता है।

पूरी ज़िन्दगी इन्तेज़ार करने का नतीजा

अब ऐसे लोगों के साथ अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की रविश को मुलाहेज़ा करे:

मसअ़दा कहता है इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में था कि एक बूढ़ा आदमी जिसकी कमर ख़मीदा अपने अ़सा पर तकीया किए हुए इमाम अ़लैहिस्सलाम के पास आया और सलाम किया। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया वोह कहता है: ऐ फ़र्ज़न्दे रसूल! अपने हाथों को मुझे दें ताकि मैं चूम सकूँ। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने अपना हाथ उसके हाथों में दे दिया उसने इमाम अ़लैहिस्सलाम के हाथों का बोसा लिया और गिरिया करने लगा। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने पूछा: ऐ ज़ईफ़ शख़्स! क्यों रो रहे हो? उसने अ़र्ज़ किया मैं आप पर क़ुर्बान हो जाऊँ सौ साल से मैं आपके क़ाएम का वफ़ादार हूँ और हमेशा अपने आप से कहता हूँ कि इसी महीने और इसी साल में ज़हूर करेंगे लेकिन अब मेरी उ़म्र ज़्यादा हो गई है और मेरी हड्डियाँ सुस्त पड़ गई हैं और मेरी मौत नज़्दीक आ गई है लेकिन आपके सिलसिले में जो पसन्द करता हूँ वोह नहीं देख रहा हूँ आपको शहीद और वतन से दूर देख रहा हूँ और आपके दुश्मनों को तरक़्क़ी करते देख रहा हूँ इस हालत में क्यों कर गिरिया न करूँ।

यहाँ पर इमाम अ़लैहिस्सलाम गिरिया करते हैं और फ़रमाते हैं:

يَا شَيْخُ إِنَّ اللَّهَ أَبْقَاكَ حَتَّى تَرَى قَائِمَنَا كُنْتَ مَعَنَا فِي السَّنَامِ الْأَعْلَى وَ إِنْ حَلَّتْ بِكَ الْمَنِيَّةُ جِئْتَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ ثَقَلِ مُحَمَّدٍ ص وَ نَحْنُ ثَقَلُهُ فَقَدْ قَالَ ص إِنِّي مُخَلِّفٌ فِيكُمُ الثَّقَلَيْنِ فَتَمَسَّكُوا بِهِمَا لَنْ تَضِلُّوا - كِتَابَ اللَّهِ وَ عِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي

या शैख़ो, इन अब्क़ाकल्लाहो हत्ता तरा क़ाए-मना, कुन्-त फ़िस्सनामिल्अअ्ला व इन हल्लत बेकल मनीयतो जेअ्-त यौमल क़ेयामते म-अ स-क़ले मोहम्मदिन सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम व नह्नो स-क़लोहू फ़क़ा-ल सल्ललाहो अलैह व आलेही व सल्लम इन्नी मोख़ल्लेफ़ुन फ़ीकुमुस्स-क़लैने फ़ -तमस्सकू बेहेमा अन तज़िल्लूः केताबल्लाहे व इत्रती अह्ल बैती.

"ऐ शेख़! अगर अल्लाह ने तुझे ज़िन्दा रखा यहाँ तक कि तुम हमारे क़ाएम को देखो तो तुम्हारा मक़ाम बलन्द है और अगर तुम्हें मौत आ जाए (और हमारे क़ाएम को दर्क न कर सको) तो क़यामत के दिन रसूल के सिक़्ल के साथ महशूर होओगे और हम उनके सिक़्ल हैं जिनके बारे में रसूलुल्लाह ने फ़रमायाः मैं तुम्हारे दरमियान दो गराँक़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ पस तुम उन दोनों से मुतमस्सिक हो जाओ ताकि किसी भी सूरत में गुमराही में न पड़ो और वोह अल्लाह की किताब और मेरे अह्लेबैत हैं।"

वोह ज़ईफ़ कहता हैः इस ख़बर के सुनने के बअ्द मुझे फिर कोई ग़म नहीं है और मेरा दिल मुत्मईन हो गया। उसे पता नहीं था कि क़ाएमे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम कौन होगा। इसलिए इमाम अ़लैहिस्सलाम ने पहचनवाया और फ़रमाया कि हमारा क़ाएम इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की औलाद, इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम की सुल्ब से और हमारे फ़र्ज़न्दों में से होगा और उस वक़्त फ़रमायाः

يَا شَيْخُ وَ اللّٰهِ لَوْ لَمْ يَبْقَ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا يَوْمٌ وَاحِدٌ لَطَوَّلَ اللّٰهُ تَعَالَى ذِكْرُهُ ذَلِكَ الْيَوْمَ حَتَّى يَخْرُجَ قَائِمُنَا أَهْلَ الْبَيْتِ أَلَا إِنَّ

شِيعَتَنَا يَقَعُونَ فِي فِتْنَةٍ وَ حَيْرَةٍ فِي غَيْبَتِهِ هُنَاكَ يُثْبِتُ اللَّهُ عَلَى هُدَاهُ الْمُخْلَصِينَ اللَّهُمَّ أَعِنْهُمْ عَلَى ذَلِكَ

या शेख़ो, वल्लाहे लौ लम यब्-क़ मिनद्दुनिया इल्ला यौमुन वाहेदुन, ल-तव्वलल्लाहो तआला ज़िक्रोहू ज़ालेकल-यौ-म हत्ता यख़रो-ज क़ाएमोना अह्लल्बैते अला इन्-न शीअ-तना यक़ऊ-न फ़ी फ़ित्नतिन व हैरतिन फ़ी ग़ै-बतेही होना-क योसब्बेतुल्लाहो अला हुदाहुल्मुख़्लेसी-न अल्लाहुम्-म अइन्हुम अला ज़ाले-क.

"ऐ शेख़ ख़ुदा की क़सम अगर दुनिया की उम्र सिवाए एक दिन के बाक़ी न रहे तो अल्लाह तआला उस रोज़ को इतना तूलानी कर देगा कि हमारा क़ाएमे आले मोहम्मद ज़हूर करे। और जान लो ग़ैबत के ज़माने में हमारे शीआ हैरान और परेशान होंगे। ख़ुदावन्द आलम इस ज़माने में साहेबाने इख़्लास को अपनी हेदायत पर बाक़ी रखेगा। ऐ अल्लाह इन लोगों को इस अम्र पर (एख़्लास और साबित क़दम रहने पर) यारी फ़रमा।"

(बेहारुल अनवार, जि. ३६, स. ४०८-४०९)

इस वाक़ेअ् से मिलता जुलता वाक़ेआ एक ज़ईफ़ शख़्स का इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम के ज़माने में मिलता है। हकम इब्ने उतैबा जो इस वाक़ेअ् का गवाह है इस तरह बयान करता है:

पाँचवे इमाम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में था और इमाम अलैहिस्सलाम का घर लोगों से भरा हुआ था। उसी वक़्त एक ज़ईफ़ शख़्स आया जो अपने असा पर तकिया किए हुए था। कमरे के दरवाज़े पर खड़े होकर कहता है: **अस्सलामो अलै-क यब्न रसूलिल्लाह व रह्मतुल्लाहे व ब-र-**

कातोहू। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने उसके सलाम का जवाब दिया **व अ़लैकस्सलाम व रह़मतुल्लाहे व ब-र-कातोहू।** फिर उस ज़ईफ़ शख़्स ने ह़ाज़ेरीने मजलिस को सलाम किया और उन लोगों ने भी उसके सलाम का जवाब दिया। उस वक़्त उसने इमाम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ रुख़ किया और कहा:

يَا ابْنَ رَسُولِ اللَّهِ، أَدْنِنِي مِنْكَ جَعَلَنِيَ اللَّهُ فِدَاكَ، فَوَ اللَّهِ إِنِّي لَأُحِبُّكُمْ، وَ أُحِبُّ مَنْ يُحِبُّكُمْ، وَ وَاللَّهِ مَا أُحِبُّكُمْ وَ أُحِبُّ مَنْ يُحِبُّكُمْ لِطَمَعٍ فِي دُنْيَا وَ إِنِّي لَأُبْغِضُ عَدُوَّكُمْ وَ أَبْرَأُ مِنْهُ، وَ وَ اللَّهِ مَا أُبْغِضُهُ وَ أَبْرَأُ مِنْهُ لِوَتْرٍ كَانَ بَيْنِي وَ بَيْنَهُ، وَ اللَّهِ إِنِّي لَأُحِلُّ حَلَالَكُمْ وَ أُحَرِّمُ حَرَامَكُمْ، وَ أَنْتَظِرُ أَمْرَكُمْ، فَهَلْ تَرْجُو لِيجَعَلَنِيَ اللَّهُ فِدَاكَ؟

यब्न रसूलिल्लाहे अद्निनी मिन्क ज-अ़-लनियल्लाहो फ़ेदा-क फ़वल्लाहे इन्नी ल-ओह़िब्बोकुम व ओह़िब्बो मन योह़िब्बोकुम व वल्लाहे मा ओह़िब्बोकुम व ओह़िब्बो मन योह़िब्बोकुम ले-त-मइ़न फ़िद्दुनिया व इन्नी लउब्ग़ेज़ो अ़द्दूवकुम व अब्रओ मिन्हो व वल्लाहे मा उब्ग़ेज़ोहु व अब्रओ मिन्हो लेवत्रिन का-न बैनी व बैनहू वल्लाहे इन्नी ल-ओह़िल्लो ह़ला-लकुम व ओह़र्रेमो ह़रा-मकुम व अन्तज़ेरो अम्रकुम फ़हल तर्जू ली जअ़ल्नियल्लाहो फ़ेदा-क.

“ऐ फ़र्ज़न्दे रसूले ख़ुदा मेरी जान आप पर फ़ेदा हो मुझे अपने क़रीब जगह दें। ख़ुदा की क़सम मैं आपको और आपके दोस्तों को चाहता हूँ और ख़ुदा की क़सम येह

दोस्ती दुनिया की लालच में नहीं है और मैं आपके दुश्मन को दुश्मन रखता हूँ और उन लोगों से बेज़ार हूँ। ख़ुदा की क़सम येह दुश्मनी और बेज़ारी मेरी ज़ाती दुश्मनी की बेना पर नहीं है। ख़ुदा की क़सम मैं आपके ह़लाल को ह़लाल और ह़राम को ह़राम जानता हूँ और आपके ज़हूर के अम्र का इन्तेज़ार कर रहा हूँ। मेरी जान आप पर फ़ेदा हो क्या आप मेरे लिए उम्मीद रखते हैं?"

इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: **"एलय्या एलय्या - मेरी तरफ़ आओ, मेरी तरफ़ आओ"** यहाँ तक कि इमाम अ़लैहिस्सलाम ने उसे अपने क़रीब बिठाया फिर उससे फ़रमाया: ऐ शेख़ एक आदमी मेरे बाबा अ़ली इब्नुल हुसैन अ़लैहेमस्सलाम की ख़िदमत में आया और इसी सवाल को उनसे पूछा। मेरे बाबा ने फ़रमाया:

إِنْ تَمُتْ تَرِدُ عَلى رَسُولِ اللّٰهِ صلى الله عليه و آله، وَ عَلى عَلِيٍّ وَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ وَ عَلِي بْنِ الْحُسَيْنِ عليهم السلام، وَ يَثْلَجُ قَلْبُكَ وَ يَبْرُدُ فُؤَادُكَ وَ تَقَرُّ عَيْنُكَ، وَ تُسْتَقْبَلُ بِالرَّوْحِ وَ الرَّيْحَانِ مَعَ الْكِرَامِ الْكَاتِبِينَ، لَوْ قَدْ بَلَغَتْ نَفْسُكَ هاهُنَا- وَ أَهْوى بِيَدِهِ إِلى حَلْقِهِ- وَ إِنْ تَعِشْ تَرى مَا يُقِرُّ اللّٰهُ بِهِ عَيْنَكَ، وَ تَكُونُ مَعَنَا فِي السَّنَامِ الْأَعْلى

इन तमुत, तरेदो अ़ला रसूलिल्लाहे सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम व अ़ला अ़लीयिन वल ह़सने वल हुसैने व अ़लीयिब्निल हुसैने व यस्लोजो क़ल्बो-क व यब्रोदो फ़ओदो-क व तक़र्रो ऐनो-क व तस्तक़्बलो बिरूह़े वरैह़ाने मअ़ल्केरामिल कातेबी-न व लव क़द ब-लग़त नफ़्सो-क

हाहोना व अह्वा बेयदेही एला ह़ल्क़ेही व इन तऐशो तरा मा योक़िरुल्लाहो बेही ऐन-क व तकूनो म-अ़ना फ़िस्सना-मिल्अअ़्ला.

"अगर तुम मर गए तो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **और अ़ली, ह़सन, हुसैन और अ़ली इब्निल हुसैन के पास पहुँचोगे तुम्हारा दिल ठंडा और तुम्हारी आँखें रोशन हो जाएंगी। केरामुल कातेबीन फ़रिश्ते के साथ रूह़ और रैह़ान से तुम्हारा इस्तेक़बाल होगा। जैसे ही तुम्हारी जान यहाँ पहुँचेगी इमाम ने अपने हाथ से अपनी ह़ल्क़ की तरफ़ इशारा किया, और अगर ज़िन्दा रह गए तो अपनी आँखों से ऐसी चीज़ देखोगे जो तुम्हारी आँख की रोशनी में एज़ाफ़े का सबब होगा। और तुम हमारे अअ़्ला मर्तबे में होगे।"**

ज़ईफ़ शख़्स ने जब इस कलाम को सुना तो कहा ऐ अबू जअ़्फ़र आप ने क्या फ़रमाया? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार की बातों को दोहरा दिया। फिर मर्द ने कहा अल्लाहो अकबर अगर मैं दुनिया से चला गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम, ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम, इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम, इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम और इमाम अ़ली इब्नुल हुसैन अ़लैहेमस्सलाम के पास पहुँचूँगा। मेरी आँखे और मेरे दिल को ठंडक मिलेगी। केरामन कातेबीन, रूह़ और रैह़ान इस्तेक़बाल करेंगे जैसे ही मेरी जान ह़ल्क़ तक पहुँचेगी। और अगर ज़िन्दा रहा तो उस चीज़ को देखूँगा जो रोशनी चश्म का सबब होगी और आप के साथ अअ़्ला मर्तबे में रहूँगा।

फिर ज़ोर ज़ोर से रोना शुरुअ़् करता है यहाँ तक कि ज़मीन पर गिर पड़ता है। सारे लोगों ने उसकी जब येह ह़ालत देखी तो गिरिया-ओ-बुका करने

लगे और इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम अपने हाथों से उसकी आँख के आँसुओं को पोंछते थे। उस ज़ईफ़ ने अपने सर को उठाया और इमाम अ़लैहिस्सलाम से कहा: ऐ फ़र्ज़न्दे रसुलुल्लाह ख़ुदा मुझे आप पर क़ुर्बान करे अपने हाथों को मुझे दे दें। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने अपने हाथ को उसके हाथों में दे दिया। इसने इमाम अ़लैहिस्सलाम के हाथों का बोसा लिया और अपने चेहरे और आँखों पर मला फिर अपने पेट और सीने से कपड़ा उठाता है और इमाम अ़लैहिस्सलाम के हाथ को अपने सीने और पेट पर रखता है। फिर खड़ा होता है और इमाम अ़लैहिस्सलाम से ख़ुदा ह़ाफ़िज़ कहता है और जब वोह पुश्त करके जा रहा था इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम उसे देख रहे थे फिर लोगों की तरफ़ रुख़ करके फ़रमाया:

مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَنْظُرَ إِلى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، فَلْيَنْظُرْ إِلى هذَا

मन अह़ब्ब अन यन्ज़ो-र एला रजोलिन मिन अह्लिल जन्नते फ़ल्यन्ज़ुर एला हाज़ा.

"जो शख़्स अह्ले जन्नत को देखना चाहता है वोह उस शख़्स को देख ले।"

(उसूले काफ़ी, किताबुर्रौज़ा, ह़. ३०)

ह़कम इब्ने उ़तैबा कहता है मैंने किसी भी मातमी मजलिस को इस तरह़ नहीं देखा है। (क्योंकि लोग बहुत ज़्यादा रो रहे थे।)

हाँ। तमाम ज़िन्दगी अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से मोह़ब्बत और दोस्ती, उनके दुश्मनों से दुश्मनी, अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के ह़लाल-ओ-ह़राम किए हुए को मानने और क़ाएमे आले मोह़म्मद के इन्तेज़ार में बेचैन रहने वाले का यही नतीजा है।

बह्स के आख़िर में इन्तेज़ारे ज़हूर की फ़ज़ीलत के बारे में गुज़श्ता बातों को नज़र में रखते हुए अबू बसीर से इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम के क़ौल के राज़ को समझ सकते हैं: उस वक़्त जब अबू बसीर ने अ़र्ज़ किया:

جُعِلْتُ فِدَاكَ مَتَى الْفَرَجُ

जोइ़ल्तो फ़ेदा-क, मतल-फ़-रजो.

मेरी जान आप पर फ़ेदा हो, ज़हूर कब होगा?

ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने जवाब में फ़रमाया:

يَا أَبَا بَصِيرٍ وَأَنْتَ مِمَّنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا

या अबा बसीरिन, अन्त मिम्मन योरीदुद्दुन्या?

"ऐ अबू बसीर क्या तुम उन लोगों में से हो जो दुनिया को चाहते हैं?"

مَنْ عَرَفَ هَذَا الْأَمْرَ فَقَدْ فُرِّجَ عَنْهُ بِانْتِظَارِهِ

मन अ़-र-फ़ हाज़ल्अम्-र फ़क़द फ़ुर्रे-ज अ़न्हो बेइन्तेज़ारेही.

"जो कोई इस अम्र (वेलायत और इमामत) को पहचानता है उसका इन्तेज़ार करना ख़ुद उसके लिए फ़रज है।"

(ग़ैबते नोअ़्मानी, बाब २५, ह़. ३)

इससे बड़ा फ़ाएदा क्या होगा कि आ़क़ेबत बख़ैर हो और अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के साथ जन्नत में हमनशीन हो। जब कि बईद नहीं है कि येह ज़हूर इन्तेज़ार करने वालों के लिए दुनियावी उमूर में आसाइश का सबब

हो। पस आएँ और ख़ुदा से तलब करें कि इन्तेज़ारे महबूब को कभी हमसे न छीने।

لَا تُنْسِنَا ذِكْرَهُ وَانْتِظَارَهُ

वला तुन्सेना ज़िक्रहू वन्तेज़ा-रहू.

"ऐ ख़ुदा उनकी याद और उनके इन्तेज़ार को हमसे दूर न करना।"

(कमालुद्दीन, बाब ४५, ह. ४३)

येह एक दुआइया जुम्ला है जो इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के नाएबे अव्वल से हम तक पहुँचा है और इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के ज़हूर के इन्तेज़ार करने वाले रोज़े जुम्आ नमाज़े अस्र के बअ्द ग़ैबत के ज़माने में इसको बार बार पढ़ते हैं।

७. दुआ

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर की तअ़्जील में दुआ की अहम्मीयत

जो शख़्स ह़ज़रत वलीए अस्र अ़ज्जलल्लाहो फ़रजहुश्शरीफ़ के ज़हूर का इन्तेज़ार कर रहा है। उसकी ज़िन्दगी में सबसे बड़ी ख़ाहिश इमाम अ़लैहिस्सलाम का ज़हूर और इमाम अ़लैहिस्सलाम के लिए आसानियाँ हैं। और सबसे ज़्यादा जो चीज़ ग़ैबत के ज़माने में रंजीदा करती हैं वोह इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम को पहुँचने वाली सख़्तियाँ और परेशानियाँ हैं। इस बेना पर वोह ह़ज़रत के हम-ओ-ग़म और परेशानियों को दूर करना अपनी ज़िम्मेदारी समझता है और इस मक़सद के लिए जो वोह कर सकता है उसको अन्जाम देने में कोताही नहीं करता।

इस मौज़ूअ़् को नज़र में रखते हुए येह जानना ज़रूरी है कि सबसे बेहतर और सबसे ख़ुशी की बात इमाम अ़लैहिस्सलाम के लिए ख़ुदा से ज़हूर की इजाज़त ह़ासिल करना है जिसमें ह़ज़रत और तमाम अम्बिया और औलिया का भी ज़हूर है। इस मक़सद को पूरा करने के लिए सबसे मुअस्सर ज़रीआ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर की तअ़्ज़ील के लिए दुआ करना है। ख़ुद येह काम ज़मानए ग़ैबत में इमाम अ़लैहिस्सलाम की मअ़्रेफ़त की पहचान है इसके बग़ैर वेलायत और मअ़्रेफ़त का दअ़्वा करना बेकार है।

इस सुन्नते हसना को इमाम अ़लैहिस्सलाम अपनी पैदाइश से अपने दोस्तों को सिखाते चले आए हैं। जनाब ह़कीमा ख़ातून ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़सकरी

अ़लैहिस्सलाम की मोहतरम फुफी इमाम अ़लैहिस्सलाम को पैदाइश के बअ़्द देखती हैं कि सज्दे की ह़ालत में अपनी अंगुश्ते शहादत को आसमान की तरफ़ बलन्द करके इस तरह़ कह रहे है:

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَ أَنَّ جَدِّي رَسُولُ اللَّهِ ص وَ أَنَّ أَبِي أَمِيرُ الْمُؤْمِنِينَ.....

अश्हदो अन ला एला-ह इल्लल्लाहो वह़्दहू ला शरी-क लहू व अन्-न जद्दी रसूलुल्लाहे व अन्-न अबी अमीरुल मोअ्मेनी-न.....

"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अ़लावा कोई मअ़्बूद नहीं है वोह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं है और मैं शहादत देता हूँ कि मेरे जद्द रसूले ख़ुदा हैं और मेरे बाबा अमीरुल मोअ्मेनीन हैं....."

फिर बाक़ी इमामों का नाम लेते है यहाँ तक कि अपने नाम तक पहुँचते हैं उस वक़्त ख़ुदा से इस तरह़ तलब करते हैं:

اللَّهُمَّ أَنْجِزْ لِي وَعْدِي وَ أَتْمِمْ لِي أَمْرِي وَ ثَبِّتْ وَطْأَتِي وَ امْلَأْ الْأَرْضَ بِي عَدْلًا وَ قِسْطاً

अल्लाहुम्-म अन्जिज़ ली वअ़्दी व अत्मिम ली अम्री व सब्बित वत़्अती वम्लइल्अ़र्ज़ बी अ़द्लन व क़िस्तन.

"ऐ अल्लाह। वोह वअ़्दा जो मुझसे किया है उसको पूरा फ़रमा और हमारे अम्र को कामिल कर दे और हमारे क़दमों को उस्तवार कर दे और ज़मीन को हमारे ज़रीए़ अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर दे।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ५१, स. १३)

येह (इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के तअ्जील की दुआ) वोह सुन्नत है जिस पर गुज़श्ता अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम भी अ़मल करते थे और इसको पढ़ने की ताकीद करते थे। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम को देखते हैं कि एक्कीस माहे मुबारके रमज़ान की सुब्ह नमाज़े सुब्ह पढ़ने के बअ्द सज्दे में गए। एक दुआ के आख़िर में अल्लाह की बारगाह में थोड़ी बलन्द आवाज़ में इस तरह अर्ज़ करते हैं:

أَسْأَلُكَ بِجَمِيعِ مَا سَأَلْتُكَ وَ مَا لَمْ أَسْأَلْكَ مِنْ عَظِيمِ جَلَالِكَ مَا لَوْ عَلِمْتُهُ لَسَأَلْتُكَ بِهِ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ أَهْلِ بَيْتِهِ وَ أَنْ تَأْذَنَ لِفَرَجِ مَنْ بِفَرَجِهِ فَرَجُ أَوْلِيَائِكَ وَ أَصْفِيَائِكَ مِنْ خَلْقِكَ وَ بِهِ تَبِيدُ الظَّالِمِينَ وَ تُهْلِكُهُمْ عَجِّلْ ذَلِكَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ

अस्अलो-क बेजमीए़ मा सअल्तो-क व मा लम अस्अल-क मिन अ़ज़ीमे जलाले-क मा लौ अ़लिम्तोहू ल-सअल्तो-क बेही अन तोसल्ले-य अ़ला मोह़म्मदिन *सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम* ***व अह्लेबैतेही व अन तअ्ज़-न ले-फ़-रजे मन बे फ़रजेही फ़-रजो औलियाए-क व अस्फ़ियाए-क मिन ख़ल्क़े-क व बेही तोबीदुज़्ज़ालेमी-न व तोह्लेकोहुम अ़ज्जिल ज़ाले-क या रब्बल आ-लमी-न.***

"ऐ ख़ुदा मैं उन तमाम चीज़ों के ह़क़ से जो मैंने तेरी बारगाह में अ़र्ज़ किया, दरख़ास्त करता हूँ और उनसे जिसके सिलसिले में तेरी अ़ज़मत और बुज़ुर्गी से मैंने सवाल नहीं किया है, उन तमाम के ह़क़ का वास्ता देकर तुझसे सवाल करता हूँ कि मोह़म्मद और आले मोह़म्मद पर दुरूद भेज और ज़हूर की इजाज़त दे जिसके ज़हूर से तेरे मख़्सूस बन्दें

और तेरी मख़्लूक़ की गशाइश है और उसके वसीले से सितमकारों को नाबूद और हलाक कर। ऐ सारी दुनिया के पालने वाले उसके ज़हूर में तअ्जील फ़रमा।"

रावी कहता है जब हज़रत ने सर सज्दे से उठाया मैंने अ़र्ज़ किया: मेरी जान आप पर फ़ेदा हो मैंने सुना कि आपने इस तरह दुआ फ़रमाई:

مَنْ بِفَرَجِهِ فَرَجُ أَصْفِيَاءِ اللّٰهِ وَ أَوْلِيَائِهِ

बे-फ़-रजे मन बे-फ़-रजेही फ़-रजो अस्फ़ियाइल्लाहे व औलियाएही.

"क्या आप वोह नहीं हैं"

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

لَا ذَاكَ قَائِمُ آلِ مُحَمَّدٍ

ला ज़ा-क क़ाएमो आले मोहम्मदिन.

"नहीं वोह क़ाएमे आले मोहम्मद हैं।"

फिर इमाम अ़लैहिस्सलाम ने इस तरह ताकीद फ़रमाई:

تَوَقَّعْ أَمْرَ صَاحِبِكَ لَيْلَكَ وَ نَهَارَكَ فَإِنَّ اللّٰهَ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ لَا يَشْغَلُهُ شَأْنٌ عَنْ شَأْنٍ ذٰلِكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

तवक़्क़अ़ अम्-र साहेबे-क लै-ल-क व नहा-र-क फ़इन्नला-ह कुल्ल यौमिन फ़ी शानिन ला यश्ग़ोलोहू शानुन अ़न शानिन. ज़ालेकल्लाहो रब्बुल अ़ा-लमी-न.

"शब-ओ-रोज़ अपने मौला के ज़हूर की उम्मीद में चश्म बराह रहो इसलिए कि अल्लाह तआ़ला के लिए हर रोज़

एक शान है उसको कोई काम दूसरे काम से बाज़ नहीं रख सकता। येह दुनिया का पालने वाला अल्लाह तआ़ला है।"

(बेहारुल अनवार, जि. ९५, स. १५८-१५९)

आख़िरी जुम्ला इस बात का इशारा है कि इमाम ज़माना अ़लैहिस्सलाम का ज़हूर उन उमूर में से है जिस में बदा का इम्कान हैं। इस मअ़्ना में की हर लह्ज़ा मुम्किन है कि अल्लाह तआ़ला इस सिलसिले में हुक्म करे जबकि पहले मुक़द्दर न था। इस बेना पर ज़हूर के तअ़्जील की दुआ़ ह़ज़रत के ज़हूर में मुअस्सर है।

ह़दीस में जो नुक्ता क़ाबिले तवज्जोह है वोह येह एबारत है जिसके बारे में रावी ने सवाल किया है वोह जुम्ला हमें सिखाता है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर की तअ़्जील के लिए दुआ़ ह़क़ीक़त में अल्लाह के मुन्तख़ब बन्दों के लिए आसानियाँ है। अशरफ़े मख़्लूक़ात पैग़म्बर से लेकर तमाम औसि़याए पैग़म्बर तक और तमाम फ़रिश्तों के लिए जो ह़ज़रत के ज़हूर का इन्तेज़ार कर रहे हैं। दुआ़ए अहद में ख़ुदा से इस तरह़ तलब करते हैं:-

اللَّهُمَّ وَسُرَّ نَبِيَّكَ مُحَمَّداً ص بِرُؤْيَتِهِ وَمَنْ تَبِعَهُ عَلَى دَعْوَتِهِ

अल्लाहुम्-म व सुर्-र नबीये-क मोह़म्मदिन *सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम* ***बेरुअ्यतेही व मन तबेअ़हू अ़ला दअ़्वतेही.***

"ऐ अल्लाह अपने पैग़म्बर मोह़म्मद और उन के तमाम मानने वालों को इमाम के दीदार से ख़ुश कर दे।"

(बेहारुल अनवार, जि. ९९, स. ११२)

पस हमको तअ़्जीले ज़हूरे इमाम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ में अपनी राह़त का ख़याल नहीं रखना चाहिए ताकि ख़ुद अपने लिए दुआ़ करें बल्कि इमाम

अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का क़स्द करना ज़रूरी है यक़ीनन ह़ज़रत के ज़हूर से तमाम मोअ्मेनीन को राह़त मिलेगी। लेकिन दुआ़ करने वाले के लिए सबसे अहम फ़ाएदा येह है कि अगर येह दुआ़ इमाम अ़लैहिस्सलाम की इमामत को मानते हुए करता है तो ग़ैबत के ज़माने में उसका दीन तबाही से मह़फ़ूज़ रहेगा। इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम अह़मद इब्ने इसह़ाक़ से फ़रमाते हैं कि:

يَا أَحْمَدَ بْنَ إِسْحَاقَ مَثَلُهُ فِي هَذِهِ الْأُمَّةِ مَثَلُ الْخَضِرِ ع وَ مَثَلُهُ مَثَلُ ذِي الْقَرْنَيْنِ وَ اللَّهِ لَيَغِيبَنَّ غَيْبَةً لَا يَنْجُو فِيهَا مِنَ الْهَلَكَةِ إِلَّا مَنْ ثَبَّتَهُ اللَّهُ عَزَّ وَ جَلَّ عَلَى الْقَوْلِ بِإِمَامَتِهِ وَ وَفَّقَهُ فِيهَا لِلدُّعَاءِ بِتَعْجِيلِ فَرَجِهِ

या अह़मदब्न इस्ह़ाक़ म-सलोहू फ़ी ह़ाज़ेहिल उम्मते म-सलुलखिज़्रे अ़लैहिस्सलाम व म-सलोहू म-सलो ज़िल्क़र्नैने वल्लाहे ल-यग़ीबन्न ग़ै-बतन ला यन्जू फ़ीहा मिनल ह़-लकते इल्ला मन सब्ब-तहुल्लाहो अ़ज़्ज़ व जल्ल अ़लल क़ौले बेइमा-मतेही व वफ़्फ़क़हू फ़ीहा लिद्दुआए बेतअ्जीले फ़-रजेही.

“ऐ अह़मद इब्ने इस्ह़ाक़, उनकी मिसाल इस उम्मत में ख़िज़्र और ज़ुलक़रनैन की है। ख़ुदा की क़सम इमाम की ऐसी ग़ैबत होगी जिसमें किसी का (दीन) मह़फ़ूज़ नहीं रहेगा मगर उस शख़्स का जिसको अल्लाह उनकी इमामत के अ़क़ीदे पर बाक़ी रखे। और ज़मानए ग़ैबत में उसे ज़हूर के तअ्जील की दुआ़ करने की तौफ़ीक़ एनायत फ़रमाए।”

दूसरे दिन जब अह़मद इब्ने इस्ह़ाक़ दोबारा इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में आए और सवाल किया:

فَمَا السُّنَّةُ الْجَارِيَةُ فِيهِ مِنَ الْخَضِرِ وَ ذِي الْقَرْنَيْنِ

फ़मस्सुन्नतुल जारे-यतो फ़ीहे मिनल ख़िज़्रे व ज़िल्क़र्नैने?

"कौन सी सुन्नत ख़िज़्र-ओ-ज़ुलक़रनैन की ह़ज़रत में पाई जाती है?"

इमाम अ़लैहिस्सलाम जवाब देते हैं:

طُولُ الْغَيْبَةِ يَا أَحْمَدُ

तूलुल ग़ैबते या अह़्मदो.

"ऐ अह़मद ज़मानए ग़ैबत का तूलानी होना।"

इसके बअ़्द अह़मद इब्ने इस्ह़ाक़ सवाल करते हैं:

يَا ابْنَ رَسُولِ اللَّهِ وَ إِنَّ غَيْبَتَهُ لَتَطُولُ

यब्न रसूलिल्लाहे व इन्-न ग़ै-बतोहू लततूलो.

"ऐ फ़र्ज़न्दे रसूले ख़ुदा क्या उनकी ग़ैबत तूलानी होगी।"

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया:

إِي وَ رَبِّي حَتَّى يَرْجِعَ عَنْ هَذَا الْأَمْرِ أَكْثَرُ الْقَائِلِينَ بِهِ وَ لَا يَبْقَى إِلَّا مَنْ أَخَذَ اللَّهُ عَزَّ وَ جَلَّ عَهْدَهُ لِوَلَايَتِنَا وَ كَتَبَ فِي قَلْبِهِ الْإِيمَانَ وَ أَيَّدَهُ بِرُوحٍ مِنْهُ

ई व रब्बी ह़त्ता यर्जे-अ अ़न ह़ाज़ल अम्रे अक्सरुल क़ाएली-न बेही व ला यब्क़ा इल्ला मन अ-ख़ज़ल्लाहो

अ़ज़्ज़ व जल्ल अ़ह्दहू लेवेला-यतेना व क-त-ब फ़ी क़ल्बेहिल ईमा-न व अय्य-दहो बेरूहिन मिन्हो.

"हाँ ख़ुदा की क़सम (उनकी ग़ैबत तूलानी होगी) यहाँ तक कि अक्सर वोह लोग जो उनकी इमामत और वेलायत को जानते हैं अपने अ़क़ीदे से पलट जाएंगे। कोई बाक़ी नहीं बचेगा मगर वोह शख़्स जिस से अल्लाह ने हमारी वेलायत का अ़ह्द लिया है और उसके दिल में ईमान को मोह्कम किया हो और उसकी ह्रेमायत अपनी मदद से की हो।"

(कमालुद्दीन, बाब ३८, ह्र. १)

मुलाह्रेज़ा कर रहे हैं कि येह ह्रदीस ज़हूर की दुआ की अहम्मीयत को इतना ज़्यादा बताती है कि इसको इमामत के अ़क़ीदे के पह्लू में जो ईमान की बुनियाद और महवर है, क़रार दिया है। और उन दोनों को ग़ैबत के ज़माने में इन्सान के दीन की ह्रेफ़ाज़त का ज़ामिन क़रार दिया गया है।

दूसरा नुक्ता येह है कि दोनों रुक्न, इमामत का अ़क़ीदा और ज़हूरे फ़रज की दुआ, को तौफ़ीक़े एलाही बताया गया है। इससे पता चलता है कि अगर अल्लाह ज़मानए ग़ैबत में किसी को बेदीनी से बचाना चाहता है तो उसे इमामे अस्र अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर को जल्दी होने के लिए दुआ करने की तौफ़ीक़ अ़ता करता है और जिनके शामिले ह्राल येह लुत्फ़-ओ-एनायते परवरदिगार नहीं होती वोह सेराते मुस्तक़ीम से भटक जाते हैं, गुमराह हो जाते हैं। पस ज़रूरी है कि अल्लाह से ह्रेदायत और तौफ़ीक़ को तलब करें और अपने आप पर एअ़्तेमाद न करें। क्योंकि अगर अल्लाह किसी इन्सान को उसके ह्राल पर छोड़ दे तो नजात का तन्हा रास्ता यअ़्नी इमामत और वेलायत भी उसके हाथ से निकल जाएगी जैसा

कि ह़दीस के आख़िर में इशारा हुआ कि अक्सर वोह लोग जो इमामत को मानते हैं वोह अपने अ़क़ीदे से पलट जाएंगे।

अ़क़ीदए इमामत से पलटना बहुत आसान है। यहाँ तक कि शायद ख़ुद इन्सान मुतवज्जेह न हो और येह इत्तेफ़ाक़ हो जाए। ज़रूरी नहीं है कि इन्सान सरीह़न अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की इमामत का इन्कार करे और उनको बुरा भला कहे। मुम्किन है कि इमामत और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के नाम की ह़ेफ़ाज़त करे लेकिन इमामत और वेलायत की अलग ग़लत तफ़सीर करे और उसी पर ईमान रखे। वोह तफ़सीर जो सरचश्मए वह़ी और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के कलाम से न ली गई हो। इस सूरत में वोह रूह़े इमामत और वेलायत का ह़क़ीक़त में मुन्किर होगा जबकि ख़ुद वोह मुतवज्जेह नहीं होगा। मेअ़्यारे इमामत अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम का नाम लेना नहीं है बल्कि ज़रूरी है कि मअ़्ना और मफ़हुम, किताब और सुन्नत के मुताबिक़ हो ताकि इन्सान को बेदीनी से मह़फ़ूज़ रखे। बहुत सी बेदीनी इमामत में ग़लत अ़क़ीदे की बेना पर होती है इसलिए मसअला बहुत नाज़ुक है और बहुत ज़्यादा एह़्तेयात की ज़रूरत है.....

मअ़्रेफ़त की पहली शर्त पर ताकीद, यअ़्नी उसकी सेह़त पर, इसी ग़ैर मह़सूस ख़तरे को रोकने के लिए थी। इन्सान को हमेशा अपने अ़क़ीदे की तस्ह़ीह़ किताब और सुन्नत से करना चाहिए और अपने मआ़रिफ़ को सिवाए ह़दीसे मन्क़ूल से न ले। मुम्किन है एक ग़लत बात या एक ग़लत अ़क़ीदा इन्सान के ज़ेह्न को इतना आलूदा कर दे कि क़ुरआन और ह़दीस को भी न चाहते हुए अपनी ग़लत फ़िक्र के ज़ेरे असर क़रार दे और उसी के मुताबिक़ क़ुरआन की तफ़सीर करे और नतीजे में चाहे जितना ह़दीस से अपनी बात को साबित करे लेकिन अपने अ़क़ीदे की रूह़ और ह़क़ीक़त को अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से नहीं लिया है। बल्कि अस़्ल अ़क़ीदे को किसी और जगह से लिया है और उसे रंग दे दिया है। येह वोह सह़ीह़

मअ्रेफ़त नहीं है जो होना चाहिए। मुम्किन है इमामत से पलटने की एक क़िस्म यही हो।

किसी भी सूरत में मसअला येह है कि अल्लाह इन्सान को उसके ह़ाल पर न छोड़े और इन्सान को भी चाहिए कि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के दरवाज़े के अ़लावा किसी और दरवाज़े पर न जाए और न एअ्तेमाद करे ताकि अ़क़ीदए इमामत और वेलायत पर साबित क़दम रह सके और तअ्जीले ज़हूर की दुआ को उसके साथ ज़मीमा करें ताकि ज़मानए ग़ैबत में हलाकत से मह़फ़ूज़ रह सके। दुआए तअजीले फ़रज के मसअले को अहम्मीयत देना चाहिए और इमाम अ़लैहिस्सलाम की ताक़ीद के मुताबिक़ इस सिलसिले में ख़ास एह्तेमाम करना चाहिए।

أَكْثِرُوا الدُّعَاءَ بِتَعْجِيلِ الْفَرَجِ فَإِنَّ ذَلِكَ فَرَجُكُمْ

अक्सेरुद्दुआ-अ बेतअ्जीलिल फ़-रजे फ़इन्-न ज़ाले-क फ़-रजोकुम.

"तअ्जीले ज़हूर के लिए बहुत ज़्यादा दुआ करो इसलिए कि यही तुम्हारे लिए भी ज़हूर है।"

(कमालुद्दीन, बाब ४५, ह़. ४)

ज़हूर की दुआ करने वाले को हर चीज़ से ज़्यादा आ़क़ेबत की नेकी और दीन की सलामती ह़ासिल होती है उस ज़माने में जब अक्सर लोग इमामत के अ़क़ीदे से पलट रहे होंगे। फिर मअ्नवी और माद्दी आसानियाँ ख़ुदावन्द मुतआ़ल ज़हूर की तअ्जील की दुआ करने वाले को उसी बरकत से देता है।

८. नुसरत

ख़ुदावन्द मुतआ़ल अपनी मदद करने वालों की मदद करता है

क़ुरआन करीम में हम पढ़ते हैं:

إِنْ تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ

इन तन्सुरुल्ला-ह यन्सुरकुम व युसब्बित अक़्दा-मकुम.

"अगर तुम ख़ुदा की मदद करो, वोह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दम रखेगा।"

(सूरए मोहम्मद (४७), आयत ७)

وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ

व-ल-यन्सुरन्नल्लाहो मँय्यन्सुरोहू.

"ख़ुदा यक़ीनन अपनी मदद करने वालों की मदद करता है।"

(सूरए ह़ज (२२), आयत ४०)

ख़ुदा कैसे मदद करता है? क्या हम ख़ुदा की मदद कर सकते हैं? कैसे? इस सवाल का जवाब येह ह़दीस है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा की रज़ा-ओ-ग़ज़ब, जंग-ओ-एताआ़त का मअ़्ना और ख़ुदा का अफ़सोस करना या ख़ुदा की बैअ़त और ऐसी ही चीज़ों की वज़ाह़त की है। उसका ख़ुलासा येह है कि जब उन सब की नीयत अल्लाह के मुन्तख़ब बन्दों और औलियाए एलाही की तरफ़ होती है तो ख़ुदा उनकी निस्बत अपनी तरफ़

कर देता है। अल्लाह की एताअ़त वलीये ख़ुदा की एताअ़त है। ख़ुदा की बैअ़त का मअ़्ना औलियाए ख़ुदा की बैअ़त है। ख़ुदा से जंग करने का मअ़्ना ख़ुदा के वली के साथ जंग है..... आ़म तौर से वोह सिफ़त जिसकी निस्बत ख़ुदा की तरफ़ नहीं दी जा सकती उन सबसे इसी मअ़्ना का एरादा किया गया है।

इस कुल्ली के देखते हुए हम कह सकते है कि अल्लाह की मदद करने का मअ़्ना औलियाए ख़ुदा की मदद करना है ह़कीक़त में जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की मदद करे उसके लिए हम कह सकते हैं कि उसने ख़ुदा की मदद की है बस अल्लाह की मदद का वअ़्दा उसके शामिले ह़ाल होगा। अह्ले मअ़्रेफ़त और अह्ले वेलायत की ज़िम्मेदारियों में से येह भी एक ज़िम्मेदारी है।

लेकिन इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में मदद पहुँचाना ज़मानए हुज़ूर की तरह़ नहीं है। इसी वजह से इन्तेज़ार की बह़्स में "इमाम अ़लैहिस्सलाम की नुसरत का क़स़्द" का ज़िक्र किया और ह़दीस के मुताबिक़ ज़िक्र किया कि ग़ैबत के ज़माने में इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद का पक्का एरादा अगर कोई हुज़ूर के ज़माने में रखता हो तो अल्लाह उसे उस काम का सवाब एनायत करेगा। नुसरत का एरादा और क़स़्द से ज़्यादा इन्तेज़ार करने वाले के लिए ज़रूरी है कि ग़ैबत के ज़माने में नुसरत के उ़न्वान से जो उसके एख़्तेयार में है, अन्जाम दे।

ज़मानए ग़ैबत में मदद का एक मिस़्दाक़ जिसका अन्जाम पाना मुम्किन है, ज़बान से मदद करना है। इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

فَقَد اَخبَرَنی جَدّی اَنَّ وَلَدِیَ الحُسَینَ یُقتَلُ بِطَفِّ کَربَلاءَ غَریباً وَحیداً عَطشاناً فَمَن نَصَرَهُ فَقَد نَصَرَنی وَ نَصَرَ وَلَدَهُ القائِمَ وَمَن نَصَرَنا بِلِسانِهِ، فَاِنَّهُ فی حِزبِنا یَومَ القِیامَةِ

फ़क़द अख़्ब-रनी जद्दी अन्-न व-लदेयल हुसै-न युक़्तलो बेतफ़्फ़े करबला-अ ग़रीबन वह़ीदन अ़-तशानन फ़मन न-स-रहू फ़क़द न-स-रनी व-न-स-र व-लदहुल्क़ाए-म व मन न-स-रना बेलेसानेहे, फ़इन्नहू फ़ी ह़िज़्बेना यौमल क़ेयामते.

"मेरे ज़द ने मुझे ख़बर दी है कि मेरा हुसैन करबला के मैदान में ग़रीब तन्हा और प्यासा शहीद किया जाएगा। पस जो उसकी मदद करे उसने मेरी और उसके फ़र्ज़न्द क़ाएम की मदद की है और जो अपनी ज़बान से हमारी मदद करे क़यामत में वोह हमारे गिरोह में होगा।"

(मिकयालुल मकारिम, जि. १, स. ५०७)

येह बातें इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने शबे आ़शूरा अपने अस्ह़ाब को बताईं और उसका मअ़्ना येह है कि जो शख़्स किसी भी वसीले से अपने इमाम और रहबर की मदद कर सकता है उसके लिए ज़रूरी है कि मदद करे। उन में से एक वसीला ज़बान है। ऐसा शख़्स क़यामत में शोहदा के बलन्द दर्जे में होगा। इमाम काज़िम अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

أَفْضَلَ الشُّهَدَاءِ دَرَجَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ نَصَرَ اللَّهَ وَ رَسُولَهُ بِظَهْرِ الْغَيْبِ وَرَدَّ عَنِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ

अफ़्जलश्शोहदाए द-र-जतन यौमल क़ेयामते मन न-स-रल्ला-ह व रसू-लहू बेज़हिरिल ग़ैबे व रद्द अ़निल्लाहे व रसूलेही.

"जो ख़ुदा और रसूल की ग़ैर मौजूदगी में उनकी मदद करे और उनका देफ़ाअ़् करें क़यामत में सबसे बलन्द शहीदों मे होगा।"

(बेहारुल अनवार, जि. २५, स. ३१३)

पस ख़ुदा, रसूल और इमाम की मदद करने की शर्त उनका हाज़िर होना नहीं है। इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैर मौजूदगी में इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद की जा सकती है। ग़ैबत के ज़माने में मुख़्तलिफ़ तरीक़े से मदद की जा सकता है। एक तरीक़ा ज़बान से मदद करना है। आ़म तौर से अपनी ज़बान से लोगों के दिलों को अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जेह करे और लोगों को उनकी याद में ढाल दे चाहे मरसिया पढ़ कर या शेअ़्र कह कर या फ़ज़ाएल बयान करके या उनके उ़लूम-ओ-मआ़रिफ़ को बयान करके जो अह्दीस के बयान करने से हासिल होगा। येह सब ज़बान से मदद करने का मिस़्दाक़ है जो ग़ैबत के ज़माने में भी मुम्किन है।

देअ़्बल ख़ुज़ाई अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के मद्दाह और मरसिए ख़ान थे। एक बार मोहर्रम के अय्याम में इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचे, इमाम अ़लैहिस्सलाम ने उनको देखा तो फ़रमाया:

مَرْحَباً بِكَ يَا دِعْبِلُ مَرْحَباً بِنَاصِرِنَا بِيَدِهِ وَلِسَانِهِ

मर्हबन बे-क या देअ़्बल! मर्हबन बेनासेरेना बे-यदेही व लेसानेहे.

"ख़ुशआमदीद ऐ देअ्बल, अपने हाथ और ज़बान से हमारी मदद करने वाले ख़ुशआमदीद।"

इसके बअ्द ह़ज़रत ने अपने पह्लू में जगह बनाई और उनको अपने पह्लू में बैठाया। फिर इमाम अ़लैहिस्सलाम ने उनसे अपने ग़रीब जद इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मुसीबत में शेअ्र पढ़ने की दरख़ास्त की और उनसे फ़रमाया:

يَا دِعْبِلُ ارْثِ الْحُسَيْنَ فَأَنْتَ نَاصِرُنَا وَمَادِحُنَا مَا دُمْتَ حَيّاً فَلَا تُقَصِّرْ عَنْ نَصْرِنَا مَا اسْتَطَعْتَ

या देअ्बल! इर्सिलहुसै-न अ़लैहिस्सला-म फ़अन्त नासेरोना व मादेहोना मा दुम्त ह़य्यन फ़ला तक़्सुर अ़न नस़्रेना मस्ततअ़्-त.

"ऐ देअ्बल हुसैन अ़लैहिस्सलाम के लिए मरसिया पढ़ो। तुम जब तक ज़िन्दा हो हमारी मदद और मद्ह़ करने वाले हो। हमारी मदद में किसी तरह़ की कोताही न करना।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ४५, स. २५७)

आठवें इमाम अ़लैहिस्सलाम की येह ताकीद ग़ैबत के ज़माने में हमसे भी तअ़ल्लुक़ रखती है जिस तरह़ से भी मुम्किन हो इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद करें। हर काम जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की तरवीज, इमाम अ़लैहिस्सलाम के नाम को सर बलन्द करने, उ़लूम-ओ-मअ़ारिफ़ को पहुँचाने के लिए हो इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद का एक मिस्दाक़ होगा। अल्लाह का वअ़्दा उन तमाम लोगों के शामिले ह़ाल होगा। अल्लाह का वअ़्दा उनकी मदद और उनको साबित क़दम रखना है और येह इमाम अ़लैहिस्सलाम के चाहने वालों के लिए ग़ैबत के ज़माने में एक ख़ुशख़बरी है

क्योंकि दूसरे ज़माने से ज़्यादा उनको बेदीनी और गुमराही का ख़तरा डरा रहा है। इस बेना पर जो अल्लाह की इस बड़ी नेअ़्मत में शामिल होना चाहता है और ख़ुद को अल्लाह की पनाह और ताईद से महफ़ूज़ रखना चाहता है उसके लिए ज़रूरी है कि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मदद में जो कर सकता है उसमें कोताही न करे ताकि ख़ुदा भी ज़मानए ग़ैबत के ख़तरात से उसे महफ़ूज़ रखे और ग़लतियों से बअ़्ज़ रहने में उसकी मदद करे।

लुत्फ़ और रहमते ख़ुदा का मज़हर इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का मुक़द्दस वजूद है। जो किसी भी तरह उनकी मदद करता है वोह हज़रत की एनायत और लुत्फ़ को अपनी तरफ़ कर लेता है और अपने आप को नूरे एलाही के चमकने का महल क़रार देता है। नुसरते इमाम अ़लैहिस्सलाम का एक मिस्दाक़ जो इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़ुशी का सबब है वोह इमाम के ज़हूर के लिए तअ़्ज़ील की दुआ है और इसको इमाम अ़लैहिस्सलाम दुआ करने वाले की तरफ़ से अपने लिए एहसान मानते हैं इसलिए इस दुआ को जवाब के बग़ैर नहीं छोड़ते। जो इमाम अ़लैहिस्सलाम के लिए दुआ करता है वोह इस काम से इमाम अ़लैहिस्सलाम की दुआए ख़ैर और इमाम अ़लैहिस्सलाम के एहसान को पा लेता है।

मुतवक्किल अ़ब्बासी के ज़माने में एक शीआ अब्दुर्रहमान नाम का इस्फ़हान में रहता था उससे पूछा क्यों कर हज़रत अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम की इमामत के मोअ़्तक़िद हुए? उसने जवाब दिया एक वाक़ेआ मेरे शीआ होने का सबब बना। मैं एक फ़कीर आदमी था जिसके पास ज़बान और जुरअत थी। एक साल अह्ले इस्फ़हान ने मुझे शहर से बाहर निकाल दिया और मैं दूसरों के साथ शिकायत करने के लिए मुतवक्किल के दरबार गया। जब हम उसके दरबार के क़रीब पहुँचे, मुतवक्किल की तरफ़ से अ़ली इब्ने मोहम्मद अल-रज़ा अ़लैहेमस्सलाम को हाज़िर करने का

हुक्म सादिर हुआ। मौजूदा लोगों में से एक से मैंने कहा: जिस मर्द को ह़ाज़िर करने को कहा गया है वोह कौन है? उसने जवाब दिया, वोह अ़लवीयों में एक हैं जिसकी इमामत के राफ़ज़ी मोअ़्तक़िद हैं। उसके बअ़्द उसने कहा कि मैं जानता हूँ मुतवक्किल उन्हें क़त्ल करने के लिए बुला रहा है। मैंने कहा मैं इस जगह से उस वक़्त तक न जाऊँगा जब तक येह देख न लूँ कि वोह कैसा शख़्स है। अ़ब्दुर्रहमान कहता है वोह घोड़े पर सवार आया जबकि दाहिने और बाएँ जानिब लोग सफ़ लगाए खड़े थे और उसको देख रहे थे। जैसे ही मैंने उसको देखा मेरे दिल में उसकी मोह़ब्बत आ गई। दिल में उसके लिए दुआ करना शुरुअ़् कर दिया कि: ऐ ख़ुदा मुतवक्किल के शर से इसे मह़फ़ूज़ रख। वोह लोगों के दरमियान आगे बढ़ रहे थे। अपने घोड़े की गर्दन के बाल को देख रहे थे दाहिने और बाएँ नहीं देखते थे। मैं अपने दिल में उनके ह़क़ में दुआ करने में मशग़ूल था जैसे ही वोह मेरे मुक़ाबिल पहुँचे मेरी तरफ़ रुख़ करके फ़रमाया:

اِسْتَجَابَ اللّٰهُ دُعَاءَكَ وَطَوَّلَ عُمْرَكَ وَ كَثَّرَ مَالَكَ وَوَلَدَكَ

इस्तजाबल्लाहो दोआ़अ-क व तव्व-ल उ़म्र-क व कस्स-र माल-क व व-ल-द-क.

"ख़ुदा ने तुम्हारी दुआ़ क़बूल कर ली और तुम्हारी उ़म्र को तूलानी करे, माल और औलाद में बरकत दे।"

(मदीनतुल मआ़जिज़, स. ४६५, ह़. २४७०/५०)

मैं उनकी हैबत से लरज़नें लगा और अपने हमराहों के दरमियान गिर पड़ा। उन लोगों ने पूछा क्या हुआ? मैंने कहा ख़ैर है और किसी से कुछ नहीं कहा। इस वाक़ेअ़् के बअ़्द इस्फ़हान पलट आया और अल्लाह ने उनकी दुआ़ओं की बरकत से दरआमद के रास्ते खोल दिए। आज मेरी दौलत दस लाख दिरहम है, उस दौलत के अ़लावा जो घर के बाहर है

और अल्लाह ने मुझे दस बेटे अ़ता किए जबकि मेरी उ़म्र के सत्तर और चन्द साल गुज़र गए है। मैं उस शख़्स की इमामत का मोअ़्तक़िद हूँ जो मेरे दिल की बातों को जानता था और अल्लाह ने मेरे ह़क़ में उसकी दुआ़ को मुस्तजाब किया।

(ख़राएज क़ुत़्बे रावन्दी, बाब ११, दर मोअ़्जिज़ाते इमाम ह़ादी अ़लैहिस्सलाम)

इमाम अ़लैहिस्सलाम के एह़सान का येह एक छोटा सा नमूना है उस शख़्स के ह़क़ में जिसने इमाम अ़लैहिस्सलाम के लिए दुआ़ की जब कि वोह शख़्स उस ह़ालत में इमाम अ़लैहिस्सलाम की इमामत को नहीं मानता था। अब अगर एक आदमी जो उनकी वेलायत और इमामत को मानता हो अपने ज़माने के इमाम अ़लैहिस्सलाम के ह़क़ में दुआ़ करे ख़ास कर वोह दुआ़ जो इमाम अ़लैहिस्सलाम को हर दूसरी चीज़ से ज़्यादा मसरूर करे 'यअ़्नी तअ़्जीले ज़हूर' क्या मुम्किन है येह एह़सान ह़ज़रत की निगाहों से छिपा रहे? या येह मुम्किन है ह़ज़रत देखते हो दुआ़ करने वाले की तरफ़ ए़नायत और तवज्जोह न करें? नहीं हरगिज़ नहीं। येह वअ़्दए एलाही है कि वोह अपनी मदद करने वाले की इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़रीए़ मदद करता है।

९. ह़ाज़िर होने का एह़सास

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम तमाम मोअ्मेनीन की तरफ़ तवज्जोह रखते हैं। शीआ अ़क़ाएद के मुताबिक़, ह़दीसी दलीलों को देखते हुए इमाम अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा की तमाम मख़्लूक के अअ्माल और अह़वाल चाहे ज़मीन की हों या आसमान की या दूसरे सिय्यारह की हो चाहे जहाँ हो सबसे वाक़िफ़ हैं। उनके दरमियान मोअ्मिन की तरफ़ ख़ास तवज्जोह होती है जिसकी मिसाल आने वाली ह़दीस में मुलाह़ेज़ा करेंगे। रमीला कहते हैं: अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में सख़्त बीमार पड़ गया यहाँ तक कि जुम्आ के दिन थोड़ी राह़त का एह़सास हुआ। अपने आप से कहा कि हर चीज़ से बेहतर यही है कि अपने ऊपर पानी डाल लो और अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम के पीछे जाकर नमाज़ पढ़ो। इसी काम को अन्जाम दिया और मस्जिद चला गया। जब ह़ज़रत मिम्बर पर गए मेरी ह़ालत फिर बिगड़ गई। जब अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम मस्जिद से पलटे और 'क़स्र' नाम की जगह में दाख़िल हुए मैं भी ह़ज़रत के साथ दाख़िल हो गया। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने मुझसे कहा: ऐ रमीला मैंने देखा तुम तड़प रहे थे। मैंने कहा: जी हाँ और अपनी बीमारी ह़ज़रत को बताई और नमाज़ में ह़ाज़िर होने के मक़सद को बताया। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

يَا رُمَيْلَةُ لَيْسَ مِنْ مُؤْمِنٍ يَمْرَضُ إِلَّا مَرِضْنَا بِمَرَضِهِ وَلَا يَحْزَنُ إِلَّا حَزِنَّا بِحُزْنِهِ وَلَا يَدْعُو إِلَّا أَمَّنَّا لِدُعَائِهِ وَلَا يَسْكُتُ إِلَّا دَعَوْنَا لَهُ

या रमीलतो, लैसा मिन मोअ्मेनिन यमरज़ो इल्ला मरिज़ना बे-म-रज़ेही वला यह्ज़नो इल्ला ह़ज़िन्ना बेहुज़्नेही वला यद्ऊ इल्ला अमन्ना लेदुआएही वला यस्कोतो इल्ला दआौना लहू.

"ऐ रमीला कोई मोअ्मिन बीमार नहीं होता मगर येह कि हम भी उसकी बीमारी की वजह से बीमार होते हैं। वोह ग़मगीन नहीं होता है मगर येह कि हम भी उसके ग़म में ग़मगीन होते हैं। कोई दुआ नहीं करता मगर येह कि हम उसकी दुआ पर आमीन कहते हैं। और वोह चुप नहीं होता है मगर येह कि हम उसके ह़क़ में दुआ करते हैं।"

रमीला कहते है मैंने कहा ऐ अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम मेरी जान आप पर फ़ेदा हो। उन सब का तअ़ल्लुक़ इससे है जो आप के साथ 'क़स्र' में है। जो लोग ज़मीन के अतराफ़ दूसरी जगह पर हैं उनका क्या? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

يَارُمَيْلَةُ لَيْسَ يَغِيبُ عَنَّا مُؤْمِنٌ فِي شَرْقِ الْأَرْضِ وَلَا فِي غَرْبِهَا

या रमीलतो, लैसा यग़ीबो अ़न्ना मोअ्मिनुन फ़ी शर्क़िल अ़र्ज़े वला ग़रबेहा.

"ऐ रमीला कोई मोअ्मिन मग़रिब और मशरिक़ में हम से छिपा नहीं है।"

(बसाएरुद्दरजात, बाब १६, ह़. १)

जब येह एनायत इमाम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ से मोअ्मिन के लिए पाई जाती है तो उससे बढ़कर क्या सआ़दत हो सकती है कि इन्सान हर चीज़ के बजाए इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर की तअ़्जील के लिए दुआ

करे। और अपनी ह़ाजतों को इमाम अ़लैहिस्सलाम के ऊपर छोड़ दे? इमाम अ़लैहिस्सलाम उससे ज़्यादा करीम हैं कि कोई इमाम अ़लैहिस्सलाम को याद करे और इमाम अ़लैहिस्सलाम उसे भूला दें। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुद अपनी तौक़ीअ़् में शेख़ मुफ़ीद अ़लैहिर्रह़्मा से फ़रमाया:

فَإِنَّا نُحِيطُ عِلْماً بِأَنْبَائِكُمْ وَلَا يَعْزُبُ عَنَّا شَيْءٌ مِنْ أَخْبَارِكُمْ...
إِنَّا غَيْرُ مُهْمِلِينَ لِمُرَاعَاتِكُمْ وَلَا نَاسِينَ لِذِكْرِكُمْ

फ़इन्ना नोह़ितो इ़ल्मन बे-अम्बाएकुम वला यअ़्ज़ोबो अ़न्ना शैउन मिन अख़्बारेकुम.....इन्ना ग़ैरो मोह़्मेली-न लेमुराआतेकुम वला नासी-न लेज़िक्रेकुम.

"तुम पर जो गुज़रती है हम जानते हैं। तुम्हारी ख़बर हमसे पोशीदा नहीं है.....हम तुम्हारी ह़ेफ़ाज़त में कोताही नहीं करते और तुम्हारी याद से ग़ाफ़िल नहीं हैं।"

(एह़्तेजाजे तबरसी, जि. २, स. ३२३)

इससे पता चलता है कि इमाम अ़लैहिस्सलाम परदए ग़ैबत में लोगों की नज़रों से दूर रह कर भी मग़रिब और मशरिक़ के बारे में आगाही रखते हैं और मोअ्मेनीन के बारे में ख़ास तवज्जोह रखते हैं। ह़क़ीक़त में इसका मअ़्ना येह है कि इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम जिस्म के लेह़ाज़ से लोगों की नज़रों से दूर हैं जब कि ह़क़ीक़त में तमाम लोगों के जिस्म-ओ-जान के लिए ह़ाज़िर हैं। इस तरह़ से कि कोई ज़ाहिर-ओ-बातिन इमाम अ़लैहिस्सलाम की तेज़ बीन निगाहों से पोशीदा नहीं है और कोई भी उनकी वेलायत और हुकूमत से बाहर नहीं है।

जो शख़्स रोज़े जुम्आ ह़ज़रत की ज़ेयारत में पढ़ता है:-

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَيْنَ اللَّهِ فِي خَلْقِهِ

अस्सलामो अ़लै-क या ऐनल्लाहे फ़ी ख़ल्क़ेही.

"मख़्लूक़ात के दरमियान चश्मे ख़ुदा पर सलाम।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. १०२, स. २१५)

वोह नहीं कह सकता है कि ह़ज़रत लोगों के ह़ालात से बेख़बर हैं और हर जगह ह़ाज़िर नहीं हैं।

ज़मानए ग़ैबत में इमाम अ़लैहिस्सलाम के हुज़ूर का एह़सास

इन्सान के लिए अहम येह है कि हर जगह अपनी जान-ओ-दिल में ह़ज़रत के ह़ाज़िर होने का एह़सास करे। इस सूरत में ग़ैबत उसके लिए इमाम अ़लैहिस्सलाम को देखने की तरह़ हो जाएगी और वोह अपने आप को इमाम अ़लैहिस्सलाम के हुज़ूर में होने का एह़सास करेगा। और तबई तौर पर बग़ैर किसी तकलीफ़ के इमाम अ़लैहिस्सलाम के वजूद के मुतअ़ल्लिक़ आदाब और एह़्तेराम बजा लाएगा। ज़मानए ग़ैबत में 'क़ूवते यक़ीन' तक पहुँचने का रास्ता उसके लिए इस तरह़ हमवार हो जाएगा। ऐसी ह़ालत का पैदा होना, "ग़ैबत के ज़माने में एह़सासे हुज़ूर" सिर्फ़ एक रास्ते से मुम्किन है जिसको ह़दीसों में बयान किया गया है। इमाम सज्जाद अ़लैहिस्सलाम अबू ख़ालिद काबुली से फ़रमाते हैं:

يَا أَبَا خَالِدٍ إِنَّ أَهْلَ زَمَانِ غَيْبَتِهِ الْقَائِلِينَ بِإِمَامَتِهِ وَ الْمُنْتَظِرِينَ لِظُهُورِهِ أَفْضَلُ مِنْ أَهْلِ كُلِّ زَمَانٍ لِأَنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَ تَعَالَى أَعْطَاهُمْ مِنَ الْعُقُولِ وَ الْأَفْهَامِ وَ الْمَعْرِفَةِ مَا صَارَتْ بِهِ الْغَيْبَةُ عِنْدَهُمْ بِمَنْزِلَةِ الْمُشَاهَدَةِ...

या अबा ख़ालेदिन, इन्ना अह्ल ज़माने ग़ैबतेहिल्क़ाएली-न बेइमामतेही वल मुन्तज़ेरी-न लेज़ुहूरेही अफ़्ज़लो मिन अह्ले कुल्ले ज़मानिन ले-अन्नल्ला-ह तबा-र-क व तआला अअ्ताहुम मिनल ऊक़ूले वल्अफ़हामे वल्मअ्रेफ़ते मा सारत बेहिलग़ैबतो इन्दहुम बेमन्ज़ेलतिलमोशा-ह-दते.....

"ऐ अबू ख़ालिद बेशक हज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम **की ग़ैबत के ज़माने में रहने वाले वोह लोग जो उनकी इमामत पर अक़ीदा रखते हैं और उनके ज़हूर के इन्तेज़ार में हैं वोह तमाम ज़माने के लोगों से बेहतर हैं। इसलिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें ऐसी अक़्ल और समझ अता की है जिससे ग़ैबत उनके नज़्दीक मुशाहेदा की तरह हो गई है.....**

(कमालुद्दीन, बाब ३१, ह. २)

हाँ इस हालत का हासिल होना दीन के तमाम अरकान के सिलसिले में गहरी और कामिल मअ्रेफ़त के ज़रीए ही मुम्किन है। हर मअ्रेफ़त की बुनियादे रीशा अल्लाह की मअ्रेफ़त है। इसलिए हर इन्सान के दिल में रच बस जाना चाहिए। अगर अल्लाह की मअ्रेफ़त इस तरह इन्सान के दिल में घर कर जाए जैसा कि रवायतों में बयान हुआ है तो येह अक़ीदा ख़ुद इन्सान की रफ़्तार-ओ-गुफ़्तार को ख़ुदा पसन्द बना देगा। इसी तरह पैग़म्बर और इमाम की मअ्रेफ़त है। इन तमाम का सहीह होना ज़रूरी है यअ्नी फ़िक्री मिलावट के बग़ैर अक़ीदा किताब और सुन्नत के मुताबिक़ हो। इन अक़ीदों के दरमियान इमाम अ़लैहिस्सलाम की मअ्रेफ़त ख़ास अहम्मीयत रखती है।

इस हालत को पैदा करने के लिए दूसरी अस्ल यही ज़िम्मेदारियाँ हैं जिन पर अमल करना ज़रूरी है। येह इमाम अ़लैहिस्सलाम की मअ्रेफ़त है जो

धीरे धीरे इमाम अ़लैहिस्सलाम और इन्सान के दरमियान यकसानियत पैदा कर देती है और यही इमामे ग़ाएब अ़लैहिस्सलाम के लिए एह्सासे हुज़ूर का एह्सास फ़राहम करेगी।

कभी अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम अपने शीओं को बात मह्सूस कराने के लिए बअ़्ज़ पर्दों को ह़क़ीक़त से उठाते थे ताकि वोह ह़क़ीक़त का मुलाह़ेज़ा कर सकें। अबू बसीर नक़्ल करते हैं कि इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम के साथ मस्जिद में दाख़िल हुए जबकि लोग आ जा रहे थे। ह़ज़रत ने मुझसे फ़रमाया कि लोगों से सवाल करो कि क्या वोह लोग मुझे देख रहे हैं। जो भी वहाँ से गुज़रता था मैं उससे पूछता था कि क्या तुमने अबू जअ़्फ़र को देखा? वोह कहता था नहीं जबकि इमाम अ़लैहिस्सलाम मेरे पह्लू में खड़े थे। यहाँ तक कि नाबीना अबू हारून वारिद हुए ह़ज़रत ने कहा इनसे पूछो मैंने कहा, क्या तुमने अबू ज़अ़्फ़र को देखा। उन्होंने जवाब दिया क्या येह नहीं है जो यहाँ खड़े हुए हैं मैंने कहा तुम्हें कैसे पता चला उन्होंने जवाब दिया कैसे न पहचानूँ जबकि वोह दरख़शिन्दा और ताबनाक नूर हैं।

इसके बअ़्द अबू बसीर कहते हैं कि मैंने सुना की इमाम अ़लैहिस्सलाम अफ़्रीक़ा के एक मर्द से कह रहे हैं राशिद का क्या ह़ाल है? उस मर्द ने जवाब दिया मैंने उसे ज़िन्दा और सह़ीह़ अ़क़ीदे की ह़ालत में छोड़ा था उसने आपको सलाम कहलवाया है। ह़ज़रत ने फ़रमाया उसका ख़ुदा उस पर रह़मत करे। उस मर्द ने कहा क्या वोह मर गया? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने कहा हाँ। उसने कहाँ कब? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने कहा दो दिन पहले तुम्हारे निकलने के बअ़्द। उसने कहा ख़ुदा की क़सम वोह बीमार न था और न ही ऐसे किसी क़िस्म की परेशानी थी जबकि आदमी किसी बीमारी या परेशानी के सबब मरता है। अबू बसीर कहते हैं मैंने पूछा वोह मर्द कौन था? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया वोह हमारे दोस्तदारों में से एक था जो हमारी वेलायत पर एअ़्तेक़ाद रखता था फिर फ़रमाया:

أَتَرَوْنَ أَنَّ لَيْسَ لَنَا مَعَكُمْ أَعْيُنٌ نَاظِرَةٌ وَأَسْمَاعٌ سَامِعَةٌ بِئْسَ مَا رَأَيْتُمْ وَ اللّٰهِ لَا يَخْفَى عَلَيْنَا شَيْءٌ مِنْ أَعْمَالِكُمْ فَاحْضُرُونَا جَمِيعاً وَ عَوِّدُوا أَنْفُسَكُمُ الْخَيْرَ وَ كُونُوا مِنْ أَهْلِهِ تُعْرَفُوا فَإِنِّي بِهَذَا آمُرُ وُلْدِي وَ شِيعَتِي

अ-तरौ-न अन लै-स लना म-अ़कुम अअ्योनुन नाज़े-रतुन औ अस्माउ़न सामेअ़तुन लबेअ्-स मा रऐतुम वल्लाहे मा यख़फ़ा अ़लैना शैउन मिन अअ़्मालेकुम फ़अह़्ज़ेरूना जमीअ़न व ऊ़व्वेदू अन्फ़ो-सकुमुल्ख़ै-र व कूनू मिन अह्लेही तोअ़्रफ़ू बेही फ़इन्नी बेह़ाज़ा आमोरो वुल्दी व शीअ़ती.

"अगर तुम येह समझते हो कि हम चश्मे बीना और तेज़ सुनने की सलाह़ियत तुम्हारी बनिस्बत नहीं रखते तो तुम ग़लत सोचते हो। ख़ुदा की क़सम तुम में से किसी के अअ़्माल हम से पोशीदा नहीं हैं पस तमाम लोग हमको ह़ाज़िर जानो। और ख़ुद को अच्छे काम की आ़दत डालो। अच्छे बनो ताकि अच्छाई से पहचाने जाओ क्योंकि मैं अपनी औलाद और अपने शीआ़ो को इस बात की सिफ़ारिश करता हूँ।"[१]

(बेह़ारुल अनवार, जि. ४६, स. २४४)

हाँ येह मुम्किन है कि नाबीना आदमी इमाम अ़लैहिस्सलाम के हुज़ूर का एह़सास करें जबकि आँख वाले लोग इमाम अ़लैहिस्सलाम के दीदार से

[१] ज़ाहिर है इस जुम्ले का मतलब येह है कि हर जगह हमें ह़ाज़िर जानो और अपने आप को हमारे हुज़ूर में रहने का एह़सास करो।

महरूम हों। इमाम अ़लैहिस्सलाम दरख़शिन्दा नूर है जिसको देखने के लिए ज़ाहिरी आँख की ज़रूरत नहीं है अगर देखने वाला दिल हो तो इमाम अ़लैहिस्सलाम को देखेगा और उनके हुज़ूर का एहसास करेगा। वोह चीज़ जो अहम है वोह येह है कि यक्सानीयत और दिली राबेता इमाम अ़लैहिस्सलाम के मुक़द्दस वजूद से हो। इसका तरीक़ा भी इमाम अ़लैहिस्सलाम ने बताया है। वोह येह है कि हमेशा अपने आप को अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के हुज़ूर में एहसास करो और अच्छे काम को बार बार दोहराओ ताकि आ़दत पड़ जाए। और इस तरह अच्छे काम करने वाले बन जाओ कि वही हमारी शेनाख़्त का ज़रीआ़ क़रार पाए।

१०. परहेज़गारी (वरअ़्)

मोअ्मेनीन का ज़मानए ग़ैबत में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की सुन्नतों की पाबन्दी करना

जो शख़्स अपने आप को इमाम हुज़ूर में देखता है अपनी मअ़्रेफ़त के मुताबिक़ कोशिश करता है कि जो चीज़ इमाम अ़लैहिस्सलाम की पसन्दीदा है उस पर साबित क़दम रहे और जो नापसन्द है उसे हाथ न लगाए। इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में अह्ले मअ़्रेफ़त की येह एक ख़ास पहचान है। अमीरुन मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

اللَّهُمَّ لَا بُدَّ لَكَ مِنْ حُجَجٍ فِي أَرْضِكَ حُجَّةٍ بَعْدَ حُجَّةٍ عَلَى خَلْقِكَ يَهْدُونَهُمْ إِلَى دِينِكَ وَ يُعَلِّمُونَهُمْ عِلْمَكَ لِكَيْلَا يَتَفَرَّقَ أَتْبَاعُ أَوْلِيَائِكَ ظَاهِرٍ غَيْرِ مُطَاعٍ أَوْ مُكْتَتِمٍ خَائِفٍ يُتَرَقَّبُ إِنْ غَابَ عَنِ النَّاسِ شَخْصُهُمْ فِي حَالِ هُدْنَتِهِمْ فِي دَوْلَةِ الْبَاطِلِ فَلَنْ يَغِيبَ عَنْهُمْ مَبْثُوثُ عِلْمِهِمْ وَ آدَابُهُمْ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ مُثْبَتَةٌ وَهُمْ بِهَا عَامِلُونَ

अल्लाहुम्-म ला बुद्द ल-क मिन हुज्जिन फ़ी अर्ज़े-क हुज्जतिन बअ़्द हुज्जतिन अ़ला ख़ल्क़े-क यह्दू-नहुम एला दीने-क व योअ़ल्लेमू-नहुम इल्म-क ले-कैला य-तफ़र्र-क़ अत्बाअ़ो औलियाए-क, ज़ाहेरुन ग़ैरो मोताइन, औ मुक्ततेमुन ख़ाएफ़ुन य-तरक़्क़बो, इन ग़ाब अ़निन्नासे शख़्सोहुम फ़ी ह़ाले हुद्-नतेहिम फ़ी दौ-लतिलबातिले,

फ़लन यग़ीबो अ़न्हुम मब्सूसुन इल्मोहिम व अ-दआबोहुम फ़ी क़ुलूबिलमोअ्मेनी-न मुस्बततुन व हुम बेहा आ़मेलू-न.

"ऐ अल्लाह तू रुए ज़मीन में अपनी हुज्जतें मख़्लूक़ात के दरमियान एक के बअ़्द एक क़रार देता है वोह लोगों को तेरे दीन की तरफ़ हेदायत करते हैं। तेरे उ़लूम को सिखाते हैं ताकि तेरे औलिया के मानने वाले परागन्दा न हों। तेरी कुछ हुज्जतें ज़ाहिर है लेकिन (लोग) उनकी एताअ़त नहीं करते। और बअ़्ज़ हुज्जतें पोशीदा हैं ख़ौफ़ की हालत में और इन्तेज़ार कर रही हैं। अगरचे आराम के ज़माने में हुकूमते बातिल के दौर में उनकी ज़ात लोगों से ग़ाएब है लेकिन उनके फैले हुए इल्म लोगों से पोशीदा नहीं है और उनकी सुन्नतें मोअ्मेनीन के दिल में जागुज़ीं हो गई हैं और वोह उन पर अ़मल पैरा हैं।"

(ग़ैबते नोअ्मानी, बाब ८, ह. २)

इस हदीस में दो मसअले की अहम्मीयत बहुत ज़्यादा बताई गई है एक उ़लूम और मआ़रिफ़े अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ रुजूअ् करना दूसरे तमाम मसाएल में उनकी सुन्नत और सीरत पर अ़मल करना। येह दो काम ग़ैबत के ज़माने में मुम्किन हैं अगर उनके हुज़ूर के ज़माने में आसान नहीं हैं। इस बेना पर आ़म तौर से इमाम अ़लैहिस्सलाम तक रसाई न होने की वजह से इन तरीक़ों को नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता है। अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की हदीसों की तरफ़ रुजूअ् करने की ज़रूरत जो उ़लूम और मआ़रिफ़ पर मुश्तमिल हैं, इससे पहले इसके बारे में बह्स कर चुके हैं। दूसरी ज़िम्मेदारी के बारे में यहाँ थोड़ी सी वज़ाहत करेंगे।

'अद आ-ब' जम्ए 'दअब' है और 'दअब' शान और आ़दत के मअ़्ना हैं आया है (क़ामूसे फ़ीरोज़ाबादी) और हमने इसका तर्जुमा सुन्नत किया है। और यहाँ पर आ़दत, सेफ़ात और वोह सुन्नत मुराद है जो अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम **की तरफ़ से हम तक पहुँची हैं जिनके ऊपर न येह कि हमको सिर्फ़ एअ़्तेक़ाद रखना चाहिए बल्कि उन पर अ़मल करना भी हमारे लिए ज़रूरी है। उन पर एअ़्तेक़ाद और दिल से क़बूल करना एक मरहला है लेकिन दूसरा मरहला उन पर अ़मल करना है येह मरहला भी पहले मरहले की तरह ज़रूरी और लाज़िम है इसी वजह से हमारी ह़दीसों में 'इज्तेहाद' और 'वरअ़्' की बहुत ज़्यादा ताक़ीद की गई है यहाँ तक कि उसे दीन का जुज़ शुमार किया गया है।**

पाँचवें इमाम बाक़ेरुल उ़लूम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में एक नाबीना शख़्स इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता है और कहता है: **"फ़र्ज़न्दे रसूल क्या आप हमारी मोह़ब्बत और वेलायत को अपने सिलसिले में जानते हैं?"** इमाम अ़लैहिस्सलाम ने कहा: **"हाँ"**। वोह कहता है: **"मुझे एक सवाल करना है इस बात को देखते हुए कि मैं नाबीना हूँ और कम रास्ता चलता हूँ और हमेशा आपकी ख़िदमत में नहीं पहुँच सकता हूँ मैं इसका जवाब आपसे चाहता हूँ (यअ़्नी ऐसा जवाब चाहता हूँ जिससे मेरी ज़िम्मेदारी मअ़्लूम हो जाए)।"** इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: **"अपनी ह़ाजत बयान करो।"** उसने कहा: **"वोह दीन जिसके ज़रीए़ आप और आपके अह्लेबैत** अ़लैहिमुस्सलाम **ख़ुदा की एबादत करते हैं मुझे बताएँ ताकि मैं भी ख़ुदा की बन्दगी उसी दीन के मुताबिक़ अन्जाम दूँ।"**

इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

إِنْ كُنْتَ أَقْصَرْتَ الْخُطْبَةَ فَقَدْ أَعْظَمْتَ الْمَسْأَلَةَ، وَ اللَّهِ لَأُعْطِيَنَّكَ دِينِي وَ دِينَ آبَائِيَ الَّذِي نَدِينُ اللَّهَ- عَزَّ وَ جَلَّ- بِهِ شَهَادَةَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَ أَنَّ مُحَمَّداً رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه و آله، وَ الْإِقْرَارَ بِمَا جَاءَ بِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ، وَ الْوَلَايَةَ لِوَلِيِّنَا، وَ الْبَرَاءَةَ مِنْ عَدُوِّنَا، وَ التَّسْلِيمَ لِأَمْرِنَا، وَ انْتِظَارَ قَائِمِنَا، وَ الِاجْتِهَادَ، وَ الْوَرَعَ

इन कुन्-त अक़्सर्तल ख़ुत्ब-त फ़क़द अअ़्ज़मतलमस्अ-ल-त, वल्लाहे ल-ओअ़्तेयन्न-क दीनी व दी-न अबाएयल्लज़ी नदीनुल्ला-ह अ़ज़्ज़ व जल्ल बेही: शहादतो अन ला एलाहा इल्लल्लाहो व अन्-न मोहम्मदन सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम रसूलुल्लाहे वल एक़रारो बेमा जाअ बेही मिन इन्दिल्लाहे वल वेलायतो ले-वलीयेना वल बराअतो मिन अ़दूवेना, वत्तस्लीमो लेअम्रेना वन्तेज़ारो क़ाएमेना वल इज्तेहादो वल व-रअ़ो.

“अगरचे बात तुमने मुख़्तसर की है लेकिन अ़ज़ीम सवाल किया है। ख़ुदा की क़सम अपने और अपने अज्दाद के दीन को जिससे ख़ुदा की एबादत करते हैं मैं तुम्हें बताऊँगा। ख़ुदा की वह्दानियत की गवाही और पैग़म्बरे इस्लाम की रेसालत और उन चीज़ों को क़बूल करना जो वोह ख़ुदा की तरफ़ से लाए हैं और हमारे दोस्तों के साथ दोस्ती और हमारे दुश्मनों से दुश्मनी। हमारे अम्र की बनिस्बत तस्लीम और हमारे क़ाएम का इन्तेज़ार करना।

कोशिश (वाजेबात की रेआयत और मोहर्रमात से परहेज़) करना और परहेज़गारी।"

(उसूले काफ़ी, किताबुल ईमान वल कुफ़्र, बाबो दआएमिल इस्लाम, ह. १०)

पैग़म्बर की लाई हुई चीज़ों को मानना और उनके सामने तस्लीम होना एक क़ल्बी अम्र है और हर चीज़ से ज़्यादा इमामत और वेलायते अइम्मा अलैहिमुस्सलाम के अक़ीदे को शामिल करता है। वाजेबात की आदाएगी और मोहर्रेमात से परहेज़ करने की कोशिश। परहेज़गारी का भी तअल्लुक़ दिल से है लेकिन इसके आसार और लवाज़िम भी अहम हैं। लफ़्ज़ें इज्तेहाद 'जहद' से लिया गया है जिसके मअ्ना तलाश और कोशिश के हैं और यहाँ पर ह़राम और ह़लाल की रेआयत करने के मअ्ना में इस्तेअ्माल हुआ है यअ्नी अह़कामे शरई में सहल अंगारी न करना है। अह़कामे शरई पर अमल करने में लापरवाही करना उ़बूदीयत और तस्लीम से मेल नहीं खाता। इस बेना पर मोअ्मिन जितना अह़कामे शरई पर अमल करने का पाबन्द होगा उतना ही ख़ुदा-ओ-रसूल और अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के सामने तस्लीम होने के मअ्ना को समझेगा और इसी एअ्तेबार से सबसे ज़्यादा दीनदार होगा और जितना लापरवाह होगा उतना ही तस्लीम से बेबह्रा होगा।

परहेज़गारी से आक़ेबत का बख़ैर होना

परहेज़गारी-ओ-पासदारी दीन की ह़ेफ़ाज़त के जज़्बे को कहा जाता है यअ्नी इन्सान के लिए दीन की ह़ेफ़ाज़त अहम्मीयत रखती हो। जब किसी के सिपुर्द कोई अहम चीज़ की जाती है और वोह ह़ेफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी को क़बूल करता है तो उस चीज़ की निस्बत उस शख़्स का क्या रवैया होगा? यक़ीनन उसे ऐसी जगह रखेगा जहाँ किसी क़िस्म के ज़रर का

एह्तेमाल न हो। लेकिन अगर ऐसी जगह हो जहाँ नुक़सान पहुँचने का एह्तेमाल है तो हरगिज़ ऐसी जगह पर नहीं रखेगा। अगर कोई अपने दीन के बारे में ऐसी ह़ालत रखता हो। जो सबसे गराँक़द्र और सबसे अहम है। तो वोह परहेज़गारों में से है।

इस बेना पर 'परहेज़गार' उस शख़्स को कहेंगे जो न सिर्फ़ ह़राम से बचता हो बल्कि मुश्तबहात से भी परहेज़ करता हो। इसलिए कि वोह फ़िक्रमन्द है कि अगर मुश्तबहात से परहेज़ न किया तो ह़राम में पड़ जाएगा। वोह चाहता है कि इस तरह़ ज़िन्दगी गुज़ारे की उसका दीन मह़फ़ूज़ रहे। ऐसा आदमी मशकूक जगहों से यक़ीनन एह्तेयात करता है बग़ैर सोचे समझे हाथ नहीं लगाता है। बिल्कुल उस शख़्स की तरह़ जो भयानक और हौलनाक दर्रे से गुज़रता है वोह जानता है कि अगर उसके किनारे से गुज़रेगा तो गिरने के ख़तरे से मह़फ़ूज़ नहीं है इसलिए एह्तेयात करता है और थोड़ा उसके किनारे से दूर हो जाता है ताकि इत्मीनान हो जाए कि एक छोटी सी ग़लती की बेना पर गहराई में गिर नहीं पड़ेगा।

इस लेह़ाज़ से परहेज़गारी तस्बीह़ के धागे की तरह़ है जो तमाम दानों को एक दूसरे के पह्लू में पिरोए रखती है और एबादाते तस्बीह़ के दानों के हुक्म में है। जब तक येह धागा मोह़कम और मज़बूत है उस वक़्त तक दाने भी एक दूसरे के पह्लू में मुनज़्ज़म हैं। अगर येह धागा टुट जाए दाने भी बिखर जाएँगे और तस्बीह़ बाक़ी न रहेगी। इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

الْوَرَعُ نِظَامُ الْعِبَادَةِ فَإِذَا انْقَطَعَ الْوَرَعُ ذَهَبَتِ الدِّيَانَةُ كَمَا أَنَّهُ إِذَا انْقَطَعَ السِّلْكُ اتَّبَعَهُ النِّظَامُ

अल-व-रअ़ो नेज़ामुल एबादते फ़-एज़न क़-तअ़ल-व-रअ़ो, ज़-ह-बतिद्देयानतो कमा अन्नहू एज़न-क़-तअ़स्सिलकुत्त-ब-अ़हुन्नेज़ामो.

"परहेज़गारी एबादत का कलपुर्ज़ा है और परहेज़गारी न हो तो दीनदारी भी जाती रहेगी। उस तरह से जैसे अगर कलपुर्ज़ा ख़राब हो जाए तो उससे मर्बूत जो चीज़ है वोह भी ख़राब हो जाएगी।"

(बेहारुल अनवार, जि. ६७, स. ३०८)

इस बेना पर वाजेबात की अ़दाएगी और मोहर्रेमात से इज्तेनाब के हतमी एरादे को इज्तेहाद कहा जाता है जो वरअ़् के साथ होना चाहिए ताकि इन्सान अपने दीन को महफ़ूज़ रखे। इसीलिए कहा गया है कि इज्तेहाद वरअ़् के बग़ैर फ़ाएदेमन्द नहीं है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

اعْلَمْ أَنَّهُ لَا يَنْفَعُ اجْتِهَادٌ لَا وَرَعَ فِيهِ

एअ़्लम अन्नहू ला यन्फ़उज्तेहादुन ला व-र-अ़ फ़ीहे.

"जान लो वोह इज्तेहाद जिसमें वरअ़् न हो वोह नतीजा ख़ेज़ और फ़ाएदेमन्द न होगा।"

(बेहारुल अनवार, जि. ६७, स. २९६)

सिर्फ़ इज्तेहाद से मन्ज़ूरे नज़र फ़ाएदा हासिल न होगा दीन की हेफ़ाज़त सिर्फ़ वरअ़् से मुम्किन है। एक आदमी इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से पूछता है:

مَا الَّذِي يُثْبِتُ الْإِيمَانَ فِي الْعَبْدِ

मा अल्लज़ी यूस्बेतुल्ईमा-न फ़ील्अब्दे?

क्या चीज़ बन्दे में ईमान को मोह़कम करती है?

ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

اَلَّذِی یُثْبِتُهُ فِیهِ الْوَرَعُ

अल्लज़ी यूस्बेतोहू फ़ीहिल-व-र-अ़ो.

"वोह चीज़ जो बन्दे में ईमान को मुस्तह़कम करती है, वरअ़् है।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ६७, स. ३०४)

इससे मअ़्लूम होता है परहेज़गारी इज्तेहाद से अलग है उसके बावजूद दोनों एक दूसरे के साथ है लेकिन परहेज़गारी इज्तेहाद से बलन्द है। इज्तेहाद का अअ़्ला मर्तबा गुनाहों से बचना है और वरअ़् का अअ़्ला मर्तबा शुब्हनाक चीज़ों से अपने आप को रोकना है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

أَوْرَعُ النَّاسِ مَنْ وَقَفَ عِنْدَ الشُّبْهَةِ .... أَشَدُّ النَّاسِ اجْتِهَاداً مَنْ تَرَكَ الذُّنُوبَ

औरउ़न्नासे मन व-क़-फ़ इन्दश्शुब्हते..... अशद्दुन्नासे इज्तेहादन मन त-र-कज़्ज़ुनू-ब.

"सबसे ज़्यादा परहेज़गार वोह शख़्स है जो शुब्हे के मवारिद में अपने आप को रोक ले..... सबसे ज़्यादा कोशिश करने वाला वोह शख़्स है जो गुनाहों को छोड़ दे।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ६७, स. ३०५)

परहेज़गारी की बह्स के आख़िर में आपको बता दें कि किताब के शुरूअ् में गुज़र गया दीन की अस्ल इमामत और वेलायते अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का अ़क़ीदा है उनके सामने तस्लीम होना, ईमान और इस्लाम की ह़क़ीक़त भी यही है। लेकिन जो चीज़ इस बुनियाद को तबाही से मह़फ़ूज़ रखती है वोह अह़कामे एलाही की रेआयत जिसके ज़रीए उस जज़्बे को बाक़ी रखा जा सकता है, उसकी ह़ेफ़ाज़त की जा सकती है। परहेज़गारी दीन की ह़ेफ़ाज़त में ठीक यही रोल रखती है। इसी वजह से अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम जो अपने आप को ख़ुदा की तरफ़ से लोगों की फ़रियाद सुनने वाला और नजात देने वाला जानते थे उन्होंने उन अल्फ़ाज़ के ज़रीए परहेज़गारी के सिलसिले में बहुत ज़्यादा ताक़ीद की है। वरअ् की रेआयत करके अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के चाहने वाले अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मदद करते हैं। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम अपने एक दोस्त से फ़रमाते हैं:

وَاللّٰهِ إِنَّكُمْ لَعَلَى دِينِ اللّٰهِ وَمَلَائِكَتِهِ فَأَعِينُونَا عَلَى ذٰلِكَ بِوَرَعٍ وَاجْتِهَادٍ

वल्लाहे इन्नकुम ल-अ़ला दीनिल्लाहे व मलाए-कतेही फ़अईनूना अ़ला ज़ाले-क बे-व-रइन वज्तेहादिन.

"ख़ुदा की क़सम तुम लोग दीने ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों के दीन पर हो। पस इस सिलसिले में तुम (अपनी दीनदारी) वरअ् और इज्तेहाद से हमारी मदद करो।"

(बेह़ारुल अनवार, जि. ६७, स. ३०६)

इमाम अ़लैहिस्सलाम की ताक़ीद येह है कि दीन की ह़ेफ़ाज़त से हमारी मदद करो। उसके बावजूद की ज़ाहिरन दीन की ह़ेफ़ाज़त का तअ़ल्लुक़ ख़ुद हम से है। चूँकि इमाम अ़लैहिस्सलाम अपने दोस्तों के आ़क़ेबत के बख़ैर होने को पसन्द करते हैं इसलिए वोह अपने आप को लोगों का सरपरस्त और

वली जानते हैं इसी वजह से वोह लोगों के दीन की हेफ़ाज़त से बेतअल्लुक़ नहीं रह सकते। हक़ीक़त में उनका लुत्फ़-ओ-करम अह्ले वेलायत की दस्तगीरी करना है ताकि गुमराहियों में डूब न जाएँ बल्कि अपने दीन की हेफ़ाज़त कर सकें। हमसे जो काम हो सकता है वोह येह कि वरअ् और इज्तेहाद के ज़रीए अपनी नजात के सिलसिले में मदद करें और गुनाहों के ज़रीए उनको अपनी नजात देने के सिलसिले में नाराज़ न करें।

इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

عَلَيْكُمْ بِالْوَرَعِ فَإِنَّهُ الدِّينُ الَّذِي نُلَازِمُهُ وَ نَدِينُ اللَّهَ بِهِ وَ نُرِيدُهُ مِمَّنْ يُوَالِينَا لَا تُتْعِبُونَا بِالشَّفَاعَةِ

"अलैकुम बिल-व-रए फ़इन्नहुद्दीनुल्लज़ी नोलाज़ेमोहू व नदीनुल्ला-ह बेही व नोरीदोहू मिम्मन योवालीना ला तुत्एबूना बिश्शफ़ाअते."

"तुम्हारे ऊपर वरअ् की रेआयत करना वाजिब है। बेशक वरअ् वोह दीन है जिसकी हम पाबन्दी करते हैं और इसी के ज़रीए ख़ुदा की एबादत करते हैं और अपने दोस्तों से भी इसी चीज़ की तवक़्क़ोअ् रखते हैं। हमको शफ़ाअत करने की बेना पर सख़्ती और ज़हमत में न डालो।"

(बेहारुल अनवार, जि. ६७, स. ३०६)

वोह चीज़ जो इन्सान को आख़िर में नजात देगी और उख़रवी सआदत का सबब होगी वोह शफ़ाअते अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम है जब अल्लाह के मुक़र्रब फ़रिश्ते और अम्बियाए मुर्सल और इम्तेहान शुदा मोअ्मिन को

उनकी शफ़ाअ़त की ज़रूरत है तो हम गुनाहगारों का हिसाब वाज़ेह है। हज़रत इमाम काज़िम अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

إِذَا كَانَتْ لَكَ حَاجَةٌ إِلَى اللهِ فَقُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَ عَلِيٍّ ... فَإِنَّهُ إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ لَمْ يَبْقَ مَلَكٌ مُقَرَّبٌ وَلَا نَبِيٌّ مُرْسَلٌ وَلَا مُؤْمِنٌ مُمْتَحَنٌ إِلَّا وَهُوَ يَحْتَاجُ إِلَيْهِمَا فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ.

एज़ा कानत ल-क हा-जतन एलल्लाहे फ़कुल: अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलो-क बेहक़्क़े मोहम्मदिन व अ़लीयिन..... फ़इन्नहू इज़ा का-न यौमुल क़ियामते लम यब्-क़ म-लकुन मुक़र्रबुन व ला नबीयुन मुर्सलुन व ला मोअ्मेनुन मुम्तहनुन इल्ला व हो-व यह्ताजो इलैहेमा फ़ी ज़ालेकल्यौमे.

"अगर अल्लाह से हाजत हो तो अल्लाह को मोहम्मद और अ़ली की क़सम दो कि..... क्योंकि जब क़यामत होगी उस वक़्त न कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता और न ही नबी मुर्सल और न ही इम्तेहान शुदा मोअ्मिन बाक़ी रहेगा मगर उसको उन दोनों की (शफ़ाअ़त की) ज़रूरत होगी।"

(बेहारुल अनवार, जि. ८, स. ५९)

यक़ीनन मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की ज़रूरत (अम्बिया और फ़रिश्तों के अ़लावा) अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से सिर्फ़ अ़ज़ाबे एलाही से नजात पाने के लिए नहीं है बल्कि पैग़म्बर और अ़ली अ़लैहिस्सलाम का उन लोगों की दस्तगीरी करना, उनके दरजात को बलन्द करने के लिए है और आ़म तौर से क़यामत के दिन पैग़म्बर की शफ़ाअ़त से कोई बेनियाज़ नहीं है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

مَا أَحَدٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ وَ الْآخِرِينَ إِلَّا وَ هُوَ يَحْتَاجُ إِلَى شَفَاعَةِ مُحَمَّدٍ ص يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

मा अ-हदुन मिनल अव्वली-न वल आख़ेरी-न इल्ला व हो-व यह्ताजो एला शफ़ाअते मोहम्मदिन *सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम* ***यौमल क़ियामते.***

"क़यामत के दिन अव्वल से लेकर आख़िर तक कोई नहीं है जिसको हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **की शफ़ाअ़त की ज़रूरत न हो।"**

(बेहारुल अनवार, जि. ८, स. ४२)

यक़ीनन अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की शफ़ाअ़त पैग़म्बर की शफ़ाअ़त से जुदा नहीं है जिसकी शफ़ाअ़त येह लोग करें गोया शफ़ाअ़त पैग़म्बर ने की है। जब हमारी आख़ेरत की कामियाबी और उख़रवी सआ़दत की सारी उम्मीदें अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की दस्तगीरी और शफ़ाअ़त पर है तो ऐसे काम न करें जिसके सबब येह लोग ख़ुद शफ़ाअ़त करने में तकल्लुफ़ महसूस करें। इसी मसअले की ख़ातिर हमें वरअ़् की ताक़ीद की गई है ताकि इसकी रेआ़यत से अपने पेशवाओं को रंज-ओ-ज़हमत में न डालें बल्कि उनकी शफ़ाअ़त के मुस्तहक़ क़रार पाएँ।

ज़मानए ग़ैबत में शीओं की ख़ास ज़िम्मेदारियों का ख़ुलासा

इस किताब के आख़िर में उन बहसों को सिलसिले वार हम ख़ुलासे के साथ ज़िक्र करेंगे ताकि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के चाहने वालों के लिए ग़ैबत में उनकी ज़िम्मेदारियों को एक बार और याद दिलाएँ और उन पर अ़मल करने की कोशिश करें.....

१. किताब-ओ-सुन्नत के मुताबिक़ सहीह़ अ़क़ीदा रखना।

२. अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से जो चीज़ें हमें मिली हैं उन पर कामेलन तस्लीम होना। (अह़ादीस)

३. अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से मोह़ब्बत

४. अह्ले ईमान से दोस्ती और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना।

५. अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के मुख़ालेफ़ीन से दुश्मनी।

६. यादे इमाम अ़लैहिस्सलाम में ज़िन्दगी गुज़ारना।

७. उ़लूमे अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम को सीखना और सिखाना।

८. इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का इन्तेज़ार।

९. इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के वक़्त को मोअ़य्यन किए बग़ैर ज़हूर को नज़्दीक समझना।

१०. ज़हूर के ज़माने में इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद का ह़त्मी एरादा होना।

११. मुख़्तलिफ़ मुनासेबतों पर इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम से बैअ़त की तज्दीद करना।

१२. इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर की तअ्जील के लिए दिल से दुआ़ करना।

१३. हर मुम्किन रास्ते से अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मदद करना।

१४. इमामे ग़ाएब अ़लैहिस्सलाम के मह़ज़र में ह़ाज़िर होने का एह़सास करना।

१५. दीन में तक़्वा और वरअ़् की ह़ेफ़ाज़त करना।

येह अहम सिफ़तें है जो अह्ले मअ़्रेफ़त और वेलायते अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम को ग़ैबत के ज़माने में रखना चाहिए ताकि अगर इस दुनिया

से चला गया तो उसकी मौत जाहिलीयत की मौत न हो और इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का न पाना उसके लिए नुक़सान देह न हो। इन ज़िम्मेदारियों की मज़ीद तफ़सील और ग़ैबत के ज़माने में दूसरी ज़िम्मेदारियों को किताब "मिकयालुल मकारिम फ़ी फ़वाएदिद दुआ़ए लिल क़ाएम" के आठवें बाब में देखा जा सकता है।

ख़ात्मे की दुआ़

इस किताबचे को दुआ़ के इस फ़िक़रे से ख़त्म करते हैं जिसे इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के पहले नाएब जनाब अबू अ़म्र उ़स्मान बिन सईद अ़म्रवी रह्मतुल्लाह अ़लैहे ने लिखा था और इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में पढ़ने का हुक्म दिया था। इस दुआ़ को सैयद इब्ने ताऊस ने जुम्आ़ के दिन के अ़अ्माल में उन दुआ़ओं के ज़िम्न में लिखा है जो नमाज़े अ़स्र के बअ़्द वारिद हुई है और उसका मज़्मून ग़ैबत के ज़माने में ज़हूर का इन्तेज़ार करने वालों की ज़िम्मेदारियों को किसी ह़द तक वाज़ेह़ कर देता है।

اللَّهُمَّ وَ لَا تَسْلُبْنَا الْيَقِينَ لِطُولِ الْأَمَدِ فِي غَيْبَتِهِ وَ انْقِطَاعِ خَبَرِهِ عَنَّا وَ لَا تُنْسِنَا ذِكْرَهُ وَ انْتِظَارَهُ وَ الْإِيمَانَ بِهِ وَ قُوَّةَ الْيَقِينِ فِي ظُهُورِهِ وَ الدُّعَاءَ لَهُ وَ الصَّلَاةَ عَلَيْهِ حَتَّى لَا يُقَنِّطَنَا طُولُ غَيْبَتِهِ مِنْ قِيَامِهِ وَ يَكُونَ يَقِينُنَا فِي ذَلِكَ كَيَقِينِنَا فِي قِيَامِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَ مَا جَاءَ بِهِ مِنْ وَحْيِكَ وَ تَنْزِيلِكَ وَ قَوِّ قُلُوبَنَا عَلَى الْإِيمَانِ بِهِ حَتَّى تَسْلُكَ بِنَا عَلَى يَدَيْهِ مِنْهَاجَ الْهُدَى وَ الْمَحَجَّةَ الْعُظْمَى وَ الطَّرِيقَةَ الْوُسْطَى وَ قَوِّنَا عَلَى

طَاعَتِهِ وَ ثَبِّتْنَا عَلَى مُتَابَعَتِهِ وَ اجْعَلْنَا فِي حِزْبِهِ وَ أَعْوَانِهِ وَ أَنْصَارِهِ وَ الرَّاضِينَ بِفِعْلِهِ وَلَا تَسْلُبْنَا ذَلِكَ فِي حَيَاتِنَا وَلَا عِنْدَ وَفَاتِنَا حَتَّى تَتَوَفَّانَا وَ نَحْنُ عَلَى ذَلِكَ لَا شَاكِّينَ وَلَا نَاكِثِينَ وَلَا مُرْتَابِينَ وَلَا مُكَذِّبِينَ

अल्लाहुम्-म वला तस्लुब्नल्यक़ी-न लेतूलिल अ-मदे फ़ी ग़ै-बतेही वन्क़ेताए ख़-बरेही अन्ना व ला तुन्सेना ज़िक्रहू वन्तेज़ा-रहू वल ईमा-न बेही व क़ूवतल यक़ीने फ़ी ज़ुहूरेही वद्दुआ-अ लहू वस्सला-त अलैहे ह़त्ता ला योक़न्ने-तना तूलो ग़ै-बतेही मिन क़ेयामेही व यकू-न यक़ीनोना फ़ी ज़ाले-क कैक़ीनेना फ़ी क़ेयामे रसूलिल्लाहे सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व मा जा-अ बेही मिन वह़्ये-क व तन्ज़ीले-क व क़व्वे क़ुलू- बना अलल ईमाने बेही ह़त्ता तस्लो-क बेना अला यदैहे मिन्हाजल होदा वल-मह़ज्जतल उ़ज़्मा वत्तरी-क़तल वुस्ता व क़व्वेना अला ताअतेही व सब्बितना अला मुता-ब-अतेही वज्अल्ना फ़ी ह़िज़्बेही व अअ्वानेही व अन्सारेही वर्राज़ी-न बेफ़ेअ्लेही व ला तस्लुब्ना ज़ाले-क फ़ी ह़यातेना व ला इन्-द वफ़ातेना ह़त्ता त-तवफ़्फ़ाना व नह़्नो अला ज़ाले-क ला शाक्की-न व ला नाकेसी-न वलअम्रो ताबी-न व ला मोकज़्ज़ेबी-न.

“ख़ुदाया ह़ज़रत की ग़ैबत तूलानी होने की बेना पर और हमें उनकी ख़बर न होने की बेना पर यक़ीन को हमसे छीन न लेना। उनकी याद, इन्तेज़ार और उन पर ईमान को, उनके ज़हूर के यक़ीन को, उनके ह़क़ में दुआ करने को

और उन पर दुरूद भेजने को (इन में से किसी चीज़ को) हमसे सल्ब न करना ताकि

उनकी ग़ैबत के तूलानी होने से हम उनके क़याम करने से मायूस न हों। और हमारा यक़ीन उनके क़याम करने पर इस तरह हो जैसे रसूलुल्लाह के क़यामे वह्य और कुरआन जो वोह लाए हैं उस पर है। हमारे दिलों को ह़ज़रत पर ईमान रखने के लिए क़वी कर दे ताकि उनके दस्ते पुर बरकत से शाहराहे हेदायत और रोशन रास्ते, सेराते मुस्तक़ीम पर बाक़ी रहें। हमें उनकी एताअ़त पर ताक़त दे और साबित क़दम रख। हमें उनके गरोह में उनके नासिरों और मददगारों में और उन लोगों में जो उनके काम से ख़ुश है, क़रार दे। इन ह़ालत को तमाम ज़िन्दगी और मरते वक़्त हमसें न छीन और हमें इस दुनिया से इस ह़ालत में न उठाना जिसमें शक करने वाले, अ़ह्द तोड़ने वाले, तरदीद करने वाले और झुठलाने वाले हों।

(जमालुल अस्बूअ़, स. ४७, ह़. ३१६, कमालुद्दीन, बाब ४५, ह़. ४३)

आमीन रब्बल आ़लमीन

अल्लाहुम्-म अइन्ना अ़ला तादियते हुक़ूक़ेही इलैहे वल इज्तेहादे फ़ी ता-अ़तेही वज्तेनाबे मअ़्सि-यतेही वम्नुन अ़लैना बे-रेज़ाहो व हब्लना रअ़्-फ-तहू व रह़्-म-तहू.